चैत्र - वैशाख - ज्येष्ठ - आषाढ़ - श्रावण - भाद्रपद - अश्विन - कार्तिक - मार्गशीर्ष - पौष - माघ - फाल्गुन

संग्रहणीय विशेषांक

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिलें संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

चैत्र-वैशाख, युगाब्द 5127, मार्च-अप्रैल 2025

हिमाचल की संघ यात्रा

#RSS100

वचनामृतम्

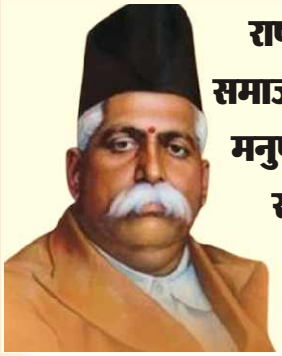

राष्ट्र के उत्थान के लिए संगठित समाज आवश्यक है। संघ का कार्य मनुष्य निर्माण करना है, और वही राष्ट्र निर्माण का कार्य करेगा।

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार (संस्थापक, 1925-1940)

हमारा कार्य राजनीतिक नहीं, बल्कि राष्ट्र को जागरूक करना है। इसके लिए समर्पित सेवा भाव से कार्यों को पूर्ण करना जरूरी है।

राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) (1994-2000)

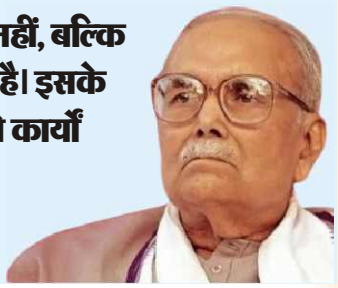

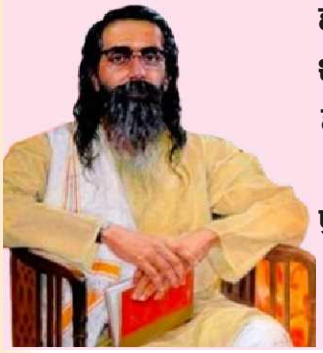

हमारा राष्ट्र हिंदू राष्ट्र है और इसे शक्तिशाली एवं संगठित बनाना हमारा कर्तव्य है। हिंदू समाज में समरसता और आत्मगौरव को प्रमुखता से लिया जाना चाहिए।

माधव सदाशिव गोलवलकर (गुरुजी) (1940-1973)

स्वदेशी और आत्मनिर्भरता के बिना राष्ट्र की उन्नति संभव नहीं। इस दृष्टि से भारतीय संस्कृति की रक्षा और स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देना आवश्यक है।

कुप.सी. सुदर्शन (2000-2009)

जातिगत भेदभाव को समाप्त करके सामाजिक समरसता को महत्व दिया जाना भारतीय राष्ट्रवाद के लिए आवश्यक है। यदि समाज के एक वर्ग को नीचे रखा गया तो संपूर्ण हिंदू समाज नीचे जाएगा।

बाला साहेब देवरस (1973-1994)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मूल उद्देश्य भारत को एक संगठित, सशक्त, और सांस्कृतिक रूप से जागरूक राष्ट्र बनाना है। संघ का मानना है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति में राष्ट्रभक्ति, अनुशासन, और सेवा की भावना होनी चाहिए, जिससे एक मजबूत और एकजुट राष्ट्र का निर्माण हो।

हो. वै. शेषाद्री जी पूर्व सरकार्यवाह

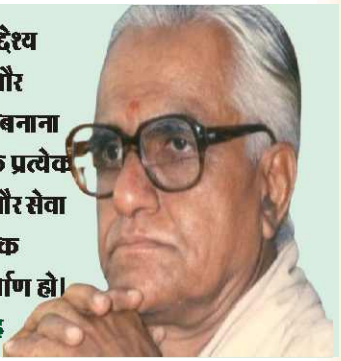

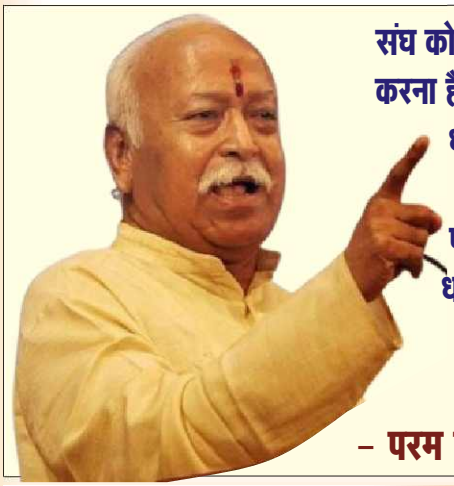

संघ कोई ऐसी संस्था नहीं है, जिसे कुछ प्राप्त करना है। संघ का कार्य संपूर्ण समाज को संगठित करना है। विरोधी स्वरों की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए उन्हें भी भारतीय संस्कृति की चिंतन धारा में आत्मसात् करके समष्टि के आधार पर व्यापक राष्ट्र हित में संगठित एवं समाहित करना है। सर्वसमाज को एकीकृत करके ओजस्वी एवं यशस्वी भारत का निर्माण करना परम आवश्यक है। इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि विश्व का कोई भी देश वैचारिक धरातल पर जब भी लड़खड़ाता है तो वह सत्य की खोज में जटिल समस्याओं के समाधान तथा भारतीय चिंतनधारा के रसास्वादन के लिए भारत की पवित्र धरा पर अवश्य पहुंचता है ताकि उसे सद्भावनापूर्ण वैश्विक कल्याण का मार्ग प्राप्त हो सके।

– परम पूजनीय सरसंघचालक मोहन भागवत (2009–वर्तमान)

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

मातृवन्दना
संग्रहणीय विशेषांक

वर्ष: 33 अंक : 03-04 हिन्दी मासिक, शिमला (हिमाचल प्रदेश), चैत्र-वैशाख, कलियुगाब्द 5127, मार्च-अप्रैल 2025

परामर्श
डॉ. किस्मत कुमार
श्री चन्द्र प्रकाश
श्री प्रताप समयाल
श्री मोतीलाल

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा
98050 36545

सह सम्पादक
डॉ. कर्म सिंह

सम्पादक मण्डल
डॉ. उमेश मौदगिल, डॉ. जय कर्ण,
डॉ. सपना चंदेल, हितेन्द्र शर्मा

आवरण व अक्षर संयोजन
राजेश शर्मा

वितरण प्रमुख
नरेन्द्र कुमार

प्रकाशक / मुद्रक
कमल सिंह सेन

कार्यालय
मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र. 171 004
दूरभाष : 0177 - 2836990
व्हाट्स ऐप : 76500 00990
ई-मेल : matrivandanashimla@gmail.com

मासिक शुल्क	₹25
वार्षिक शुल्क	₹150
आजीवन शुल्क	₹1500

वैधानिक सूचना :
पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

संग्रहणीय विशेषांक में...

संपादकीय - राष्ट्र धर्म के प्रति प्रतिबद्ध संघ.... 4
हिमाचल में संघ कार्य की यात्रा 7
व्यक्ति, राष्ट्र निर्माण एवं विश्व कल्याण 10
हिमाचल में संघ की भूमिका 12
विश्व हिन्दू परिषद्-सामाजिक जागरण यात्रा 13
अ.भा.वि.प. - हिमाचल में संघर्ष, सेवा... 17
भारतीय मजदूर संघ हिमाचल की संघर्ष गाथा 22
विद्या के प्रसार हेतु प्रतिबद्ध विद्या भारती 26
राष्ट्र सेविका समिति - मातृशक्ति की बुद्धि... 31
भारतीय किसान संघ की स्थापना, संघर्ष... 34
'मैं,तू - एक रक्त' हिमगिरि कल्याण आश्रम 38
भारत विकास परिषद् हिमाचल प्रदेश 39
सेवा भारती - सेवा परमो धर्म: 40
संस्कृत भारती - संस्कृत भाषा से समाज... 43
आरोग्य भारती - स्वास्थ्य जागरूकता एवं सेवा... 45
हिमाचल स्वदेशी जागरण मंच - दिल से देशी 46
योग भारती हिमाचल - योग साधना की यात्रा 49
सहकार भारती की स्वर्णिम यात्रा 51
पंच परिवर्तन 53

अमृत वचन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मूल उद्देश्य
भारत को एक संगठित, सशक्त, सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से जागरूक राष्ट्र बनाना है।
- हो. वे. शेषाद्री जी पूर्व सरकार्यवाह

संपादकीय

राष्ट्र धर्म के प्रति प्रतिबद्ध संघ एवं संघमय देवभूमि

डॉ. दयानंद शर्मा
सम्पादक, मातृवन्दना

इतिहास हमारा सबसे बड़ा गुरु है। उसकी कक्षा में बैठ कर यदि हम दत्तचित्त होकर पठन, मनन एवं आकलन करें तो सही सबक सीखा जा सकता है, जिस पर चल कर हम नव-मार्ग का अन्वेषण कर सकते हैं, राष्ट्रहित की सोच रखते हुए आगे बढ़ सकते हैं तथा विगत त्रुटियों का निराकरण भी कर सकते हैं। कुछ ऐसा ही मनन एवं विश्लेषण सम्भवत: संघ के संस्थापक पूजनीय डॉ. हेडगेवार जी द्वारा किया गया होगा। इतिहास की पृष्ठभूमि में वे सारी तस्वीरें उनके सामने थीं जब भारत विश्व गुरु कहलाता था। पूर्णतया हिन्दू राष्ट्र और उसका स्वर्णिम युग विश्व को चमत्कृत कर रहा था। विश्व के कई देश भारत की आध्यात्मिक एवं भौतिक समृद्धि को देख-सुन कर इसकी ओर खींचे चले आ रहे थे। भारत की राजसत्ताएँ एक-दूसरे से आगे बढने की होड़ में लगी हुई थी और यही होड़ परस्पर शत्रुता का कारण बनती जा रही थी। यही कारण रहा कि उनकी एकजुटता के अभाव में विदेशी आक्रमणकारियों को सहजता से भारत में प्रवेश करने का अवसर मिल गया। कुछ विदेशी लुटेरे बन कर आये, भारत की बहुमूल्य सम्पदा को लूट कर भारत को समृद्धिहीन और शक्तिहीन कर चले गये। अनन्तर अन्य आक्रमणकारी सीमान्त राजसत्ताओं से भीषण युद्धों में जीतकर यहाँ के शासक बन बैठे। मुगलों ने तो लगभग पूरे देश पर राज करने की ठान ली थी। पुन: जब अंग्रेज आये तो उस समय सम्पूर्ण भारत बिखर चुका था। राजसत्ताएँ अक्षम और बलहीन हो चुकी थीं भारतीय जनमानस की अस्मिता नष्टप्राय: हो चुकी थी। पूर्व में अंग्रेजों ने व्यापार के बहाने से, पश्चात् अपनी कूटनीतिक चालों से पुन: देश को अपने अधीन कर लिया। वर्ष 1857 की क्रान्ति ने प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन का रूप लेकर अवश्य अंग्रेजी सत्ता का मुकाबला किया, किन्तु सफलता न मिल पाई। अनन्तर महात्मा गांधी के प्रयत्नों से जन-जागृति अवश्य हुई, लेकिन अपने जीवन का बलिदान करने वाले वीर क्रान्तिकारियों से समाज पूर्णत: जुड़ नहीं पाया। यह वह समय था जब सन् 1942 का आन्दोलन असफल हुआ। आन्दोलनरत नेता जेलों में बन्द थे। क्रान्तिकारियों को अंग्रेजों द्वारा सूली पर चढ़ाया जा रहा था। सुभाष की सेना सीमा पर खड़ी थी। इन विषम परिस्थितियों के रहते उस समय पूजनीय डॉ. हेडगेवार जी ने कांग्रेस में रह कर भी देश की स्वतन्त्रता के लिए पर्याप्त प्रयत्न किए किन्तु इतिहास गुरु ने उन्हें यह सोचने पर विवश कर दिया कि हजारों मील दूर से आये मुट्ठी भर अंग्रेजों ने कैसे इस देश को अपना गुलाम बना कर रख दिया है? उनके ध्यान में यह बात आई कि हम ही हैं जिन्होंने अपना देश उनके हवाले किया हुआ है। हम ही उनके सैनिक सिपाही बने, हम ही अधिकारी एवं व्यवस्थापक बने। हमारे जो संरक्षक थे, उन्होंने अपनी राजसत्ताओं की डोर उनके हाथों में थमा दी। आदेश देने वाले अधिकारी अंग्रेज थे किन्तु गोली चलाने वाले अधिकांश सिपाही/सैनिक अपने लोग थे। भगत सिंह तथा अन्य क्रान्तिकारियों को सूली पर लटकाने वाले तथा वीर सावरकर एवं अन्य राजनीतिक कैदियों को निर्मम प्रताडना देने वाले हाथ भी अपनों के ही थे। यही विचार एवं चिंतन डॉ. हेडगेवार को उद्वेलित कर रहा था। वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि ये परिस्थितियाँ तभी उत्पन्न हो रही हैं जबकि यहाँ का मूल निवासी हिन्दू समाज अपनी अस्मिता विस्मृत कर चुका है। स्वधर्म, स्व संस्कृति, स्वदेश, स्वाभिमान और स्वाधिकार के प्रति उसकी उदासीनता बढ़ती जा रही है, अत: जनमानस के 'स्व'

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना और उद्देश्य

डॉ. हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना इसलिए की क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि विदेशी आक्रमणों और गुलामी का मुख्य कारण हिन्दू समाज की अस्मिता का पतन था। संघ का उद्देश्य समाज में स्वधर्म, स्वाभिमान, राष्ट्रभक्ति और संगठन की भावना को पुनर्जीवित करना है।

को जगाना पड़ेगा। एक ऐसा समाज संगठित करना होगा जिसका अपनी मातृभूमि अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम और अपनापन जागृत हो। इसके लिए विशिष्ट विचार तथा श्रेष्ठ आचरण से समाज को संस्कारित करना होगा। मनुष्य संस्कारों को दो स्थानों से ग्रहण कर सकता है, एक अपना घर-परिवार, दूसरा विद्यालय और उसके शिक्षक। छोटी उम्र सहजता से संस्कारों को ग्रहण कर सकती है, इसलिए सर्वप्रथम उन्होंने खेल के बहाने से विद्यार्थियों का एकत्रीकरण किया। उनके अहर्निश प्रयत्नों से कारवाँ बढ़ता गया। विद्यार्थी और उनके परिवारों की संख्या नागपुर तक सीमित न रह कर सम्पूर्ण भारत वर्ष में विश्व के सबसे बड़े सामाजिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के रूप में उभर कर सामने आई।

'संघे शक्ति कलियुगे', यह उक्ति आज पूर्णत: राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर चरितार्थ होती है। संस्कार युक्त लोगों का यह एकत्रीकरण है। पहला संस्कार यह है कि भारत माता के पुत्र हिन्दू हैं और हम सब एक हैं। 'एकश: सम्पत्' हम एक साथ खड़े हैं। जाति, भाषा, क्षेत्र, वेशभूषा, खानपान, उच्च-निम्न वर्ग की विविधता रहते हुए भी हम एक हैं। दूसरा संस्कार दिन के 24 घंटों में से एक घंटा प्रतिदिन संघ शाखा के लिए, ताकि यह सोच पैदा हो कि मैं केवल अपने लिए नहीं, समाज के लिए भी हूं। सामाजिक एकता, समरसता, सेवा, स्वधर्म निष्ठा, कर्त्तव्य निष्ठा, मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम एवं राष्ट्र सर्वोपरि की भावना से ओत-प्रोत होने में ही संघ शब्द का व्यापक अर्थ समझ में आ सकता है। जिसने इस अर्थ को आत्मसात कर लिया वही स्वयंसेवक है। आज भारतीय जनमानस को स्वयं की अस्मिता, सनातन धर्म, समृद्ध संस्कृति और गौरवशाली इतिहास के पुर्नस्मरण कराने में तथा इनसे जुड़े प्रतिष्ठानों की पुर्नस्थापना में संघ की अहम भूमिका है। संघ की संरचना के मुख्य सूत्रधार डॉ. हेडगेवार के नक्शे-कदम चलकर जिन महान विभूतियों ने संघ का शीर्ष नेतृत्व संभाला, उनका इस शताब्दी वर्ष में पुण्य स्मरण करना हमारा कर्त्तव्य बन जाता है। डॉ. हेडगेवार आद्य सरसंघचालक के पश्चात् द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरूजी के कार्यकाल में संघ का का बहुत विस्तार हुआ। विद्यार्थी परिषद्, भारतीय जनसंघ, भारतीय मजदूर संघ, वनवासी कल्याण आश्रम, विश्व हिन्दू परिषद जैसे आनुषांगिक संगठनों की उनके कार्यकाल में स्थापना हुई। तृतीय सरसंघचालक श्री बाला साहब देवरस ने सेवा भारती के माध्यम से सेवा कार्यों एवं प्रकल्पों को आगे बढ़ाया। आपातकाल के समय प्रताडना को सहते हुए भी जनतंत्र की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए जनांदोलन को सफल बनाने में उनका बड़ा हाथ रहा। चौथे सरसंघचालक प्रो. राजेन्द्र सिंह जी ने विदेशों में हिन्दू स्वयंसेवक संघ के कार्यों का भी निरीक्षण किया। पांचवें सरसंघचालक कुप.सी. सुदर्शन ने देश के विभिन्न राज्यों में प्रवास करते हुए संघ का विस्तार किया। वर्ष 2009 से छठे सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत जी हैं जिनके मार्गदर्शन में संघ की प्रभावशाली भूमिका के रहते हुए देश 'स्व' की अनुभूति कर रहा है। उन्होंने अपने राष्ट्र और समाज के प्रति समर्पण की भावना को अधिमान दिया है। उनका कहना है कि स्वयंसेवक अपने कार्य के प्रदर्शन का इच्छुक नहीं रहता। वह उस बीज की भांति है जो स्वयं मिट्टी में मिल जाता है और एक विशाल वृक्ष को जन्म देता है। संघ ऐसे लोगों से चलता है जो होते तो हैं, लेकिन दिखते नहीं। संघ के शताब्दी वर्ष के चलते हिमाचल प्रांत में भी स्वयंसेवक संघ अपना शताब्दी वर्ष मना रहा है। प्रचार विभाग के अंतर्गत मातृवंदना संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक जागरण पत्रिका मातृवन्दना में हिमाचल से संबद्ध राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के इतिहास, भौगोलिक स्थिति, संघ के विस्तार तथा उससे जुड़े अनुषांगिक संगठनों का विवरण

संघ का विस्तार और अनुषांगिक संगठन

संघ की विचारधारा को व्यापक स्तर पर फैलाने के लिए विद्यार्थी परिषद, भारतीय जनसंघ, मजदूर संघ, वनवासी कल्याण आश्रम और विश्व हिन्दू परिषद जैसे संगठनों की स्थापना की गई। इन संगठनों ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सेवा, संस्कार शिक्षा और राष्ट्रभक्ति का विस्तार किया।

प्रस्तुत किया जा रहा है। देवभूमि हिमाचल में संघ कार्य से सम्बन्ध वर्ष 1938 से ही जुड़ गया था। जबकि मंडी के लाला कन्हैया लाल सर्राफ ने लाहौल में संघ शिक्षा वर्ग में शिक्षण प्राप्त किया था। 1940 में पहला प्राथमिक शिक्षा वर्ग सेऊ (कुल्लू) में संचालित किया गया था। हिमाचल की संघ यात्रा का विशेष वर्णन मा. प्रांत कार्यवाह डॉ. किस्मत कुमार जी के आलेख में किया गया है।

वह समय भी था जब हिमाचल के पर्वतीय क्षेत्रों में सडकें नहीं थी। आज के ऋषि पुत्र प्रचारकों ने सैकड़ों मील पैदल चलते हुए दुर्गम क्षेत्रों में प्रवास कर संघ का परिचय देकर क्षेत्रीय लोगों को संगठन से जोडने का अनथक प्रयास किया था। अन्य प्रांतों से आए उन तपस्वी प्रचारकों को हम श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं जिन्होंने विषम परिस्थितियों के रहते हुए भी यहां राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नींव डाली और संगठन खड़ा किया। वे सभी माननीय प्रचारक तथा प्रांत एवं क्षेत्रीय अधिकारीगण जो हिमाचल के ही मूल निवासी हैं श्रद्धा के पात्र हैं जो आज तक संघ के लिए कृतसंकल्प है। हिमाचल प्रांत के लिए बड़े गौरव की बात है कि इनमें से हमारे एक जुझारू प्रचारक माननीय नरेन्द्र ठाकुर जी अखिल भारतीय स्तर पर सह प्रचार प्रमुख का दायित्व निर्वहन कर रहे हैं।

हिमाचल में संघ की भूमिका और विकास

हिमाचल के दुर्गम क्षेत्रों में प्रचारकों ने कठिन यात्राएँ कर संघ का विस्तार किया। यहां के कई प्रचारक राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण दायित्व निभा रहे हैं। हिमाचल में संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर संघ से जुड़े संगठनों की गतिविधियों और उपलब्धियों को विशेष रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है।

पूर्व में हिमाचल में प्रचार विभाग का दायित्व निर्वहन करते हुए उन्होंने ही मातृवंदना पत्रिका को एक सुव्यवस्थित रूप प्रदान किया था। इस प्रांत के कई अन्य प्रचारक भी क्षेत्रीय अधिकारी के रूप में अपने दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं। इस प्रांत में भी संघ के सभी अनुषांगिक संगठन अपने कार्य एवं उद्देश्य पूर्ति में बड़ी प्रतिबद्धता से कार्यरत हैं जिनका इस विशेषांक में संगठनात्मक परिचय दिया गया है तथा उनकी गतिविधियों एवं उपलब्धियों का भी उल्लेख किया गया है। पत्रिका के सीमित आकार एवं पृष्ठों की संख्या को ध्यान में रखते हुए विविध क्षेत्रों के अन्य अनुषांगिक संगठनों का एक ही आलेख में संक्षिप्त परिचय दिया गया है। पत्रिका के आगामी अंकों में क्रमश: उनका विवरण प्रस्तुत किया जाता रहेगा। वर्तमान में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वैचारिक पक्ष एवं गतिविधियों से संपूर्ण भारत का स्वधर्म निष्ठ हिन्दू जनमानस संतुष्ट है। राजनीतिक रूप से पिछड़ते जा रहे राजनीतिक दल अब इस फिराक में है कि कैसे संघ और उसकी विचारधारा से सहमति रखने वाले सत्ताधारी दलों विशेष रूप से भाजपा के शीर्ष नेतृत्व को बदनाम किया जाए। उनकी खीज इतनी बढ़ चुकी है कि आजकल सोशल मीडिया पर संघ को प्रतिबंधित करने का नैरेटिव चलाया जा रहा है। पोस्टर छपवाए जा रहे हैं, किन्तु आज हिन्दू जनमानस जाग चुका है, अपनी अस्मिता को पहचान चुका है। इसका जीता जागता प्रमाण इस वर्ष का प्रयागराज का महाकुम्भ है जहां करोड़ों हिन्दुओं ने समान भाव से एक साथ त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाई।

यही नहीं वहां वैश्विक हिन्दू धर्म के भी दर्शन हुए जहां हिन्दू धर्म में श्रद्धा एवं आस्था रखने वाले करोड़ों विदेशी भक्तों ने भी पवित्र स्नान किए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने शताब्दी वर्ष में पंच परिवर्तन के विषयों को सामाजिक परिवर्तन हेतु अपने अभियान का केन्द्र बिंदु बनाया है। स्वयं के आचरण में लाने वाले ये पंच परिवर्तन क्रमश: सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण, स्व का बोध और नागरिक कर्त्तव्य हैं। सभी स्वयंसेवक अपने परिवार सहित समाज को इन विषयों से संबंधित कार्यों को संपन्न करने के लिए प्रेरित करेंगे। इन पंच परिवर्तन से ही संस्कारित एवं संगठित समाज होगा और विकसित राष्ट्र की कल्पना को हम साकार कर सकेंगे। **संघ के शताब्दी वर्ष पर आप सबको हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।** ◆◆◆

हिमाचल में संघ कार्य की यात्रा

डॉ. किस्मत कुमार
प्रांत कार्यवाह, रा.स्व.सं.

देवभूमि हिमाचल और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य का संबंध 1925 में संघ स्थापना के प्रारम्भिक वर्षों में ही हो गया था। संघ संस्थापक डॉ हेडगेवार जी द्वारा 1940 के संघ शिक्षा वर्ग में लघु भारत के दर्शन करने से अभिप्राय अपने संघ कार्य की अखिल भारतीय उपस्थिति से ही था अर्थात उस समय की भौगोलिक रचना अनुसार देश के सभी प्रांतों से संघ का शिक्षण प्राप्त करने हेतु कार्यकर्ता उपस्थित हुए थे। इस दृष्टि से मण्डी के लाला कन्हैया लाल सराफ़ जी का लाहौर में संघ शिक्षा वर्ग होने से हिमाचल में भी संघ कार्य का संबंध 1938 में ही जुड़ गया। 1940 में सेऊ बाग (कुल्लू) में हुए प्राथमिक शिक्षा वर्ग के स्वर्गस्थ कुंज लाल ठाकुर जी इस वर्ग के मुख्य शिक्षक थे। जिसमें टशी दवा (अर्जुन गोपाल) ठोलङनिवासी ने शिक्षण प्राप्त किया और लाहौल स्पीति के दुर्गम क्षेत्र में संघ कार्य के बीज रोपित कर दिए। इनका 1942 में बड़ौदा से ठाकुर कुंज लाल जी के साथ प्रथम वर्ष हुआ। ठाकुर कुंज लाल जी 1945 में मैट्रिक एवं तृतीय वर्ष का शिक्षण पूरा कर रणवीर सिंह पूरा (जम्मू) में प्रचारक जीवन का संकल्प लेकर कार्यक्षेत्र में चले गए।।

प्रत्यक्ष शाखा कार्य 1942 में कांगड़ा, मण्डी में प्रारंभ हो गया। जब हमीरपुर के मा. ठाकुर रामसिंह जी 1941 में लाहौर में पढ़ाई करते हुए स्वयंसेवक बने और 1942 में संघ शिक्षा वर्ग के पश्चात लाहौर से निकले – पहले समूह 58 प्रचारकों की टोली में सम्मिलित हुए और कांगड़ा में प्रचारक के नाते नियुक्ति हुई। उसी समय गुप्त गंगा के वर्तमान कांगड़ा संघ कार्यालय तब मैदान ही था, उसमें शाखा प्रारंभ की। बाद में यह स्थान श्री विष्णु गिरी जी ने फरवरी 1947 में कोठी सहित संघ को दान कर दिया। तभी कांगड़ा के साथ सत्यप्रकाश जी द्वारा भवारना की शाखा शुरू हुई। इसी के साथ ठाकुर जी के प्रयत्नों से धर्मशाला और मण्डी में शाखाएं शुरू हुईं। 1943 में इस कांगड़ा जिले में 16 शाखाएं शुरू हो गईं। 1944 में ठाकुर राम सिंह जी अमृतसर विभाग प्रचारक बने। तब लगभग आधा वर्तमान आधा हिमाचल कांगड़ा, बिलासपुर, मण्डी, कुल्लू अमृतसर विभाग में ही आता था। शेष हिमाचल रामपुर, शिमला, सोलन का क्षेत्र अम्बाला विभाग में पड़ता था। मा. माधव राव मुले जी उस समय पंजाब के प्रान्त प्रचारक थे। पूजनीय श्रीगुरुजी के 1940 में 'सरसंघचालक' दायित्व का गुरुभार ग्रहण के पश्चात् वर्तमान हिमाचल के अनेक स्थानों पर सम्पन्न हुए सार्वजनिक उद्बोधन के कार्यक्रम्, स्वयंसेवकों एवं कार्यकर्ताओं में वैचारिक स्पष्टता हेतु हुए प्रवास, संघ कार्य के विस्तार एवं दृढ़ीकरण का आधार बनते गए। 1947 में धर्मशाला, 1953 में मण्डी, कांगड़ा, 1953 में ही सुभाष ग्राउन्ड शिमला की सभा, 1962 में कांगड़ा, 1963-64 में नगरोटा, 1967 में बिलासपुर के कमेटी के हाल में, मार्च 1968 में कांगड़ा प्रवास में माँ ज्वालामुखी के दर्शन एवं नादौन का प्रवास, शिमला, 1967 में मण्डी, सोलन, अप्रैल 1968 में कुल्लू, 1971 एवं 1972 में शिमला में पूजनीय श्रीगुरुजी के प्रवास के समय प्राप्त किए हुए सान्निध्य की अनुभूति आज भी वरिष्ठ स्वयंसेवकों की आँखों में सहज रूप से प्रकट हो जाती है और अपने गतिमान संघ कार्य को दृढ़ीकरण के संकेत करती हुई प्रतीत होती हैं। भारत विभाजन के पूर्व से ही हिमाचल उस समय अम्बाला एवं अमृतसर विभाग की रचना में रहने के बाद भौगोलिक संभाग रचना में आया। उस समय ब्रह्मदेव जी अम्बाला के विभाग प्रचारक और ठाकुर रामसिंह जी अमृतसर विभाग प्रचारक रहे।

इसी प्रकार बिलासपुर में प्रथम शाखा 1944 में भदरोग नामक स्थान पर जगदीश मित्र जी (लुधियाना) द्वारा शुरू की गई, जो बिलासपुर राजा द्वारा संचालित विद्यालय में अध्यापक के रूप में नियुक्त हुए थे। कसोल के भूपेन्द्र सिंह चौहान जी, ओमप्रकाश जी, अनन्त राम जी, नन्द लाल जी, कुलदीप जी, डॉ तरसेम जी, महाजन जी, श्रवण जी इसी शाखा के स्वयंसेवक थे। जगदीश मित्र जी को 1948 में संघ पर लगाए प्रतिबंध के कारण राजा ने विद्यालय से हटा दिया था। 1942 में ही पंडित जगन्नाथ जी (पूर्व प्रांत संघचालक) भुंतर शाखा में स्वयंसेवक बने। 1942 में

रामपुर व कुल्लू के प्रथम प्रचारक वैद्य कविराज सीता राम जी निवासी निरमण्ड द्वारा शाखा प्रारंभ हुई। 1942 में रामपुर के तीन स्थानों रामपुर, निरमण्ड, कोटगढ़ में शाखाएं शुरू हुईं।

वर्ष 1969 से 1973 तक में मा. प्रेम चन्द जी हिमाचल के संभाग प्रचारक रहे। उस समय हिमाचल संभाग के शिमला, मण्डी और कांगड़ा तीन विभाग थे, जिनमें क्रमश: अविनाश जायसवाल जी, दीपेन्द्र जोशी जी, वेदव्रत जी विभाग प्रचारक रहे। सितंबर 1964 से अविनाश जायसवाल जी की हिमाचल में प्रचारक के नाते नियुक्ति हो गई थी। 1974 से 1977 आपातकाल पश्चात् तक अविनाश जायसवाल जी संभाग प्रचारक रहे। 1978 से 84 तक जम्मू से डॉ. सुभाष जी संभाग प्रचारक रहे। 1985 में हिमगिरि प्रांत जम्मू-कश्मीर संभाग एवं हिमाचल संभाग दोनों को मिलाकर बना और ज्योति जी (मेरठ वाले) हिमगिरि प्रांत के पहले प्रांत प्रचारक बने। और रामफल जी (वर्तमान में विश्व हिन्दू परिषद) हिमाचल संभाग के तथा इंद्रेश कुमार जी जम्मू कश्मीर संभाग प्रचारक बने। 1990 में श्रीमान इंद्रेश जी हिमगिरि प्रांत के सह- प्रान्त प्रचारक नियुक्त हुए। 1991 से 2000 तक मा. इंद्रेश जी हिमगिरि प्रांत के प्रान्त प्रचारक रहे। इस बीच 1969-70 से मा. महावीर जी भी हिमाचल में प्रचारक के नाते विभिन्न दायित्वों के निर्वहन करते हुए 1997 तक हिमगिरि प्रांत के सह-प्रान्त प्रचारक रहे। पश्चात में 2000 तक श्रीमान कश्मीरी लाल जी सह-प्रान्त प्रचारक के नाते दायित्व निर्वहन करते रहे। सन् 2000 में वर्तमान हिमाचल की प्रान्त की घोषणा हुई और पंडित जगन्नाथ जी कुल्लू, हिमाचल प्रांत के प्रथम माननीय प्रान्त संघचालक, श्रीमान चेतराम जी प्रान्त कार्यवाह, श्रीमान प्रेमकुमार जी प्रान्त प्रचारक हुए। हिमाचल की भौगोलिक परिस्थिति जितनी विकट है उतनी ही दृढ़ नींव यहाँ के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने अपने जीवन में संघकार्य को प्रधान कार्य स्वीकार कर सहज कार्य के रूप में स्थापित कर दिया। सामाजिक दृष्टि से समाज के हर वर्ग में संघ कार्य की व्याप्ति इन्हीं कार्यकर्ताओं के सतत प्रयत्नों का परिणाम है। आज संघ की शाखाओं में बाल से लेकर युवा और प्रौढ़ों तक उपस्थित रहते हैं। जिनमें विद्यार्थी, शोधार्थी, व्यवसायी, कृषक, बागवान, श्रमिक, डाक्टर, अधिवक्ता, वैज्ञानिक, ड्राईवर, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी अर्थात् ऐसा भी कह सकते हैं कि समाज जीवन के हर क्षेत्र, बिरादरी समुदाय का प्रतिनिधित्व रहता है।

आर्य समाज मन्दिर, लोयर बाज़ार शिमला के कार्यक्रम में पधारते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दूसरे सर संघचालक प.पू. माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (श्री गुरु जी) उनके साथ श्री टेक चन्द चिटकारा एडवोकेट, श्री चन्दु लाल सूद एडवोकेट, मा. आत्मा जी थत्ते, मा. माधवराव जी मूले, डा. कृपा राम सूद, पं. लेख राज जी शर्मा, श्री नानक चन्द सूद, आदि बन्धु ।

1942 से 16 शाखाओं से वर्तमान रचना तक संघ कार्य निरंतर अपने विस्तार एवं दृढ़ीकरण के पथ पर अग्रसर है। आज हिमाचल प्रांत की भौगोलिक रचना में सात विभाग, 26 जिले, 155 खण्ड, 45 नगर, 1071 मण्डल, 308 बस्तियां हैं। जिनमें सभी खण्ड, नगरों में अपना कार्य है। इनमें अक्तूबर 2024 तक 883 मण्डल और 255 बस्तियां भी कार्ययुक्त हैं। जिनमें 953 शाखा, 399 साप्ताहिक मिलन, 244 संघ मण्डली के रूप में प्रत्यक्ष संघ कार्य चल रहा है। इसके साथ-साथ प्रत्येक व्यवसायी शाखा में सेवा कार्यकर्ता निश्चित कर स्थानीय स्तर पर एक सेवा कार्य आरम्भ करे, ऐसी योजना बनी है।

संघ कार्य अर्थात् अपने समाज को हृष्ट - पुष्ट करने का काम है। 100 वर्षों की यात्रा में संघ के स्वयंसेवकों ने अपने जीवन के

उदाहरण प्रस्तुत करते हुए सामाजिक परिवर्तन के बीज अंकुरित किये। कालान्तर में देवभूमि हिमाचल का समाज भी जातिगत भेदभाव के रोग से ग्रसित हुआ।

संघ के स्वयंसेवकों ने अपने अपने घर-परिवारों को इस रोग का उपचार करने के लिए औषधि केन्द्र के स्वरूप में ढाल कर इसका निदान प्रारम्भ किया है। संघ के स्वयंसेवकों द्वारा प्रारंभ किये गए सामाजिक समरसता के प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। जहां आज भी जातियों को आपस में बांटने, लड़ाने के बीज बोने में षड्यंत्र किये जा रहे हैं, वहीं संघ की प्रेरणा से इन षड्यंत्रों को पहचान कर संगठित, समरस, एकरस समाज की दिशा में तेज गति से आगे बढ़ने के उदाहरण भी बढ़ते जा रहे हैं। अनेक स्वयंसेवकों ने अपने व्यक्तिगत जीवन में, घर-परिवारों में सामाजिक समरसता के कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर अपनाकर उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। चम्बा के तीसा जैसे दुगर्म क्षेत्रों से लेकर मण्डी, कुल्लू, किन्नौर, शिमला, सोलन, सिरमौर के गिरीपार क्षेत्र तक संघ के स्वयंसेवक अपने जीवन में समरसता के कार्य को कर्तव्य मानकर समाज को छुआछूत की विकृत मानसिकता से बाहर निकालने हेतु डटे हुए हैं।

पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से स्वयंसेवकों द्वारा समाज के सहयोग से पेड़, पानी के संरक्षण हेतु प्रतिवर्ष शाखा स्तर पर अभियान लिया जाता है। हिमाचल को प्लास्टिक मुक्त, हरियाली युक्त बनाने के लिए स्वयंसेवक सतत् प्रयत्नशील रहते हैं।

परिवारों में संस्कार संवर्धन, भारतीय जीवन मूल्य केन्द्रित जीवन शैली के महत्व को लेकर कुटुम्ब प्रबोधन का कार्य चल रहा है।

गौसेवा के अन्तर्गत गोवंश के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु अनेक प्रकार के प्रयोग प्रान्त में चल रहे हैं। गांव के विकास में भारत का विकास निहित है, गांव की संस्कृति के संरक्षण में भारत की संस्कृति का संरक्षण है, इस विचार से ग्राम विकास के नाम से ग्राम के उत्थान हेतु कार्य प्रारम्भ हुए हैं। धर्म जागरण की दृष्टि से गांव-गांव में धर्म रक्षा समितियों के गठन का कार्य हिन्दु समाज की आन्तरिक- बाह्य सुरक्षा हेतु समाज के सहयोग से निरन्तर प्रगति कर रहा है।

शताब्दी वर्ष में पंच परिवर्तन के विषयों को प्राथमिकता

शताब्दी वर्ष में अपने कार्य में संघ ने पञ्च परिवर्तन के विषयों को प्राथमिकता के आधार पर सामाजिक परिवर्तन का केन्द्र बिन्दु बनाया है। जिनमें सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण, 'स्व' का बोध और नागरिक कर्तव्य - इन पांच बिन्दुओं पर स्वयंसेवक, उनके परिवार अपने-अपने आस-पड़ोस के परिवारों के साथ मिलकर सामाजिक परिवर्तन के इस राष्ट्रीय कार्य में आहुति अर्पित करने वाले हैं।

श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन को प्रारम्भ से ही हिमाचल प्रान्त के स्वयंसेवकों ने पूज्य सन्त-महात्माओं के मार्गदर्शन में समाज के साथ मिलकर चलाया। जिसमें एकात्मता यात्रा, श्रीराम ज्योति, विजय महामंत्र का जप, श्री राम शिला यात्राएं, कारसेवा से लेकर श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर तक संघ ने समाज का सहयोग लेकर उल्लेखनीय कार्य किया है। जिसमें 1 से 15 जनवरी 2024, पन्द्रह दिनों में 27666 कार्यकर्ताओं ने 17,01,205 घरों में सम्पर्क किया। प्राण प्रतिष्ठा अर्थात् पौष, शुक्ला, द्वादशी के दिन 6752 कार्यक्रमों में 18,98,739 संख्या की उपस्थिति रही। जो निश्चित रूप से संगठनात्मक क्षमता के विस्तार एवं प्रभाव के दर्शन कराती है।

विविध संगठनों की दृष्टि से भी प्रांत में अपना आधारभूत वैचारिक एवं संगठनात्मक तंत्र स्थापित हुआ है। कुछ तो अपने अपने कार्यक्षेत्र में प्रभावी भूमिका में हैं। सभी संगठन अपने अपने कार्य विस्तार को लेकर शताब्दी वर्ष को निमित बनाकर योजनाओं के क्रियान्वयन के पथ पर अग्रसर हैं। हिमाचल में संघ कार्य की यात्रा को समझने के लिए वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से व्यक्तिगत संवाद एवं पूर्व में यदा-कदा प्रकाशित लेख ही मुख्य स्त्रोत हैं। और इस लेख को लिखते समय इस कार्य को और गहराई से करने का दायित्व बोध भी हुआ, ईश्वर निश्चित रूप से भविष्य की पीढ़ियों को संघ कार्य की इस क्रमिक विकास यात्रा से परिचित करवाने का सामर्थ्य प्रदान करेंगे, यही प्रार्थना है।◆◆◆

डॉ. कर्म सिंह
सह सम्पादक मातृवंदना

व्यक्ति, राष्ट्र निर्माण एवं विश्व कल्याण में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का अवदान

आज हमें यह समझना होगा कि हिंदुस्थान एक राष्ट्र है और हिंदू एक समाज है। हम सब इसके अंग हैं और समाज का प्रत्येक अंग राष्ट्र के लिए है। राष्ट्ररूपी इस विराट् स्वरूप के सभी अंगों को इसकी पूर्णता के लिए कार्य करना चाहिए।

– डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार मई 1940 संघ शिविर, पूना

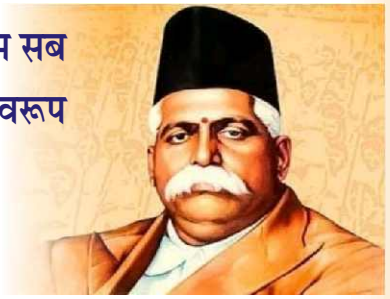

प्रतिपदा के दिन 1 अप्रैल 1889 को डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का जन्म हुआ। यह भारत की स्वतंत्रता का काल था। संघर्ष के इस अंतराल में भारत विदेशी आक्रांताओं के पराधीन रहा। इस अवधि में विधर्मियों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को तहस-नहस करने के लिए शिक्षा, संस्कृति और प्रशासन के माध्यम से अनेक प्रकार के षड्यंत्र रचे। परंतु भारतीय संस्कृति की स्वीकार्यता, उदारता, समन्वयमूलकता, सामाजिक समरसता और वसुधा एव कुटुंबकम् की भावना को भेदने में असफल रहे।

भारत भूमि में जन्म लेने वाले जिन दिव्य महापुरुषों ने भारत की स्वतंत्रता और प्राचीन वैदिक धर्म, दर्शन, संस्कृति एवं जनजीवन के लिए स्वतंत्रता के आंदोलन को विभिन्न रूपों में निरंतर बनाए रखा और व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के निर्माण के लिए अपने जीवन की आहुतियां प्रदान कीं, उनका अविस्मरणीय अवदान भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण रहा है। इस कड़ी में डॉ. हेडगेवार का बहुआयामी व्यक्तित्व समाज एवं राष्ट्र के एक महान आदर्श के रूप में स्थापित है। उन्होंने अपने संवाद, लेखन और संभाषण से तत्कालीन जनमानस को प्रभावित किया। 1908 में पुलिस चौकी पर बम फेंकने की घटना के बाद उन्होंने कहा था– **आज हम अनेक प्रकार की सीमाओं से बंधे हैं उन्हें पार करना हमारा कर्तव्य है। सबसे बड़ी पीड़ादायक और शर्मनाक बात हमारा परतंत्र होना है। परतंत्र रहना सबसे बड़ा अपराध है पापियों एवं परायों का अन्याय सहना भी पाप है। अत: आज विदेशी दासता के विरुद्ध उठ खड़े होना, अंग्रेजों को सात समुद्र पार भेज देना ही सीमोल्लंघन का वास्तविक अर्थ होगा। रावण वध का आज तात्पर्य अंग्रेजी राज का अंत करना है।**

डॉ. हेडगेवार ने समाज के जरूरतमंद लोगों की सेवा करने का व्रत धारण कर लिया तथा अपना जीवन समाज एवं राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया। इस संबंध में उन्होंने अपने एक पत्र में लिखा था – **हम आज यदि परतंत्र हैं तो इसका कारण हमारी कायरता है। हमें एक राष्ट्र, शुद्ध राष्ट्रीयता और भारतीयता का बोध नहीं है तभी तो मुट्ठी भर अंग्रेजों ने करोड़ों लोगों को गुलामी की जंजीरों में बांध रखा है। न सिर्फ क्रांतिकारियों पर जुल्म किये जा रहे हैं बल्कि अहिंसात्मक एवं शांतिपूर्ण आंदोलन करने वालों को भी यातनाएं दी जा रही हैं। अहिंसावादी लोग भी जेलों में कष्ट झेल रहे हैं। मेरे मन में प्रश्न उठता है कि क्या हम अंग्रेजों को परास्त नहीं कर सकते और इसका समाधान मुझे राष्ट्र के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने में दिखाई पड़ रहा है। मेरे तन, मन, बुद्धि, विवेक, आत्मा सब में एक ही बात का बोध है कि यदि राष्ट्र को संगठित करने तथा राष्ट्रीयता का प्रसार करने लोगों में हीनता का भाव दूर करने का कार्य किया जाए तो जीवन का इससे बड़ा सकारात्मक सदुपयोग और कुछ भी नहीं हो सकता है। मुझे हर क्षण सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्वों का बोध होता है और मैं अपने एक शरीर, एक आत्मा और एक मन को बांट नहीं सकता। आज मेरे मन में किसी प्रकार का अंतर्द्वंद्व नहीं है। मैं अपने निर्णय पर अटल हूं। यह निर्णय मेरी प्रकृति के अनुकूल है।**

डॉ. हेडगेवार ने देशभक्ति के लिए देश प्रेमी नागरिकों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा–

देश भक्ति का अर्थ है हम जिस भूमि एवं समाज के लिए जन्मे हैं, उस भूमि, समाज के लिए आत्मीयता और प्रेम, उसकी परंपरा एवं संस्कृति के प्रति लगाव, समाज के जीवन मूल्यों के प्रति विवेकपूर्ण निष्ठा , राष्ट्र के उत्कर्ष एवं विकास

के लिए सर्वस्व समर्पित कर देने की इच्छा, व्यक्ति निरपेक्ष रहकर समष्टि निष्ठ जीवन का पवित्र गंगामय प्रवाह, भौतिकता से दूर रहकर मातृभूमि और उसकी संतानों की निस्वार्थ सेवा, व्यक्तिगत आकांक्षाओं से अधिक राष्ट्र की आवश्यकताओं की अपेक्षा को महत्व प्रदान करना, मातृभूमि के चरणों में नि:स्वार्थ कर्तव्य, कठोर त्यागमय जीवन, व्यवहार से समाज जीवन में सुयश की सुगंध भरना, समाज एवं राष्ट्र को सर्वोच्च देवी देवता स्वीकार करना देशभक्ति का आधार होना चाहिए।

डॉ. हेडगेवार के वक्तव्य और उनकी क्रांतिधर्मी गतिविधियां अंग्रेजी सरकार के लिए एक चुनौती बनती जा रहीं थीं। अंग्रेजी सरकार द्वारा डॉ हेडगेवार पर राजद्रोह का मुकद्दमा चलाए जाने पर उन्होंने निडरता से राष्ट्रभक्ति का सबूत देते हुए अपने ओजस्वी विचारों को व्यक्त करते हुए कहा था–

मैंने अपने देशवासियों में मातृभूमि के प्रति उत्कट भक्तिभाव जागृत करने का प्रयत्न किया, उनके हृदय में यह अंकित करने का प्रयास किया कि हिंदुस्तान हिंदुस्तानियों के लिए है। अत: हमें स्वराज चाहिए। अब अंग्रेजों को सावधान हो जाना चाहिए कि अब उनके वापस चले जाने की घड़ी आ गई है।

जब एक देश के लोगों को दूसरे देश में प्रशासन करने का अधिकार नहीं है तो अंग्रेजों को हिंदुस्तानियों को अपने पैरों के नीचे कुचलकर हिंदुस्तानियों पर शासन करने का अधिकार किसने दिया ?क्या यह न्याय, नैतिकता एवं धर्म की हत्या नहीं है!

1925 में विजयदशमी के दिन कुछ विशेष निमंत्रित व्यक्तियों के साथ विचार – विमर्श करके उन्होंने एक नए संगठन की नींव रखी तथा 17 अप्रैल 1926 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का नामकरण हुआ। उनका यह मानना था कि –

हिंदुस्तान हमारा सब कुछ है। यह निष्ठा और बलवती करने के लिए एक हिंदू संगठन की आवश्यकता है।

उनके चिंतन में राष्ट्र और संगठन में केवल एक ही श्रेणी थी स्वयंसेवक और आदर्श के रूप में भगवा झंडा। शाखा स्वयंसेवकों का समष्टिरूप माना गया और शाखा में होने वाले देसी खेलों का उद्देश्य व्यक्तित्व में सामूहिकता के भाव का संचार होने लगा। बाद में संघ शिक्षा वर्ग की योजना बनी। धीरे–धीरे यह संगठन व्यक्ति, समाज से ऊपर उठकर विस्तार को प्राप्त करता हुआ हुआ राष्ट्र एवं विश्व के प्रमुख संगठन का स्वरूप धारण करता गया जिसके लिए असंख्य स्वयंसेवकों, प्रचारकों और पदाधिकारियों की 100 वर्षों की संघर्षपूर्ण यात्रा की कठोर तपस्या और बलिदान की एक आदर्श श्रृंखला एक विरासत एवं परंपरा के रूप में अस्तित्व आ गई।

डॉ. हेडगेवार ने 1933 में संघ की परंपराओं को स्थापित करते हुए घोषणा की थी–

इस राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का जन्मदाता अथवा संस्थापक मैं न होकर आप सब हैं। यह मैं भलीभांति जानता हूं। आपके द्वारा स्थापित संघ का, आपकी इच्छा के अनुसार मैं एक अध्यक्ष का कार्य कर रहा हूं। आपकी इच्छा एवं आज्ञा के अनुसार आगे भी करता रहूंगा। आपको जब भी प्रतीत हो, मेरी योग्यता के कारण संघ की क्षति हो रही है, तो आप मेरे स्थान पर दूसरे योग्य व्यक्ति को प्रतिष्ठित करने के लिए स्वतंत्र हैं। मेरे लिए अपने व्यक्तित्व के मायने नहीं हैं।

संघ कार्य का यही वास्तविक अर्थ एवं महत्व है। अत: संघ के हित में कोई भी कार्य करने में मैं पीछे नहीं हटूंगा। संघचालक की आज्ञा का पालन स्वयंसेवकों द्वारा बिना किसी अगर-मगर के होना, अनुशासन एवं कार्य प्रगति के लिए आवश्यक है। अत: प्रत्येक स्वयंसेवक शिक्षा से आज्ञा पालन करके दूसरे स्वयंसेवकों को ऐसा करने के लिए प्रेरित करें, यह स्वयंसेवक का कर्तव्य है।

भारत की स्वतंत्रता के लिए सक्रिय संघर्ष, विभिन्न आंदोलनों में भागीदारी एवं सशक्त नेतृत्व, हिंदू महासभा, कांग्रेस और संघ में विभिन्न माध्यमों से सेवा करते हुए डॉ. हेडगेवार ने अपने चिंतन और कार्यशैली से असंख्य लोगों को प्रभावित किया।

आपातकाल के दौरान स्वयंसेवकों को पकड़–पकड़ कर जेल में ठूंस दिया गया और असंख्य स्वयंसेवकों को भूमिगत होकर अपने जीवन की रक्षा करने को मजबूर होना पडा। आपातकाल में असंख्य चुनौतियों का सामना करते हुए अनेकों कष्टों को सहन करते हुए भी स्वयंसेवक समाज सेवा के लिए भी निस्वार्थ एवं समर्पित भाव से कार्य करते रहे। इस तरह 100 साल की संघ की चुनौतीपूर्ण ऐतिहासिक यात्रा में संसाधनों के अभाव में विभिन्न कठिनाइयों का सामना करते हुए इस संगठन ने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के निर्माण में अप्रतिम योगदान प्रदान किया है। यही कारण है कि संघ आज समूचे विश्व में सामाजिक, सांस्कृतिक संगठनों का मार्गदर्शक और आदर्श के रूप में स्थापित हो चुका है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समाज सेवा के विभिन्न आयामों के माध्यम से आज भी शिक्षा, समाज सेवा, जनजागरण आदिवासी कल्याण तथा मानवता की सेवा के लिए विभिन्न कार्यक्रम नि:स्वार्थ भाव एवं सफलता से संचालित कर रहा है। ◆◆◆

हिमाचल में संघ की भूमिका

टेकचंद ठाकुर

संघ का कार्य व्यक्ति निर्माण के माध्यम से राष्ट्र निर्माण संघ का आदर्श वाक्य है। संघ बिना किसी राजनीतिक एजेंडे के एक सांस्कृतिक संगठन के रूप में कार्य करता है, जिसका उद्देश्य समाज को संगठित और देशभक्ति से ओत-प्रोत बनाना है। संघ का प्रभाव भारतीय समाज, राजनीति, शिक्षा, और सांस्कृतिक क्षेत्रों में गहराई से देखा जा सकता है। संघ के स्वयंसेवक विभिन्न आपदाओं में राहत कार्यों में सक्रिय रहते हैं, जैसे बाढ़, भूकंप या महामारी के समय। इसके अलावा, संघ भारतीय युवाओं में नेतृत्व क्षमता और राष्ट्रप्रेम की भावना को प्रोत्साहित करता है।

विगत 100 वर्षों में यह चिंतन वैश्विक स्तर पर समाज के संगठन और मानवता के कल्याण के लिए मार्गदर्शक की भूमिका में सार्थक एवं सफल रहा है। संघ ने आपदाओं के समय राहत कार्यों में बढ़ चढ़कर भाग गया विगत वर्षों में हिमाचल प्रदेश में बाढ़ से हुए प्राकृतिक आपदा के दौरान संघ के स्वयंसेवकों और विभिन्न संगठनों ने सेवा कार्य करके समाज में अपनी पहचान बनाई है।

वनवासी कल्याण आश्रम और सेवा भारती जैसे संगठनों के माध्यम से आदिवासी और दूरस्थ क्षेत्रों में सेवा कार्य किया गया है। हिमाचल प्रदेश में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने आदिवासी क्षेत्र में सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को गतिशील बनाया है। विश्व हिन्दू परिषद् जैसे हिंदुत्ववादी संगठनों की सक्रियता से प्रदेश में गरीब और भोली भाली जनता को धर्मांतरण से से बचाने में कामयाबी हासिल की है।

श्री राम मंदिर आंदोलन के दौरान कार सेवा अक्षत वितरण शिला पूजन आदि विभिन्न कार्यक्रमों में हिमाचल प्रदेश की संस्थाओं की सक्रियता रही है। बारिश एवं बाढ से प्रभावित लोगों की सेवा करने तथा उनके पुनर्वास में विभिन्न सेवा के कार्यक्रमों को अंजाम देने में भी संघ के अनुषांगिक संगठनों ने विशेष योगदान प्रदान किया है।

हिमाचल में संघ की शाखाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्रों में संघ की पकड़ मजबूत बनी हुई है। डिजिटल और आधुनिक संचार माध्यमों के जरिए संघ अपनी विचारधारा को युवा पीढ़ी तक पहुँचा रहा है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हिमाचल प्रदेश में अपनी जड़ें मजबूत कर ली हैं और समाज, शिक्षा, राजनीति एवं सेवा क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आने वाले वर्षों में संघ की भूमिका और अधिक प्रभावशाली हो सकती है।

संघ परिवार के विविध आयामों में विश्व हिंदू परिषद, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, स्वदेशी जागरण मंच, विद्या भारती, सेवा भारती, किसान मंच, भारतीय मजदूर संघ, संस्कृत भारती, संस्कार भारती, हिमगिरी कल्याण आश्रम, सेवा भारती, आरोग्य भारती, योग भारती, प्रज्ञा भारती, राष्ट्र सेविका समिति, दुर्गा वाहिनी, अखिल भारतीय शिक्षण मण्डल, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ,सामाजिक समरसता मंच, हिन्दू जागरण मंच, अखिल भारतीय साहित्य परिषद् आदि आयाम प्रमुख हैं। अन्य संगठनों में ठाकुर राम सिंह इतिहास शोध संस्थान पंचनद शोध संस्थान है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का अपना प्रचार विभाग है जिसे 1994 में प्रारंभक किया गया। विमर्श स्थापित करना, चल रहे विमर्श का ध्यान रखना, संघ के प्रचार से बचते हुए, संघ के बारे में फैल रही भ्रांतियों को दूर करना, संगठन की बात कहना, हिन्दुत्व राष्ट्रीय विचारों, सकारात्मक व रचनात्मक कार्यों का प्रचार-प्रसार करना प्रचार विभाग की कार्य कल्पना है। इकोसिस्टम नेटवर्किंग, मीडिया के सही उपयोग, सामाजिक जागरण, समाज परिवर्तन में प्रचार विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रचार विभाग के मुख्य आयाम हैं जागरण पत्रिका, साप्ताहिक पत्र-पत्रिका एवं ऋतम् एप, साहित्य प्रसार, मीडिया संवाद, सोशल मीडिया, स्तम्भ लेखक, शोध, फिल्म, कार्यालय टोली इन सबके केन्द्र बिंदु में विश्व संवाद केंद्र है।

मातृवंदना संस्थान की ओर से मासिक पत्रिका मातृ वंदना का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कड़ी है जिसके माध्यम से वैचारिक विमर्श को पाठकों तक पहुंचाने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है। इस प्रकार हिमाचल प्रदेश की दुर्गम भौगोलिक क्षेत्र में भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। शिक्षा के प्रचार प्रसार और प्राकृतिक आपदाओं के दौरान समाज सेवा तथा राष्ट्रीय आंदोलन में सकारात्मक ऊर्जा से भाग लेते हुए हिमाचल प्रदेश में भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने ऐतिहासिक उपलब्धियां अर्जित की हैं। यही कारण है कि आज भी यहां दिन प्रतिदिन संघ के कार्यों का विस्तार होता चला जा रहा है और सामाजिक तथा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रचार प्रसार तथा प्रकाशन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी पहचान बनाए रखने में समर्थ एवं अग्रसर है। ◆◆◆

हिन्दवः सोदराः सर्वे न हिन्दू पतितो भवेत्

विश्व हिन्दू परिषद हिमाचल सामाजिक जागरण यात्रा

पंकज भारती - सह प्रांत मंत्री, हिमाचल

विश्व हिंदू परिषद की स्थापना 29 अगस्त 1964 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के शुभ पर्व पर भारत की संत शक्ति के आशीर्वाद के साथ हुई थी। विहिप का उद्देश्य हिंदू समाज को संगठित करना, हिंदू धर्म की रक्षा करना, और समाज की सेवा करना है। भारत के लाखों गांवों और कस्बों में विहिप को एक मजबूत, प्रभावी, स्थायी, और लगातार बढ़ते हुए संगठन के रूप में देखा जा रहा है। इसी क्रम में हिमाचल प्रदेश में भी विश्व हिन्दू परिषद की गतिविधियों का संचालन 80 के दशक में शुरू हो चुका था। परिषद के कार्य को गति देने के लिए समर्पित और कर्मठ कार्यकर्ताओं के अपने समय, तन, मन और धन के समर्पण के कार्य 1980 से गति पकडने् लगे थे। विश्व हिन्दू परिषद हिमाचल प्रांत का पंजीकरण वर्ष 1984 में हुआ। समाज में हिन्दू जन जागरण, हिन्दू चेतना में नव संचार जागृत करने के आंदोलन इस काल खंड में गति पकड़ने लगे थे। इसी क्रम में हिमाचल के युवाओं ने भी महाबलेश्वर की घटना से आहत हो कर अपनी सरकारी नौकरी से अवकाश लेकर अपना पूर्ण समय परिषद् के कार्य में लगाने का निश्चय किया और कार्य को गति दी।

विहिप हिमाचल के शिल्पकार

1980 से शुरू इस यात्रा में अभी तक विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष की शृंखला में सर्वश्री ज्ञान चंद, सतीश बुटेल, ज्ञान चंद सहोत्रा, विष्णु दत्त शास्त्री, बसंत राम गागल, सुदेश गर्ग, अमन पूरी, लेखराज राणा और वर्तमान में डॉ केशव वर्मा ने दायित्व निर्वहन किया हैं। वहीं मंत्री के रूप में श्रीमान सोहन सिंह, सुरेन्द्र रांटा, संसार पाल शर्मा, देव कुमार नेगी, डॉ. सुनील जसवाल और वर्तमान में अधिवक्ता तुषार डोगरा ने कार्य किये हैं। संगठन कार्य को गति देने के लिए संगठन मंत्री के नाते श्रीमान गिरधारी लाल शास्त्री, सोहन सिंह, आनंद हरबोला, बलदेव सूद, लेखराम वर्मा, मनोज सिंह, नीरज दोनेरिया और वर्तमान में श्री प्रेम शंकर कार्यशील हैं।

हिन्दू की परिभाषा : परिषद के संविधान में 'हिन्दू' की परिभाषा लिखी गई कि:– "जो व्यक्ति भारत में विकसित हुए जीवन मूल्यों में आस्था रखता है, वह हिंदू है। इससे भी आगे बढक़र कहा गया कि जो व्यक्ति अपने आप को हिंदू कहता है, वह हिंदू है।" इस परिभाषा के अंतर्गत वे सब सम्मिलित हो जाते हैं, जो अन्य देशों के नागरिक हैं; पर स्वयं को हिंदू कहते हैं।

घोष वाक्य

हिंदू समाज को गतिशील, सक्रिय और सुधरे रूप में प्रतिष्ठापित करने हेतु घोष वाक्य दिये गये।

"हिन्दवः सोदराः सर्वे, ना हिंदु पतितो भवेत्
मम दीक्षा हिंदू रक्षा, मम मंत्रः समानता।"

विश्व हिन्दू परिषद् के बढते चरण

विहिप हिंदू समाज में व्याप्त अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन के निरंतर प्रयासों से, समाज को उनसे विमुक्त कर रही है और अंतर्निहित हिंदू एकता को पुनर्जागृत करने के लिए समाज का कायाकल्प कर रही है। विहिप अपने मूल मूल्यों, विश्वासों और पवित्र परंपराओं की रक्षा के लिए श्री रामजन्मभूमि, श्री कृष्ण जन्मभूमि, श्री काशी विश्वनाथ, श्री अमरनाथ यात्रा, श्री रामसेतु, श्री गंगा रक्षा, गौ रक्षा, हिंदू मठ–मंदिर मुद्दा, ईसाई चर्च द्वारा हिंदुओं का धर्मांतरण, इस्लामी आतंकवाद, बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठ, जैसे मुद्दों को उठाकर हिंदू समाज की अदम्य शक्ति के रूप में स्वयं को स्थापित कर रही है।

विहिप का प्रभाव

- हिंदू धर्म के सभी संप्रदायों (पंथों) के सभी धर्माचार्यों का एक मंच पर एकत्रीकरण।
- हिंदू समाज की सेवा करने की प्रवृत्ति विकसित करने के साथ, सेवा परियोजनाओं की विस्तृत श्रृंखला की संस्थापना।
- सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में अथक प्रयासों के साथ

अपार सफलता।

- समाज में हिंदू गौरव और एकता की बढ़ी हुई अभिव्यक्ति।

वार्षिक कार्यक्रम

भारत वर्ष में यूं तो प्रत्येक दिवस ही कोई न कोई उत्सव अलग अलग भागों में आयोजित होतें हैं, इसी क्रम में संगठन में भी वार्षिक पंचांग में 6 उत्सवों रामोत्सव, स्थापना दिवस, दुर्गा अष्टमी, गोपाष्टमी, शौर्य दिवस, धर्म रक्षा दिवस का आयोजन हर स्तर की समिति के अनुसार किया जाता हैं।

कार्य वृत जानकारी

हिमाचल प्रांत में संगठनात्मक दृष्टि से विश्व हिन्दू परिषद 8 विभागों, 27 ज़िला और 140 प्रखंडों में अपनी इकाइयों का गठन कर कार्य कर रहा हैं। संगठन में मूल रूप से तीन भागों में कार्य का आवंटन किया गया हैं।

1. कार्य विभाग 2. सामाजिक पुंज 3. धार्मिक पुंज

कार्य विभाग में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मंत्री, सह मंत्री, बजरंग दल, दुर्गा वाहिनी, मातृ शक्ति, सत्संग, विशेष संपर्क, विश्व समन्वय, निधि, विधि व पूर्णकालिक

सामाजिक पुंज में प्रचार प्रसार, सेवा, धर्म प्रसार, गौ रक्षा, व समरसता विभाग

धार्मिक पुंज में मंदिर अर्चक पुरोहित, संस्कृत, धर्मयात्रा महासंघ, धर्माचार्य संपर्क सत्संग परिषद की कार्य पद्धति का मूल आधार साप्ताहिक सत्संग हैं। पूरे प्रांत में इस समय बजरंग दल, दुर्गावाहिनी, मातृशक्ति, धर्म प्रसार, सत्संग विभाग के द्वारा 970 साप्ताहिक सत्संग चलाए जा रहे हैं।

बजरंग दल बजरंग दल की स्थापना 8 अक्टुबर 1984 को अयोध्या में हुई। ''श्रीराम जानकी रथ यात्रा'' अयोध्या से प्रस्थान के समय तत्कालीन सरकार ने सुरक्षा देने से मना कर दिया उस समय संतो के आह्वान पर विश्व हिन्दू परिषद द्वारा वहां उपस्थित युवाओं को यात्रा की सुरक्षा का दायित्व दिया।

श्रीराम के कार्य के लिए हनुमान सदा उपस्थित रहे हैं। उसी प्रकार आज के युग में श्रीराम के कार्य के लिए यह बजरंगियों की टोली ''बजरंग दल'' के रूप में कार्य करेगी। वर्तमान में हिमाचल प्रांत में बजरंग दल के 1,500 से अधिक दायित्ववान कार्यकर्ता हैं।

मातृशक्ति : मातृशक्ति विश्व हिन्दू परिषद की संगठनात्मक इकाई है, विश्व हिन्दू परिषद जैसे सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संगठन द्वारा कार्य के संदर्भ में महिलाओं के कार्य पर विशेष ध्यान दिया गया, इसलिए 20 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी न्यासी मण्डल में हो, इसका निर्णय लिया गया। वर्तमान में हिमाचल में 320 से अधिक दायित्व धारी कार्यकर्तृ हैं। दुर्गा वाहिनी विश्व हिन्दू परिषद की युवा महिला शाखा हैं। दुर्गा वाहिनी हिंदू युवतियों का एक अप्रतिम संगठन है, जो सेवा, सुरक्षा और संस्कार के आदर्श वाक्य के साथ हिंदू समाज में पुनर्जागरण लाकर राष्ट्र-धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। दुर्गा वाहिनी में 15 से 35 वर्ष तक की बहनें शामिल हो सकती हैं। इसकी स्थापना 1994 में साध्वी ऋतम्भरा ने की। वर्तमान में हिमाचल में 270 से अधिक दुर्गा समाज जागरण का दायित्व लेकर जुटी हैं। सेवा विभाग विश्व हिंदू परिषद सेवा विभाग हिमाचल प्रांत में 10 संस्कारशालाओं में चल रहा है। प्रतिदिन 15 से 30 बच्चे प्रत्येक संस्कारशाला में संस्कार प्राप्त करते हैं। संस्कार शाला की अपनी एक टोली का गठन भी किया जाता है। जिसमें 10 सदस्य हैं उसमें से चार मातृशक्ति अनिवार्य हैं। हिमाचल प्रांत में संस्कारशालाओं के माध्यम से लगभग 3000 स्वदेशी रक्षा सूत्र बनाकर गांव में वितरण किये गए। इसके अतिरिक्त प्रांत की मातृशक्ति द्वारा भी हजारों की संख्या में रक्षा सूत्रों का गठन कर देश की सीमाओं की रक्षा कर रहे जवानों में वितरण किया गया। रामपुर में श्री ठाकुर सत्य नारायण(कपूरिया) मंदिर न्यास द्वारा सेवा कार्य जिनमें निशुल्क आँखों के उपचार के लिए शिविर का आयोजन, गरीब बेटियों के विवाह में सहयोग, मारंडा (पालमपुर) में भारतीय जन जागरण सेवा संस्थान के अंतर्गत समाज के वंचित वर्ग के युवाओं व युवतियों को कम्प्युटर शिक्षा, सिलाई कड़ाई का प्रशिक्षण जैसे कई कार्य सेवा विभाग कर रहा है।

गौ रक्षा विभाग भी समाज के सहयोग से पिछले 5 दशकों में हिमाचल प्रांत में हजारों की संख्या में गौ वंश के संरक्षण के अतिरिक्त सरकारों से गौ संरक्षण के लिए राशि में वृद्धि करवाने के साथ साथ गौ शाला और गौ अभयारण्य खुलवाने में सहयोगी रहा है। धर्म प्रसार आयाम का प्रमुख कार्य धर्मांतरण को रोकना और जो

विहिप हिमाचल के कार्यकर्त्ता

विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते हुए

सनातनी किसी लोभ में आकर या डर के कारण दूसरे धर्मों में चले गए है उनका परावर्तन यानी घर वापसी करवाना है। इस ओर प्रांत धर्म प्रसार आयाम अग्रसर है। इसके सार्थक परिणाम सामने आये हैं। सम्पूर्ण देश इस समय धर्मांतरण, लव जिहाद, लैंड जेहाद जैसे खतरों से जूझ रहा हैं। हिमाचल विश्व हिन्दू परिषद ने अपने ऊना के प्रांत अधिवेशन में प्रांत को धर्मांतरण मुक्त करने का संकल्प लिया। इसी क्रम में प्रांत की सरकारों को धर्मांतरण के विरोध में सख्त कानून बनाने पर सहमत किया गया तथा परिणाम स्वरूप हिमाचल में धार्मिक स्वंत्रता अधिनियम पारित किया गया।

समाज जागरण और हिंदुओं में नव चेतना का संचार करने की अपनी कार्यशैली के चलते ही हिमाचल प्रांत में सार्थक परिणाम आने शुरू हो गए हैं। लैंड जिहाद को लेकर चले जन जागरण अभियान का ही परिणाम है कि शिमला संजौली की कथित मस्जिद हो या फिर मंडी की भूमि पर अवैध कब्जे को लेकर समाज का विरोध हो, यह अब मुखर होकर सामने आ रहा है। जिहादी मानसिकता वाले लव जेहाद को हथियार बनाकर बहू बेटियों को निशाना बनाने की कोशिश पर अब समाज में फेरी वालों को रोकने टोकने की बात हो या फिर धार्मिक स्थलों में गैर हिंदुओं की नियुक्ति की बात हो, जनता जागरूक होकर उठ खड़ी हुई है और अब विश्व हिन्दू परिषद की सभी गतिविधियों में सकारात्मक सहयोग कर रही है। ◆◆◆

स्थापना और उद्देश्य - 1964 में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन स्थापित विश्व हिंदू परिषद का मुख्य उद्देश्य हिंदू समाज को संगठित करना, धर्म की रक्षा करना और समाज सेवा को बढ़ावा देना है।

हिमाचल में विस्तार - हिमाचल में विहिप की गतिविधियाँ 1980 के दशक में शुरू हुईं और 1984 में आधिकारिक पंजीकरण हुआ, जिससे हिंदू जन जागरण को गति मिली।

नेतृत्व और संगठन - विहिप हिमाचल में कई समर्पित अध्यक्षों, मंत्रियों और संगठन मंत्रियों ने कार्य किया, जिन्होंने संगठन को मजबूत किया।

हिंदू परिभाषा - विहिप के अनुसार, जो भारत में विकसित जीवन मूल्यों में आस्था रखता है और स्वयं को हिंदू मानता है, वह हिंदू है।

महत्वपूर्ण अभियान - श्री रामजन्मभूमि, अमरनाथ यात्रा सुरक्षा, गौ रक्षा, धर्मांतरण विरोध, बांग्लादेशी घुसपैठ रोकथाम जैसे प्रमुख अभियानों में विहिप की भागीदारी रही है।

समाज सुधार - अस्पृश्यता उन्मूलन, हिंदू एकता, धार्मिक चेतना जागरण और सामाजिक समरसता के लिए निरंतर प्रयास किए गए हैं।

वार्षिक आयोजन - रामोत्सव, स्थापना दिवस, दुर्गा अष्टमी, शौर्य दिवस, गोपाष्टमी और धर्म रक्षा दिवस जैसे उत्सव हर साल मनाए जाते हैं।

युवा और महिला संगठन - बजरंग दल (1984), मातृशक्ति और दुर्गा वाहिनी (1994) के माध्यम से युवाओं और महिलाओं को संगठित कर समाज सेवा और राष्ट्र रक्षा में लगाया गया।

सेवा एवं संस्कार कार्य - संस्कारशालाओं, शिक्षा, निर्धन कन्याओं के विवाह, स्वास्थ्य सेवाओं और गौशालाओं के माध्यम से समाज कल्याण के कार्य किए जा रहे हैं।

धर्मांतरण और लैंड जिहाद विरोध - हिमाचल को धर्मांतरण मुक्त बनाने की पहल के तहत धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम लागू करवाया और लैंड जिहाद, लव जिहाद के खिलाफ समाज को जागरूक किया।

राष्ट्र प्रथम

की भावना से प्रेरित

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

हिमाचल प्रदेश

संघर्ष, सेवा और उपलब्धियां

डॉ. राकेश कुमार शर्मा - प्रांत अध्यक्ष

वर्ष 1947 में देश को मिली स्वाधीनता के तुरंत बाद देश को आगे ले जाने की जिम्मेदारी सबसे अधिक युवा वर्ग पर थी।राष्ट्रभक्ति से प्रेरित, 'राष्ट्र प्रथम' की भावना के साथ युवाओं ने वर्ष 1948 में शैक्षिक परिसर में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के रूप में काम करना शुरू किया। इसका विधिवत् पंजीकरण 9 जुलाई 1949 को हुआ। इस कारण हर वर्ष 9 जुलाई को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद पूरे देश में राष्ट्रीय छात्र दिवस के रूप में मनाती है। इस दिन परिषद के रूप में जो बीज बोया गया, वह आज एक विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने स्वाधीनता के पश्चात् भारत की हजारों वर्षों पुरानी गौरवशाली और वैभवशाली परंपराओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें पुन: आधुनिक, विकसित, और परिस्थितिजन्य दोषों से मुक्त करके भारत को एक शक्तिशाली, समृद्ध और स्वाभिमानी राष्ट्र के रूप में पुन: निर्माण करने का उद्देश्य लिया है। 'ज्ञान, शील, एकता' का ध्येय लेकर यह परिषद राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ में कार्य करने के लक्ष्य पर अग्रसर है। यह समाज के विविध क्षेत्रों में शिक्षा परिवार की सामूहिक अंतर्निहित शक्ति पर विश्वास करते हुए, छात्रों को रचनात्मक कार्यों में सम्मिलित करने और दलगत राजनीति से ऊपर उठकर अपनी गतिविधियों को संचालित करता है। परिषद में शिक्षक, शिक्षार्थी, और शिक्षाविद् शिक्षा परिवार के रूप में मिलकर काम करते हैं। विद्यार्थियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर शिक्षक भी सहयोगी कार्यकर्ता की भूमिका निभाते हैं। यहां शिक्षकों की भूमिका मार्गदर्शक या निदेशक की नहीं, बल्कि एक सहयोगी के रूप में है। परिषद के काम में शिक्षकों की प्रत्यक्ष भागीदारी होने के बावजूद इसने अपना स्वरूप छात्र संगठन का बनाए रखने में सफलता प्राप्त की है।अखिल भारतीय विद्यार्थी

परिषद ने विद्यार्थियों को कैंपस और समाज जीवन में आने वाली विभिन्न चुनौतियों का सामना करने में मदद की है। हालांकि, परिषद ने शिक्षकों की किसी पेशेवर मांग को लेकर कभी आंदोलन नहीं किया, क्योंकि इसका मुख्य उद्देश्य एक छात्र संगठन के रूप में व्यापक छात्र आंदोलन को संचालित करना रहा है।

राष्ट्र के अन्य स्थानों में बेशक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का कार्य लगातार बढ़ता रहा, लेकिन हिमाचल प्रदेश में विद्यार्थी परिषद का कार्य सही अर्थों में सत्तर के दशक के अंतिम वर्षों में ही ठीक से शुरू हो पाया।तब तक अधिकांश स्थानों पर वामपंथियों का ही बोलबाला था। हिमाचल प्रदेश में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के संगठनात्मक कार्य को नई दिशा और शक्ति प्रदान करने का श्रेय सुनील उपाध्याय जी को जाता है, जिन्होंने 1979-80 में अपने साहसिक और निर्णायक कदमों से संगठन को मजबूती दी। उस समय प्रदेश में विद्यार्थी परिषद का कार्य लगभग नगण्य था, लेकिन अपने अथक परिश्रम, समर्पण और संगठनात्मक क्षमता से उन्होंने परिषद को प्रदेश में स्थापित करने का बीड़ा उठाया। कठिन परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने संगठन को गति दी और छात्रों के हितों के लिए संघर्ष करते हुए विद्यार्थी परिषद को सशक्त किया। वर्ष 1980-81 में विद्यार्थी परिषद ने उनके मार्गदर्शन में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में प्रबंधन स्नातकोत्तर (एमबीए) प्रवेश प्रक्रिया में कम्युनिस्टों द्वारा की गई धांधली के विरुद्ध प्रभावी आंदोलन किया, जिसने छात्रों को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही विश्वविद्यालय के एवालॉज भवन को छात्रावास में परिवर्तित कराने का सफल प्रयास किया, जिससे छात्रों को मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध हो सकीं।

उनके असाधारण नेतृत्व, अद्वितीय समर्पण और संगठनात्मक क्षमता ने हिमाचल प्रदेश में विद्यार्थी परिषद की नींव को मजबूत किया और संगठन को प्रदेश के शिक्षण संस्थानों में प्रभावी छात्र शक्ति के रूप में स्थापित करने की आधारशिला रखी। तत्पश्चात् विद्यार्थी कार्यकर्ताओं ने प्रदेश के विभिन्न स्थानों में प्रवास करना शुरू किया, और इस प्रकार कई प्रमुख स्थानों जैसे बिलासपुर, कांगड़ा, ऊना, सुंदरनगर, सोलन, कुल्लू, चंबा, नाहन, हमीरपुर तथा अन्य स्थानों पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का कार्य प्रारंभ हुआ। विद्यार्थी परिषद ने प्रारंभ से ही शिक्षा सुधार, राष्ट्रवाद, सामाजिक उत्थान तथा छात्र कल्याण के लिए महत्वपूर्ण आंदोलन चलाए और प्रदेश में छात्र शक्ति को संगठित किया।विद्यार्थी परिषद ने वर्ष 1980 में पहली बार हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में छात्र संघ चुनावों में अध्यक्ष पद का चुनाव जीता। तत्पश्चात विद्यार्थी परिषद का संगठनात्मक कार्य आगे बढ़ा, जिसके लिए परिषद के कार्यकर्ताओं को कई स्थानों पर वामपंथियों का हिंसात्मक अवरोध सहन करना पड़ा, लेकिन परिषद के कार्यकर्ताओं ने इस पहाड़ी प्रदेश में 'राष्ट्र प्रथम' के भाव की अलख जगाने का कार्य निर्बाध रूप से जारी रखा।

रचनात्मक कार्य :

हिमाचल प्रदेश में महाविद्यालय परिसरों में रचनात्मक वातावरण बनाने में विद्यार्थी परिषद् की अहम भूमिका रही है। जिन परिसरों में रैगिंग के डर से भय का वातावरण बना रहता था, वहाँ विद्यार्थी परिषद् ने रचनात्मक कार्य करना प्रारंभ किया। वर्ष 1992-95 के दौरान परिषद ने 'परिसर बचाओ अभियान' की शुरुआत की, जिसके अंतर्गत प्रदेशभर के शिक्षण संस्थानों में छात्रों के अधिकारों और परिसर की पवित्रता को बनाए रखने हेतु जागरूकता अभियान चलाया गया। वर्ष 1994 में शिमला के रानी झांसी पार्क में एक विशाल रैली आयोजित की गई, जिसमें 1500 छात्रों ने भाग लिया और परिसरों की सुरक्षा तथा छात्र संघ चुनाव बहाली की मांग को जोरदार तरीके से उठाया। ऊना में जब जहरीली शराब से लोगों की मृत्यु हुई तो वर्ष 1997 में ऊना जिले में शराबबंदी के लिए व्यापक जन आंदोलन किया गया, जिसमें छात्रों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और सामाजिक सुधार की दिशा में कदम उठाया। वर्ष 1998 में परिषद ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ऐतिहासिक कार्य किया, जब सात अगस्त को पूरे प्रदेश में एक ही दिन में 30, 000 वृक्षारोपण किए गए और 12 नवंबर को मनीषी कार्यकर्ता स्वर्गीय सुनील उपाध्याय जी की पुण्यतिथि पर एक ही दिन में 1000 यूनिट रक्तदान कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया।

वर्ष 2008 में 1857 की क्रांति के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में परिषद ने 71 कार्यक्रमों का आयोजन किया, जिनमें 25,000 से अधिक छात्र शामिल हुए और राष्ट्रभक्ति की भावना को प्रबल किया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद स्वामी विवेकानंद को अपना आदर्श पुरुष मानती है। वर्ष 2013 में स्वामी विवेकानंद सार्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में परिषद ने प्रदेशभर में 7 यात्राएँ, 25 नुक्कड़ नाटक, 91 कार्यक्रम आयोजित किए तथा 2 लाख पत्रक वितरित कर युवाओं को प्रेरित किया। इस उपलक्ष्य में 42 विस्तारकों को विभिन्न क्षेत्रों में भेजा गया ताकि वे संगठन और स्वामी जी का संदेश जन-जन तक पहुँचा सकें। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद समाज के प्रति अपने कर्तव्यों के प्रति हमेशा से सजग रहती है। इसी कड़ी में वर्ष 2016 में परिषद ने 'सामाजिक अनुभूति' कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें 111 विस्तारकों ने सात दिन तक प्रदेश के 289 गाँवों और लगभग 6000 घरों का सर्वेक्षण किया तथा विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता फैलाई। वर्ष 2019 में परिषद ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ऐतिहासिक कदम उठाते हुए 27 जुलाई को प्रदेश के 18 जिलों के 75 स्थानों पर वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें 20,786 छात्र-छात्राओं ने सहभागिता की और एक ही दिन में 73,150 पौधे रोपकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। वर्ष 2021 में परिषद ने 'एक गाँव, एक तिरंगा' अभियान के अंतर्गत प्रदेश के 18 जिलों में 6,435 स्थानों पर ध्वजारोहण किया, जिसमें 97,649 लोगों ने भाग लिया और राष्ट्रभक्ति का वातावरण बनाया।

आंदोलनात्मक गतिविधियाँ

हिमाचल प्रदेश में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने अब तक कई सशक्त आंदोलन किए और युवाओं की दमदार आवाज बनकर उभरी। वर्ष 2000 में छात्र संघ चुनाव बहाली के लिए 5050 छात्रों के साथ एक विशाल रैली आयोजित की गई, जिसने प्रदेश सरकार और प्रशासन को छात्र हितों के प्रति संवेदनशील होने के लिए बाध्य किया। वर्ष 2006 में शिक्षा और बेरोजगारी के विरुद्ध अभूतपूर्व आंदोलन हुआ, जिसमें 15,000 छात्र और शिक्षक शामिल हुए। वर्ष 2009 में परिषद ने शिक्षा के बाजारीकरण के विरोध में सचिवालय के बाहर 3, 000 छात्रों के साथ प्रदर्शन किया, जिससे सरकार पर दबाव बना और शिक्षा व्यवस्था में सुधार की दिशा में कदम उठाए गए। वर्ष 2010-12 के दौरान परिषद ने निजी विश्वविद्यालयों की अनियंत्रित स्थापना और शिक्षा के व्यापारीकरण के विरोध में प्रभावी आंदोलन चलाया। परिषद के दबाव के कारण निजी विश्वविद्यालयों की मनमानी पर रोक लगी तथा उनके निगरानी के लिए 'शैक्षिक विनियामक प्राधिकरण' की स्थापना की गई। 2011 में शिमला में भ्रष्टाचार के विरुद्ध 30 दिसंबर से 1 जनवरी 2012 तक 72 घंटे का धरना दिया गया, जिसने प्रदेश में भ्रष्टाचार के खिलाफ जनमत को मजबूत किया।

वर्ष 2016 में विश्वविद्यालयों में लागू पाठ्यक्रम प्रणाली में व्यापक अनियमितताओं और 93 प्रतिशत छात्रों के असफल होने के विरोध में 12 दिन तक प्रदेशव्यापी आंदोलन किया गया, जिसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय प्रशासन को पुन: परीक्षा परिणाम घोषित करने के लिए बाध्य होना पड़ा। वर्ष 2017 में 30 मार्च को परिषद ने शिमला में शिक्षा में भ्रष्टाचार, अराजकता, व्यापारीकरण और बेरोजगारी के विरोध में एक विशाल छात्र आक्रोश रैली आयोजित की, जिसमें प्रदेश भर से 16,023 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इस रैली ने सरकार और प्रशासन को शिक्षण संस्थानों में सुधार लाने के लिए मजबूर किया। वर्ष 2018 में परिषद के पांच वर्षों के संघर्ष के बाद प्रदेश सरकार को अंतत: 'राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान' के अंतर्गत स्नातक स्तर पर लागू सत्र प्रणाली को समाप्त कर वार्षिक परीक्षा प्रणाली को लागू करना पड़ा। वर्ष 2022 में परिषद के निरंतर प्रयासों और आंदोलनों के फलस्वरूप प्रदेश में दूसरा राज्य विश्वविद्यालय मंडी में खोला गया, जो हिमाचल प्रदेश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

विविध आयाम कार्य एवं गतिविधियां

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् अपने विभिन्न आयामों, कार्यों और गतिविधियों के माध्यम से भी युवाओं में अच्छी खासी पैठ बना चुकी है। समय के साथ-साथ और कार्य विस्तार की आवश्यकता के अनुरूप विद्यार्थी परिषद् के काम में विभिन्न आयाम जुड़ते रहे हैं, जैसे चिकित्सा क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए

मैडिविजन, कृषि क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए एग्री विजन, आयुर्वेद के विद्यार्थियों के लिए जिज्ञासा, फार्मेसी के विद्यार्थियों के लिए फार्माविजन, और बड़े प्रबंध संस्थानों में अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए थिंक इंडिया जैसे श्रेष्ठ आयाम खड़े हुए हैं। इन सभी का कार्य हिमाचल प्रदेश में आगे बढ़ रहा है। प्राचीन काल में भारत विश्व गुरु था, और दुनिया भर के लोग भारत के गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए आया करते थे। आज भी दुनिया के अनेक देशों के विद्यार्थी भारत में शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते हैं। उन विद्यार्थियों को भारतीय चिंतन के साथ जोडऩा और उन्हें भारतीय संस्कृति से जोडऩा ताकि वे दुनिया भर में भारत और भारतीयता के एक ब्रांड एंबेसडर के रूप में भूमिका निभा सकें, इसके लिए विद्यार्थी परिषद का एक विशेष आयाम है WOSY (World Organisation of Students Youth)। इसके माध्यम से विश्व के अनेक देशों के विद्यार्थियों से परिषद का प्रत्यक्ष संबंध है। कुछ महत्वपूर्ण भारतीय त्योहारों पर WOSY के माध्यम से दुनिया भर के, हिमाचल में रहने वाले विद्यार्थियों के लिए विशेष आयोजन भी होते हैं, जैसे – होली, दीपावली स्नेह मिलन।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से प्रदेश के अधिकतर संस्थानों में कार्य कर रही है। पर्यावरण में दिलचस्पी रखने वाले युवास्टूडेंट फॉर डेवलपमेंट के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण जागरूकता के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करती है। इस गतिविधि में पर्यावरण के लिए समर्पित युवा कार्य करते हैं। दूसरी गतिविधि स्टूडेंट फॉर सेवा के माध्यम से कार्यकर्ता अनाथ आश्रम, वृद्ध आश्रम, बालिका आश्रम, बालक आश्रम, बस्तियों में विभिन्न प्रकार से सेवा कार्य करते हैं, जैसे आश्रमों और बस्तियों में त्योहार मनाना, वस्त्र वितरण करना, निशुल्क कोचिंग देना, रक्तदान करना आदि।कला व संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और हस्तांतरण के लिए कलाकारों को उचित मंच प्रदान करने का कार्य अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद अपनी गतिविधि राष्ट्रीय कला मंच के माध्यम से करती है। युवाओं को नशे से दूर रखने और उनकी ऊर्जा को सही रूप से चैनलाइज करने के लिए, खिलाडियों और खेलों को उचित मंच प्रदान करने के लिए खेलो भारत के माध्यम से अभाविप खिलाडियों के बीच कार्य करती है। अभाविप का शोध भी एक महत्वपूर्ण आयाम है जो शोधार्थियों को अनुसंधान के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराता है और उन्हें अनुसंधान की बारीकियों से अवगत कराता है। इसके अलावा, कई प्रकार के कार्य भी वर्ष भर अपनी गतिविधियों के माध्यम से किए जाते हैं, जिनमें प्रमुख रूप से जनजाति कार्य, छात्रा कार्य, केंद्रीय विश्वविद्यालय कार्य, राज्य विश्वविद्यालय कार्य, निजी विश्वविद्यालय कार्य आदि कार्य शामिल हैं, जो अपने-अपने क्षेत्र में युवाओं में राष्ट्र प्रथम की प्रेरणा बनते हैं। आयाम, कार्य और गतिविधियों के द्वारा किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों ने युवाओं को एक सकारात्मक दिशा दी है, जिसका अनुसरण आज अन्य छात्र संगठनों द्वारा भी किया जा रहा है।इन सभी आंदोलनों, अभियानों और सेवा कार्यों के माध्यम से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने हिमाचल प्रदेश में शिक्षा सुधार, राष्ट्रभक्ति, सामाजिक जागरूकता और छात्र नेतृत्व को सशक्त बनाने में अभूतपूर्व योगदान दिया है। परिषद ने समय-समय पर राष्ट्रविरोधी तत्वों और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष किया और हिमाचल प्रदेश में छात्र शक्ति को राष्ट्र शक्ति में बदलने का कार्य किया। आज प्रदेश के शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में विद्यार्थी परिषद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक बनी हुई है। हिमाचल प्रदेश में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषदने अपने स्थापना काल से ही शिक्षा, राष्ट्र प्रेम, सामाजिक न्याय और छात्र हितों की रक्षा के लिए निरंतर संघर्ष किया है। सुनील उपाध्याय जी के असाधारण नेतृत्व में संगठन का कार्य इस प्रदेश में बढ़ा, जिसने प्रदेश में विद्यार्थी परिषद् को एक सशक्त और प्रभावी छात्र संगठन के रूप में स्थापित किया। समय-समय पर परिषद ने शिक्षा प्रणाली में सुधार, भ्रष्टाचार के विरुद्ध आंदोलन, पर्यावरण संरक्षण, राष्ट्रभक्ति जागरण, समाज सेवा और शैक्षणिक संस्थानों में लोकतांत्रिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए संघर्ष किया।

विभिन्न आंदोलनों और अभियानों के माध्यम से परिषद ने न केवल छात्र हितों की रक्षा की, बल्कि हिमाचल प्रदेश के सामाजिक और शैक्षणिक परिदृश्य में सकारात्मक परिवर्तन लाने

में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज विद्यार्थी परिषद न केवल एक छात्र संगठन है, बल्कि राष्ट्र निर्माण की एक सशक्त धारा बन चुका है, जो युवाओं को जागरूक और संगठित कर उन्हें समाज और देशहित में कार्य करने की प्रेरणा देता है। हिमाचल प्रदेश में परिषद के निरंतर प्रयासों से कई ऐतिहासिक उपलब्धियाँ हासिल हुई हैं, जिनमें शिक्षा नीति में सुधार, शैक्षणिक अराजकता के विरुद्ध आंदोलन, छात्रसंघ चुनाव की बहाली, पर्यावरण सुरक्षा, राष्ट्रभक्ति जागरण और विश्वविद्यालयों में लोकतांत्रिक अधिकारों की पुनर्स्थापना प्रमुख हैं। इन उपलब्धियों के साथ-साथ परिषद ने समाज सेवा और जनकल्याण के कार्यों में भी अपनी सशक्त भूमिका निभाई है। यही कारण है कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद आज हिमाचल प्रदेश का सबसे बड़ा सदस्यता वाला संगठन है और युवाओं की स्वाभाविक पसंद बनकर उभरा है 70 के दशक से लेकर अब तक, अनेकों वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के संघर्ष, तप, और मार्गदर्शन ने विद्यार्थी परिषद को प्रदेश में एक अग्रणी संगठन के रूप में स्थापित किया है।

भविष्य में भी विद्यार्थी परिषद इसी प्रतिबद्धता और जोश के साथ हिमाचल प्रदेश में छात्रहित, शिक्षा सुधार और सामाजिक परिवर्तन के लिए कार्य करता रहेगा। राष्ट्र प्रथम का भाव लिए, संस्कृति और समाज सेवा के मूल सिद्धांतों पर आधारित विद्यार्थी परिषद हिमाचल प्रदेश के युवाओं को सही दिशा देने और उनके नेतृत्व क्षमता को विकसित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा। परिषद का उद्देश्य केवल छात्र हितों की रक्षा तक सीमित नहीं है बल्कि समाज और राष्ट्र के उत्थान में युवाओं को एक सशक्त माध्यम के रूप में तैयार करना है। विद्यार्थी परिषद का यह गौरवशाली संघर्ष, सेवा और राष्ट्र निर्माण का अभियान भविष्य में और अधिक प्रभावी होकर प्रदेश के सामाजिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक विकास में अमूल्य योगदान देता रहेगा। ◆◆◆

श्रमिक समुदाय के श्रम से बनेगा

स्वर्णिम भारत

भारतीय मजदूर संघ हिमाचल प्रदेश की संघर्ष गाथा

सुरेन्द्र ठाकुर

1. प्रारम्भिक दौरः 23 जुलाई 1955 को भोपाल में श्रद्धेय दत्तो पंत ठेगड़ी जी ने अपने सहयोगियों के साथ मातृ संगठन के अनेक प्रचारकों, पूर्ण कालिकों तथा सरकारी एवं गैर सरकारी क्षेत्र में कार्यरत मजदूरों एवं अधिकारियों के साथ मिल कर इस कार्य को प्रारम्भ किया। इसके साथ ही प्रदेशों में कार्य विस्तार का खाका तैयार किया। वर्ष 1968 में कानूनविद तेज तरार भामसं में आये संघ प्रचारक जो कि अमृतसर के निवासी थे, उनको हिमाचल भेजा गया। केन्द्र से हिमाचल में व्यास सतलुज परियोजना संघ को गठित करने के साथ ही हिमाचल नगर संघ में दायित्वान् कार्यकर्ता श्री बलवीर शर्मा जो कि पंजाब नैशनल बैंक में कर्मचारी थे, श्री कंवर सिंह सलोह ऊना के पूर्णकालिक श्री आशा नारायण सिंह एवं श्री साधु सिंह निधड़क बीबीएमबी कर्मचारी, श्री गुलवंत अर्जीमनीस मण्डी, राजनैतिक कार्यकर्ता श्री शम्भु राम चढियार, श्री राजेंद्र सिंह एवं श्री महेन्द्र बहल लोक निर्माण विभाग इत्यादि प्रमुख कार्यकर्ताओं ने प्रदेश में श्री प्यारे लाल वैरी जी के साथ मिलकर कार्य की शुरूआत की थी। बाद में श्री अशोक पुरोहित, श्री एन डी शर्मा अर्की, श्री सुभाष वशिष्ट, श्री राज कुमार हमीरपुर, श्री बलवन्त बहल मण्डी, श्री कुलदीप गुलेरियां, मेला राम चन्देल एवं सरदार रघुवीर एवं कश्मीर भाईयों ने इसको आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई।

2. प्रथम प्रदेश कार्यसमिति का गठनः 15 मार्च 1972 को श्री बलवीर शर्मा की अध्यक्षता में प्रथम प्रदेश कार्यसमिति का गठन हुआ। जिसमें प्यारे लाल वैरी महामन्त्री तथा कंवर विजय सिंह कार्यालय सचिव चुने गए। शुरूआती दौर में प्रोजेक्ट के समीप सुन्दरनगर में किराये का कार्यालय उसके बाद बिलासपुर और बाद में 47/9 बंगला मोहल्ला मण्डी में अनेक वर्षों तक प्रदेश कार्यालय चलाया गया। इसके पश्चात् कुल 19 त्रैवार्षिक प्रदेश अधिवेशन मण्डी, ऊना, नालागढ, धर्मशाला, बिलासपुर, पांवटा, बद्दी, शिमला, नगरोटा, सोलन, मण्डी, मेहतपुर, फतेहपुर, शिमला और सरकाघाट में संपन्न हुए। इन अधिवेशनों में प्रदेशाध्यक्ष सर्वश्री बलवीर शर्मा, अशोक पुरोहित, बलदेव राठौर, के मंगल सिंह, सुरेन्दर ठाकुर, देवराज शर्मा, राकेश शर्मा, मदन राणा तथा प्रदेश महामन्त्री सर्वश्री प्यारे लाल वैरी, कै. मगल सिंह, कुलदीप गुलेरिया, विपन डोगरा, शिवराम साख्यान, मंगतराम नेगी, यशपाल हेटा कार्य कर चुके हैं।

3. प्रभावः हिमाचल प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ के 1968 में संगठनात्मक अस्तित्व में आने से पूर्ण रूप से ट्रेड यूनियन के लगभग हर क्षेत्र में चाहे औद्योगिक मजदूर हो या सरकारी अथवा अर्द्धसरकारी क्षेत्र, वामपंथी एटक एवं सीटू का ही वर्चस्व था। सरकारी लाभ के लिए कांग्रेस समर्थित इटक अस्तित्व में थी। प्रारम्भ में सुन्दर नगर प्रोजेक्ट के बाद पीडब्ल्यूडी जिसमें जल शक्ति विभाग साथ ही था, हिम शक्ति युनियन के नाम से एक मजबूत संगठन पंजीकृत हुआ। उसके बाद मण्डी गन फैक्टरी, परिवहन निगम और पीएमबी में फिर बद्दी-नालागढ क्षेत्र में यूनियनों के पंजीकरण करवाने का कार्य आगे बढने् लगा। जिससे प्रतिद्वंद्वी संगठनों में हा-हा कार मच गया। परिणाम स्वरूप श्री प्यारे लाल वैरी जी, आशा नारायण सिहं, कै. मगल सिहं, मेला राम, कै. विजय सिंह सहित अनेक कार्यकर्ताओं पर जान लेवा हमले भी हुए। लेकिन इन हमलों से संगठन को मजबूती मिलती रही तथा कार्य विस्तार ने और गति पकड़ ली। धीरे-धीरे आई.पी.एच., एच.पी.एम.सी., बरोजा फैक्टरी, औद्योगिक क्षेत्र बद्दी-बरोटीवाला, नालागढ़ परमाणू, मेहतपुर इत्यादि में लगभग 70-80 यूनियनें अस्तित्व में आ गई। वर्ष 1981 में ग्रामीण बैंक में कर्मचारी और अधिकारियों की यूनियन के गठन में भी डी.सी. शर्मा जी का अभूतपूर्व योगदान रहा। इसी दौरान पर्यटन निगम, वन निगम, सिविल सप्लाई, आंगनबाड़ी,

निर्माण कारागार, डाकघर बचत एजेंट, बाल सेविका, सिलाई तथा विद्युत परिषद के तकनीकी कर्मचारियों की यूनियन का गठन हुआ। केंद्रीय उपकरों में रक्षा विभाग, दूरसचार एवं पोस्टल सर्वे आफ इंडिया सहित छोटे-छोटे बैंकों में संगठन पंजीकृत होने लगे। वर्ष 1990 से 2012 तक सैकड़ों यूनियनों का पंजीकरण होने से क्रमांक एक पर चल रही काग्रेस समर्थित इंटक को चुनौती मिलनी प्रारम्भ हुई। परिवहन मजदूर संघ में भी अशोक पुरोहित का बतौर अध्यक्ष एवं श्री कुलदीप गुलेरिया सहकर्मी के तौर पर काफी सफल कार्यकाल रहा।

4 आपतकाल में यातनाएं:- भारतीय मजदूर सघं के प्रचारक एवं प्रान्त महामन्त्री श्री प्यारे लाल वैरी जी को शुरू में ही गिरफ्तार कर लिया तथा जेल में 8 महीनों में भी उनके ऊपर अनेक केस बनाये गए। शेष तत्कालीन पदाधिकारी 'लोकतंत्र बचाओ' के इस अभियान में अपने 'हिम मजदूर' के प्रकाशन एवं सूचनाओं के आदान प्रदान में सक्रिय रहे, लेकिन कुछ महीनों के अन्तराल में विजय सिह, आशा नारायण सिंह, श्री मुलख राज, तिलक राज एवं श्री जय कुमार सहित अनेकों कार्यकर्ता गिरफ्तार हुए। जबकि श्री बलबीर शर्मा जी को अनेक केसों में उलझा कर 'हिम मजदूर' का प्रकाशन रोक दिया। बाद में गुप्त रूप से ''चुनौती'' अखबार का प्रकाशन इनके नेतृत्व में किया गया। बाहर रह गए श्री बलबीर शर्मा सहित मण्डी की टीम इस दौरान काफी सक्रिय रही।

5 काग्रेस कार्यकाल में बड़े आन्दोलन एवं यातनायें:

1 भामंस की लाक निर्माण एवं जल शक्ति विभाग की सबसे बड़ी यूनियन ने कांग्रेस के मुख्यमंत्री श्री रामलाल ठाकुर के कार्यकाल वर्ष 1980 में पूरे प्रदेश में अनिश्चितकालीन हड़ताल कर दी, इस

आन्दोलन में चौदह दिन बाद श्री मधुकर जी के नेतृत्व में हिमाचल अराजपत्रित कर्मचारी महासंघ ने भी हड़ताल का ऐलान कर दिया। जब आन्दोलन खत्म हुआ, तो हमारे संगठन के हजारों स्थाई-अस्थाई मजदूरों को नौकरी से निष्कासित कर दिया गया। धीरे-धीरे कुछ मजदूरों को नौकरी पर वापिस लिया, लेकिन इस यूनियन के प्रदेशाध्यक्ष श्री राजेन्द्र ठाकुर, महामन्त्री श्री राज ठाकुर धीमान, भगवान दास, लाल सिंह, अमर चन्द तथा सरदार बन्धु रघुवीर एवं कश्मीर सिंह सभी पदाधिकारियों को 19 अगस्त 1980 से 14 जुलाई 1982 तक कुल 697 दिन के लम्बे निष्कासन के बाद श्री मधुकर जी की भूख हड़ताल के बाद बहाल किया गया।

2 सिविल स्पलाई निगम:- वर्ष 1989 में इस निगम के हजारों कर्मचारियों को नियमित करने को लेकर अनिश्चितकालीन हड़ताल को असफल करने पर उतारू कांग्रेस सरकार में 60 दिन बाद 28 सितम्बर 1989 को यूएस क्लब शिमला में सुरेन्द्र ठाकुर के नेतृत्व में मुख्यमन्त्री श्री वीरभद्र सिंह जी के काफिले को रोक दिया गया, जिससे इस आन्दोलन को गति मिली तथा यह आन्दोलन बाद में सफल हुआ।

3 अन्य महत्वपूर्ण आन्दोलन: 17 सितम्बर 1997 को रानी झांसी पार्क में मजदूर रैली हुई जिसमें तत्कालीन वरिष्ठ प्रचारक मा. महावीर एवं श्रीमान् आलोक कुमार जी भी उपस्थित रहे।

- **17 सितम्बर 2003 को सचिवालय पर महिला शक्ति का प्रचण्ड प्रदर्शन तत्पश्चात् महामहिम को ज्ञापन दिया गया।**
- **54 वन विभाग के कामगारों की छंटनी को बहाल कराने के लिए 16 सितम्बर 2004 को मुख्यमन्त्री की रैली का विरोध, रैली का स्थल बदलने को मजबूर किया।**
- **23 जुलाई 2005 को सब्जी मण्डी मैदान शिमला में श्री ओम प्रकाश जी की अध्यक्षता में कर्मचारियों का विरोध प्रदर्शन**
- **25 दिसम्बर 2006 को धर्मशाला में मुख्य मंन्त्री एवं मंत्रियों के बाद नई विधान सभा परिसर का घेराव।**
- **जुलाई 2004 कोल डैम परियोजना में प्रदर्शन, लाठीचार्ज, देर रात तक हरनोडा के थाने का घेराव, बाद में लिखित समझौते के साथ यूनियन को मान्यता।**
- **5 अक्तूबर 2004 से डेंटल कालेज सुन्दर नगर की अनिश्चितकालीन हड़ताल।**
- **26 सितम्बर 2006 को प्रीणी विद्युत परियोजना में अनिश्चितकालीन हड़ताल। उसके बाद पूरी रात घेराव के बाद सुबह लिखित समझौता।**
- **26 जुलाई 2007 को सुपर मैक्स शोघी में गेट मीटिंग कर रहे निहत्थे मजदूरों पर गोली चलाई गई, जिसमें एक मजदूर की मौत तथा नौ घायल हो गये। बाद में मालिक द्वारा ताला बन्दी के बाद उद्योग को ऊना ले जाया गया तथा यूनियन पर उल्टा मुकद्दमा कर दिया गया जिसमें उच्च न्यायालय से राहत मिली।**

उत्पीड़न : श्री देवराज शर्मा, सत्य प्रकाश ठाकुर, एवं श्री होशियार चन्देल के बिजली वोर्ड से निलम्बन के बाद लगभग 5 साल नौकरी से निष्कासन झेलना पड़ा, जबकि 9-9 महीने सुरेन्द्र ठाकुर और गोपाल झिल्टा को निलम्बन के बाद पूरे 5 साल विभागीय जांच में उलझाया गया। श्री अशोक पुरोहित जी भी निलम्बित रहे। विपन डोगरा, यशपाल हेटा सहित सैकड़ों कार्यकर्ताओं को स्थानान्तरित किया गया। ग्रामीण बैंक से प्रदेश और देश में कार्य को खड़ा करके देशभर में मान्यता दिलाने में कामयाबी दिलाने वाले श्री डी.सी. शर्मा को जबरन सेवानिवृत करके पेंशन तथा अन्य लाभों से वंचित कर दिया। सैकडों लोगों ने अनेक यातनाएं सही हैं।

विशाल महापंचायत : कांग्रेस सरकार के अत्याचारों के विरूद्ध भामसं प्रदेश ईकाई के आह्वान पर विशाल मजदूर महापंचायत का आयोजन 17 सितम्बर 2007 को शिमला में हुआ। वहां के आईस स्केटिंग रिंक में लगभग 10 से 12 हजार मजदूरों ने पूरा शिमला जाम कराया। जिसमें तीन केन्द्र तथा दो पूर्व प्रदेशाध्यक्षों की सामूहिक बैंच की ओर से तत्कालीन राष्ट्रीय महामंत्री उदयराव पटर्वधन जी ने मजदूर विरोधी सरकार को उखाड़ फैंकने का निर्णय सुनाया तथा 2008 में कांग्रेस विरोधी सरकार बदल भी गई। इस महापंचायत को कामयाब करने में पदाधिकारियों के अतिरिक्त प्रमुख कार्यकर्ता श्री गोपाल जिल्टा, यशपाल हेटा, देवीदत तनवर, दिनेश शर्मा, अमीचन्द डोगरा, सुषमा शर्मा, नेक राम ठाकुर, बृज लखनपाल, रमेश राणा, सुनीता ठाकुर, राकेश शर्मा, मेलाराम चन्देल, राजू भारद्वाज,

गोपाल चौधरी, राजेंद्र शर्मा, शिव कुमार, नन्द लाल शर्मा, बृजलाल शर्मा, रमेश ठाकुर का विशेष सहयोग रहा।

श्रमिक समुदाय को लाभ : भामसं के एक जागरूक मजदूर हितैषी संगठन होने के नाते कामगार के हर वर्ग को लाभ दिलाने में कामयाबी हासिल की। जहां पहले मजदूरों को बिना कानून के निकालने की प्रथा थी उस पर रोक, फिर सर्वोच्च न्यायालय से 10 साल बाद नियमित होने का निर्णय, मजदूरी में बढ़ोतरी, सिविल सप्लाई निगम के सभी कर्मचारियों को नियमित करवाने, अंशकालीन कामगारों को दैनिकभोगी बनाने की पॉलिसी, लगभग 80 हजार स्कूलों में लगे गरीब बेसहारा एवं विधवा जलवाहकों तथा राजस्व एवं पंचायत चौकीदारों को पार्ट टाईम पॉलिसी के माध्यम से नियमित करने, पंचायत तकनीकी सहायकों को कमीशन से दैनिकभोगी बनाने, लगभग 600 पशुपालक सहायकों को अनुबंध पर करवाने, हजारों महिला सिलाई अध्यापिकाओं को पंचायत सचिव बनाने, इसी के साथ 38 हजार आंगनबाड़ी बहनों को पदोन्नति कोटा 90 प्रतिशत करने, आशा बहनों एवं स्कूलों में मध्याह्न भोजन बनाने वाले हजारों श्रमिकों के पारिश्रमिक को बढ़वाने में सफलता हासिल की है। ग्रामीण बैंक की सेवा शर्तों में सुधार, परिवहन निगम में सभी यूनियनों की अगुवाई करके उनकी बेहतर सेवा शर्तें बनवाई। बिजली बोर्ड, आवास बोर्ड सहित सभी बोर्डों में भी कर्मचारियों के लंबित मामलों को हल करवाया।

सरकारी कर्मचारियों के पदोन्नति कोटे में बढ़ोतरी, पदोन्नति नियमों में अनुकूल बदलाव, लाखों चतुर्थ श्रेणी एवं चालक श्रेणी के कर्मचारियों को एक विशेष वेतन वृद्धि, शेष नियमित कर्मचारियों को चिर लंबित 4-9-14 का बहुत बड़ा आर्थिक लाभ दिलवाया। औद्योगिक क्षेत्र सीमेंट उद्योग अम्बुजा दाड़लाघाट, ए.सी.सी. बरमाणा, अल्ट्राटेक बागा सहित बद्दी-बरोटीवाला नालागढ़ पांवटा में अधिकतर बड़े उद्योगों में भामसं की यूनियनें पंजीकृत एवं मान्यता प्राप्त हैं तथा पूरी ईमानदारी से अपनी-अपनी मांगों का निपटारा कर रही हैं। प्रदेश के सभी 12 जिलों में काम है। 78 खंडों में से 65 में खंड समितियां है, बैठकें निरंतर होती है।

विशेष उपलब्धि :

वर्षों से भामसं का प्रदेश कार्यालय किराए के मकान में चल रहा था लेकिन 25.6.04 में हिमलैंड शिमला में लगभग 450 वर्ग फीट का अपना कार्यालय है जिसका शुभारंभ तत्कालीन संघ के क्षेत्रीय कार्यवाह श्रीमान् रमेश प्रकाश जी ने किया था तथा बाद में क्षेत्रीय प्रचारक श्री दिनेश जी भी इस कार्यालय में बैठक लेने आये थे, मंडी में भी कार्यालय लगभग तैयार है, बद्दी में अपनी जमीन है। भारत एवं हिमाचल में कांग्रेस कार्यकाल में हुई सदस्यता सत्यापन में भामसं क्रमांक दूसरे से पहले स्थान पर आया।

विशेष उल्लेख :

मातृवन्दना पत्रिका का प्रारम्भ भी मंडी से हुआ जिसके प्रथम संपादक बलवीर शर्मा जी पूर्व प्रदेशाध्यक्ष एवं सह संपादक श्री कुलदीप ठाकुर पूर्व प्रदेश कार्यालय मंत्री रहे।◆◆◆

भारतीय विद्या के प्रसार हेतु प्रतिबद्ध विद्या भारती हिमाचल प्रदेश

देवीसिंह वर्मा, प्रांत प्रचार प्रभारी, हिमाचल शिक्षा समिति

''विद्या सा या विमुक्तये'' अर्थात् विद्या वह है जो अज्ञान अंधकार से मुक्ति प्रदान करें। भारतीय ज्ञान परंपरा में भौतिक उन्नति के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति का विशेष महत्व है। रोजगारपक भौतिकवादी शिक्षा जहां सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास के लिए उपयोगी है वहां शिक्षा के साथ व्यक्ति निर्माण करने वाली और राष्ट्रीयता की भावना को सुदृढ़ करने वाली तथा संस्कार प्रदान करने वाली शिक्षा का विशेष महत्व है। वास्तव में विद्या, व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के निर्माण का आधार है। अत: भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक परमपूजनीय माधवराव सदाशिव गोलवलकर गुरू जी के चिंतन के अनुरूप 1952 में गोरखपुर में प्रथम शिशु मंदिर की स्थापना हुई। इसके पश्चात सारे देश में भारतीय पद्धति से शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए 1977 में अखिल भारतीय शिक्षण संस्थान की स्थापना की गई। विद्या भारती द्वारा भारत वर्ष के विभिन्न प्रांतों, दुर्गम, पिछड़े क्षेत्र तथा आदिवासी क्षेत्रों में शिशुवाटिका, सरस्वती शिशु मंदिर, सरस्वती विद्या मंदिर, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च एवं वरिष्ठ विद्यालय, संस्कार केंद्र, एकल विद्यालय अर्द्ध एवं पूर्ण आवासीय विद्यालय एवं महाविद्यालय संचालित किए जा रहे हैं जिनमें निर्धारित पाठ्यक्रम के अतिरिक्त शारीरिक शिक्षा, विज्ञान एवं तकनीकी, योग, वैदिक गणित, नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा, संगीत, कला, कौशल विकास, संस्कृति बोध की शिक्षा सुयोग्य आचार्यों एवं अध्यापिकाओं द्वारा प्रदान की जाती है।

भारत जब परतन्त्र था, उस समय अंग्रेजों द्वारा मैकाले शिक्षा पद्धति भारत में काले अंग्रेज बनाने के उद्देश्य से की गई थी। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ, उसके बाद भी उस शिक्षा पद्धति में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया गया व इस देश के लिए जैसे नागरिकों का निर्माण होना चाहिए था वह नहीं हुआ। राष्ट्रीय विचारधारा को पुष्ट करने के कार्य में लगे कुछ बन्धुओं ने इस देश की नवोदित पीढी को सुयोग्य शिक्षा और शिक्षा के साथ अपनी संस्कृति एवं संस्कारों से संस्कारित करने के उद्देश्य से सरस्वती शिशु मन्दिर प्रारम्भ किए।

हिमाचल शिक्षा समिति

हिमाचल प्रदेश में विद्या भारती से सम्बद्ध हिमाचल शिक्षा समिति का कार्य 1980 में पांवटा साहिब में सरस्वती विद्या मन्दिर प्रारम्भ होने के साथ शुरू हुआ। धीरे-धीरे कार्य का विस्तार-विकास करने में स्थान-स्थान पर प्रधानाचार्य, आचार्य, प्रबन्ध समितियां समर्पण भाव से कार्य में लगी रही। हिमाचल शिक्षा समिति वर्तमान में हिमाचल प्रदेश में 192 विद्यालयों का संचालन कर रही है। जिनमें 2010 आचार्य/दीदियों के संरक्षण में 25084 छात्र-छात्राएं अध्ययनरत हैं। हिमाचल प्रदेश में ये विद्यालय ग्रामीण जनजातीय एवं दुर्गम क्षेत्रों में चल रहे हैं। शिमला जिले के डोडरा क्वार, चम्बा जिले के पांगी क्षेत्र सहित जनजातीय क्षेत्रों में 9 विद्या मन्दिर रूपी दीपक, बच्चों को संस्कार रूपी प्रकाश देने में संलग्न हैं। अच्छे परीक्षा परिणाम एवं अनुशासित तथा संस्कारप्रद शिक्षा व्यवस्था के फलस्वरूप सरस्वती विद्या मन्दिरों के नाम से चल रहे ये शिक्षा केन्द्र समाज निर्माण व राष्ट्र निर्माण के महत्वपूर्ण कार्य में

लगे हुए हैं।

विद्या भारती का लक्ष्य

इस प्रकार की राष्ट्रीय शिक्षा-प्रणाली का विकास करना है जिसके द्वारा ऐसी युवा-पीढ़ी का निर्माण हो सके जो हिन्दुत्वनिष्ठ एवं राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत हो, शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो तथा जो जीवन की वर्तमान चुनौतियों का सामना सफलता पूर्वक कर सकें और उसका जीवन ग्रामों, वनों, गिरिकन्दराओं एवं झुग्गी-झोपडियों में निवास करने वाले दीन-दु:खी अभावग्रस्त अपने बान्धवों को सामाजिक कुरीतियों, शोषण एवं अन्याय से मुक्त कराकर राष्ट्र जीवन को समरस, सुसम्पन्न एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए समर्पित हो। इस लक्ष्य की पूर्ति में समिति प्रयत्नरत है और अपने प्रयत्नों में उसे सफलता भी मिल रही है।

कार्यकर्त्ताओं का योगदान

कार्य के विस्तार, विकास व दृढ़ीकरण में जिन कार्यकर्ताओं का नाम ध्यान में अभी आता है, उनमें मा. वेदराज जी आनन्द। हिमाचल शिक्षा समिति व विद्या भारती उत्तर क्षेत्र के पूर्व संगठन मंत्री रहे। उनका छोटी-छोटी बातों पर मार्गदर्शन करने, उनके स्नेहिल व्यवहार से एक बहुत बड़ी श्रृंखला कार्यकर्त्ताओं की खड़ी हुई। श्री सुभाष चन्द्र सूद जी जो बैंक अधिकारी होने के बावजूद कई वर्षों तक समिति के महामंत्री रहे। समिति का 1983 में पंजीकरण करना, शिमला विद्यालय भूमि को पट्टे पर लेना एक बड़ी उपलब्धि उनके नाम रही। एक और बड़ा नाम स्व. श्री महावीर जी (पूर्व प्रचारक) का है। यदि मा. महावीर जी ने सरस्वती विद्या मन्दिर हिमरश्मि परिसर विकासनगर शिमला की ओर ध्यान नहीं

दिया होता तो हिमरश्मि परिसर वर्तमान स्वरूप में नही होता। हिमाचल शिक्षा समिति के अनेकों वर्षों तक अध्यक्ष रहे स्व. श्री कृष्णचन्द्र राजपूत जी के अनथक प्रवास, कंधे पर थैला लटका कर बस में प्रवास करते हुए शारीरिक परेशानी के बाद भी उनका प्रवास सभी कार्यकर्ताओं को प्रेरित कर उनका उत्साहवर्धन करता रहा। आचार्यों को सम्मानजनक मानधन मिले, इस बात की वे विशेष चिन्ता करते थे।

समिति के पूर्व महामंत्री स्व. श्री रणजीत सिंह गर्ग जी द्वारा शैक्षिक मार्गदर्शन व पितृ तुल्य व्यवहार सभी कार्यकर्ताओं के मन में छाप छोड़ गया। कांगड़ा विभाग में प्रारंभ में शिवराज सिंह जी पूर्णकालिक, श्रीमान तारा सिंह राणा जी ने बड़ी सहजता, सौम्यता व श्रद्धा भाव से कांगड़ा विभाग का कार्य संभाला। मंडी विभाग में श्रीमान हेमराज वैद्य जी ने मंडी जिला के सभी विकास खण्डों में कार्य प्रारम्भ करने के संकल्प को पूर्ण किया। करसोग क्षेत्र में स्व. श्री मेहरचन्द वर्मा जी ने कार्य को विस्तार दिया।

बिलासपुर विभाग में कार्य के विस्तार व विकास की चर्चा आते ही ध्यान में आता है- स्व. श्री चेतराम जी का नाम। माननीय चेतराम जी संघ के प्रांत कार्यवाह के साथ-साथ हिमाचल शिक्षा समिति के पालक अधिकारी थे। शिक्षा समिति की हर बैठक में माननीय चेतराम जी का उचित मार्गदर्शन मिलता था। बिलासपुर जिला विशेषकर बिलासपुर नगर का कार्य सुव्यवस्थित खड़ा होना, विद्यालयों के लिए जमीन व भवनों की व्यवस्था करना, यह माननीय चेतराम जी की व्यापक दृष्टि से ही संभव था। बिलासपुर नगर में बने विद्यालयों के भवन व हिमाचल शिक्षा समिति भंडार विभाग का भवन उन्हीं के प्रयासों से सम्भव हुआ। पूरे विभाग का कार्य जहां ठाकुर अच्छर सिंह जी ने संभाला तो उनका सहयोग स्व. श्री रामदास धीमान जी व श्री जगतपाल जी ने कंधे से कंधा मिलाकर किया। सोलन विभाग की चर्चा करेंगे तो श्रीमान चौधरी शिताब सिंह जी का नाम स्मरण में आना स्वाभाविक है। सोलन जिले के कार्य को श्रीमान् योगेश चतुर्वेदी जी द्वारा संभाला गया।

शिमला विभाग के कार्य के विस्तार विकास की बात करने पर ध्यान में आता है श्रीमान गुलाब सिंह मेहता जी व स्व. श्री वीरेन्द्र घौंक्रोक्टा जी का नाम। रोहडू, नेरवा, मड़ावग, कुमारसैन, आनी का क्षेत्र सभी स्थानों पर कार्यकर्ताओं की अच्छी टीम खड़ी हुई। धीरे-धीरे आनी क्षेत्र में श्रीमान् गुलाब सिंह मेहता जी के मार्गदर्शन में श्री रोशन लाल गोस्वामी व श्रीमान दुनीचंद ठाकुर जी कार्य के साथ समर्पण भाव से जुड़ गए। कांगड़ा में श्री संसारपाल जी बैजनाथ, श्री शान्तिस्वरूप जी प्रदेश अध्यक्ष भी रहे, श्री रामकुमार शर्मा, श्री मस्तराम भूरिया, श्री नानकचंद जी, कर्नल रूपचंद्र जी सरकाघाट, श्री आलमचंद जी, श्री रूप सिंह जी, श्री देवीरूप शर्मा जी, अर्की सोलन पूर्व में प्रदेश महामंत्री व अध्यक्ष तथा वर्तमान में समिति के संरक्षक ने कार्य को संभाला तथा विस्तार दिया। एक ओर जहाँ इन कार्यकर्ताओं के कारण संगठन का कार्य आगे बढ़ा, वहीं शैक्षिक स्तर भी विद्यालयों का अच्छा हो, इस दृष्टि से से विचार हुआ व योजना बनी। पहला हर विभाग में शिक्षक टोली विकसित की गई जिसके द्वारा समय-समय पर विद्यालयों का शैक्षिक निरीक्षण आचार्यों का मार्गदर्शन व संकुल स्तर पर विषयश: प्रशिक्षण आदि पर ध्यान दिया गया तो दूसरी ओर आचार्यों के सघन प्रशिक्षण पर जोर दिया गया। आचार्यों का प्रशिक्षण वर्ग पहले 30 दिनों का हुआ करता था बाद में कार्यकर्ताओं के अनुभव के आधार पर इसे 40 दिवसीय प्रशिक्षण किया गया। ग्रीष्मकालीन व शीतकालीन आचार्यों का प्रशिक्षण अलग अलग होने लगा। उस प्रशिक्षण वर्ग की व्यवस्था शैक्षिक व संगठनात्मक प्रशिक्षण, वहाँ के आत्मीयतापूर्ण वातावरण के कारण उसका प्रभाव आचार्य व दीदी के मन पर रहने के कारण वे विद्यालय में मिशनरी व परिश्रमी भाव से अपने परिवार का जैसा कार्य समझकर करने लगे। वर्तमान में भी आचार्य-दीदी पूर्ण ध्येयनिष्ठा से विद्यादान की साधना में रत हैं।

बाधाओं एवं चुनौतियों का सामना

विद्यालयों को बंद करने के लिए समय-समय पर कांग्रेस सरकारों के द्वारा रुकावटें डाली गई, लेकिन शिक्षा समिति के कार्यकर्ताओं के द्वारा न्यायालय का दरवाजा खटखटाया गया और हर निर्णय हमारे पक्ष में ही आया। जमीन की रजिस्ट्री संबंधी निर्णय में तो हिमाचल शिक्षा समिति को तो प्रदेश के माननीय उच्च न्यायालय द्वारा ''कृषक'' होने का ही प्रमाण पत्र मिल गया ताकि जमीन की रजिस्ट्री करने में कोई परेशानी न हो। इस प्रकार माँ सरस्वती की असीम कृपा कार्यकर्ताओं का आपसी विश्वास, आत्मविश्वास, समर्पण, मिशनरी भाव, कार्य के प्रति लगन, पारिवारिक भाव, आत्मीयतापूर्ण व्यवहार के कारण पूरे प्रांत में एक अच्छा कार्य खड़ा हो सका।

शिक्षा में योगदान

स्वाधीनता पूर्व से संपूर्ण देश में राष्ट्रीय शिक्षा स्थापना के जो प्रयास चल रहे थे, विद्या भारती ने उस ज्योति को बुझने नहीं दिया। स्व की शिक्षा और स्व के तंत्र से ही देश समृद्ध व सुसंस्कृत बनेगा। यह विचार देशवासियों के मानस में बिठाकर उन्हें पश्चिम का अंधानुकरण करने तथा अपनी आत्म विस्मृति को हटाते हुए स्वाभिमान जगाने की प्रेरणा देने का सफल कार्य किया है।

इसी प्रकार प्राथमिक शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी नहीं, मातृभाषा होना चाहिए इसकी चर्चा देश भर में चलाते हुए मातृ भाषा के महत्व को बढ़ाया है। देश में समय-समय पर बनी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा को राष्ट्र की जड़ों से जोडने की संस्तुतियां देकर भारतीय सरकार को शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन के लिए दिशा प्रदान की है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020में विद्या भारती की अनेक संस्तुतियों को स्थान मिला है। इस प्रकार विद्या भारती देश में भारतीय शिक्षा की पुनर्प्रतिष्ठा हेतु कार्य करने में अग्रसर रही है। विद्या भारती की मान्यता है कि भारतीय शिक्षा की पुनर्प्रतिष्ठा से भारत आत्मनिर्भर तो होगा ही अपने ज्ञान की विरासत के बल पर पुन: एक बार विश्व गुरू बनेगा।

छात्र विकास हेतु संचालित कार्यक्रम

सरस्वती विद्यामन्दिरों में छात्रों के विकास हेतु अनेकों प्रकार के कार्यक्रम किये जाते हैं। जैसे:-

1. व्यक्तित्व विकास शिविरों का आयोजन।
2. घोष संगीत, जूडो तथा लक्ष्यभेद आदि विषयों का प्रशिक्षण।
3. प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन।
4. विद्यालय स्तर से लेकर अखिल भारतीय स्तर तक खेलकूद समारोह का आयोजन।
5. विज्ञान मेला, वैदिक गणित, विज्ञान प्रश्नमंच तथा संस्कृति प्रश्नमंच का आयोजन।
6. संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन।

विद्यालय स्तर पर होने वाले 7 अनिवार्य कार्यक्रम

छात्रों के विकास हेतु विद्यालय स्तर पर भी अनेकों कार्यक्रम आयोजित होते हैं जिनमें से 7 अनिवार्य कार्यक्रम प्रत्येक विद्यामन्दिर में आवश्यक हैं यथा:

1. वार्षिक उत्सव
2. अभिभावक सम्मेलन, मातृ सम्मेलन
3. अभिभावक सम्पर्क
4. भारत माता पूजन कार्यक्रम (15 अगस्त व 26 जनवरी)
5. पूर्वोत्तर क्षेत्र में शिक्षा प्रसार हेतु बसन्त पंचमी, वर्ष प्रतिपदा को समर्पण दिवस।
6. खेल दिवस
7. पथ संचलन/शारीरिक प्रदर्शन के कार्यक्रम।

पांच आधारभूत विषयों का प्रशिक्षण

बालक शारीरिक दृष्टि से सबल, प्राणिक दृष्टि से सन्तुलित, मानसिक दृष्टि से सदाचारी, बौद्धिक दृष्टि से सत्यान्वेषी एवं आध्यात्मिक दृष्टि से समाजसेवी बनें इस हतु पांच आधारभूत विषयों का शिक्षण प्रत्येक बालक को कराया जाता है:

1.शारीरिक, 2.संगीत, 3. योग, 4.संस्कृत, 5.नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा

बालक सद् व्यवहारी हो इस हेतु बालक को घर में करने हेतु 10 बिन्दुओं का आग्रह होता है:

1. प्रात: उठकर प्रात: स्मरण बोलना।
2. माता-पिता व बड़ों को प्रणाम करना।
3. प्रतिदिन आसन तथा सूर्य नमस्कार करना।
4. भोजन करने से पूर्व भोजन मंत्र बोलना तथा थाली में जूठन न छोडना।
5. स्वाध्याय करना।
6. स्नान तथा ईश वन्दना करना।
7. घर में अच्छे देशभक्ति एवं ईश्वर भक्ति गीत सुनना और गाना।
8. स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करना।
9. जन्मदिन भारतीय पद्धति से मनाना।
10. कोई सृजनात्मक कार्य करना।

विद्यालय में अभिनव पंचपदी शिक्षण पद्धति द्वारा शिक्षण

आज की शिक्षण पद्धति का आधार पश्चिमी देशों में विकसित विशुद्ध भौतिकवादी दृष्टिकोण पर आधारित है, जबकि हिन्दू जीवन दर्शन पर आधारित शिक्षा दर्शन के अनुसार बालक के सर्वांगीण विकास की अवधारणा विशुद्ध आध्यात्मिक है। विद्या भारती ने पंचपदीय शिक्षण पद्धति को विकसित किया है।

सामाजिक सेवा के विविध आयाम

देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें यह संस्कार विद्या भारती के विद्यालयों में विद्यार्थियों को शिशु काल से ही दिये

जाने की परम्परा रही है। बाढ़, तूफान, दैवीय आपदा आदि संकट के समय में भी विद्या भारती द्वारा संचालित सरस्वती विद्या मंदिरों ने मानव सेवा में भी अग्रणी भूमिका निभाई है। कोरोना काल में विद्या भारती जरूरतमंदों को हर संभव सहायता पहुंचा कर संकटमोचक के रूप में सामने आई।

विद्या भारती ने विद्यालय परिवार अपने कार्यकर्ताओं और पूर्व छात्रों आदि के सहयोग से प्रदेश में 3251 अनाज के पैकेट, 12983 लोगों को मास्क 4620 सैनिटाइजर 746 पशुओं को आहार आदि का वितरण किया। 733 ग्रामों में कोरोना से बचाव के संबंध में जन जागरण अभियान चलाया गया। प्रांत से प्रधानमंत्री राहत कोष में लगभग 7 लाख रुपए की धनराशि भेजी गई। इस प्रकार विद्या भारती के माध्यम से प्रदेश में राष्ट्रीयता एवं संस्कारों से पूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए सभी नगरों, गांवों तथा दुर्गम एवं जनजातीय क्षेत्रों में भी सरस्वती विद्या मंदिर संचालित किए जा रहे हैं। जिनमें हिमाचल प्रदेश शिक्षा समिति के मार्गदर्शन में सुयोग्य एवं अनुभवी आचार्यों तथा दीदियों द्वारा शिक्षा प्रदान की जा रही है। इन विद्यालयों से पढ़ाई करके निकलने वाले विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों में समर्पण भाव से अपनी सेवाएं प्रदान करते हुए समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में अपना अमूल्य योगदान प्रदान कर रहे हैं। विद्या भारती हिमाचल प्रदेश द्वारा वर्तमान में प्रदेश के समस्त जिलों में 2 शिशुवाटिका, 59 प्राथमिक, 76 माध्यमिक, 40 पूर्व माध्यमिक, 15 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय संचालित किए गए हैं जिनमें 1530 दीदी, 480 आचार्य अध्यापन कार्य कर रहे हैं। इन विद्यालयों में हिन्दू, ईसाई, मुस्लिम विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। विद्यालयों के विद्यार्थी, सीबीएसई तथा हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं में प्रदेश स्तर पर मैरिट में स्थान प्राप्त करके अपने विद्यालयों को गौरवान्वित कर रहे हैं।◆◆◆

विद्या भारती द्वारा संचालित विद्यालयों की उपलब्धियां:

- हिमाचल प्रशासनिक सेवा (एचएएस) में 8 पूर्व छात्र।
- प्रतिवर्ष बोर्ड मैरिट सूची में स्थान। हि.प्र. स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मार्च 2024 में ली गई 10वीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा में सरस्वती विद्या मन्दिर हटगढ़ जिला मण्डी की अक्षरा गुप्ता एवं प्रकृति ने (690/700 अंक) प्रदेश मैरिट सूची में 10वां स्थान प्राप्त किया।
- वर्ष 2024 में सरस्वती विद्या मन्दिरों के 22 पूर्व छात्रों का चयन एमबीबीएस में हुआ।
- सरस्वती विद्या मन्दिर कटौहड़ खुर्द, जिला ऊना के पूर्व छात्र श्री निषाद कुमार ने पेरिस पैरालंपिक में ऊंची कूद में रजत पदक प्राप्त किया। श्री निषाद कुमार जी को महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा अर्जुन पुरस्कार से अलंकृत किया जा चुका है।
- विद्या भारती की अ. भा. कार्यकारिणी समिति बैठक का 19 से 22 सितम्बर 2024 तक हिम रश्मि परिसर शिमला में सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।
- अखिल भारतीय स्तर पर इस वर्ष विभिन्न खेलों में 83 खिलाड़ी भैया-बहिनों ने भाग लिया। एथलेटिक में 1 स्वर्ण व कबड्डी में 1 रजत, एथलेटिक में 1 कांस्य पदक प्राप्त हुआ। एसजीएफआई के लिए समोली रोहडू की 2 बहिनों समोली रोहडू की 2 बहिनों का विद्या भारती की अन्डर 17 कबड्डी में चयन हुआ।
- अ.भा. विज्ञान मेले में 6 भैया-बहिनों ने जयपुर में भाग लिया। स.वि.म. कुमारसैन की छात्रा खुश्बू और स.वि.म. बड़ागांव के छात्र पुष्कर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
- अ.भा. संस्कृति महोत्सव में 5 भैया-बहिनों ने उज्जैन में भाग लिया। कथा कथन व प्रश्नमंच में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया।

शताब्दी वर्ष कार्ययोजना :

- पंच परिवर्तन/पंच कर्तव्य बोध (पर्यावरण, कुटुम्ब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण, स्व का बोध तथा नागरिक कर्तव्य) को छात्रों, आचार्यों, प्रबन्ध समितियों, अभिभावकों, पूर्व छात्रों, पूर्व आचार्यों व ग्राम समितियों के माध्यम से 1639 पोषक ग्रामों तक लेकर जाना व क्रियान्वयन करना।
- सभी जिला केन्द्रों में विद्यालय स्थापित करना। सभी विद्यालयों को सशक्त व सुदृढ़ करते हुए विद्या के प्रचार-प्रसार को गतिशील करना।

राष्ट्र सेविका समिति विश्व का सबसे बड़ा महिलाओं में काम करने वाला स्वयंसेवी संगठन है जो भारतीय मूल्यों को आधार बनाकर राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत संगठित समाज की रचना करने की दिशा में अग्रसर है। आपसी स्नेह और सहयोग से समाज की उन्नति में भागीदार बनना, मातृशक्ति को स्वावलंबी और निडर बनाना ताकि भावी पीढ़ी में इन दोनों का संचार हो सके। व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण – यही है राष्ट्र सेविका समिति का कार्य।

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था ऊँची उड़ान भरने के लिए पक्षी के दोनों पर समान रूप से सशक्त होना अत्यंत आवश्यक है। इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर एवं हिंदुत्व से प्राप्त एकात्म, समग्र और वैश्विक तत्वचिंतन को आधार बनाकर वंदनीया लक्ष्मीबाई केलकर ने राष्ट्र सेविका समिति को प्रारंभ किया।

भारतीय संस्कृति और सामाजिक परिवेश को केंद्र में रखते हुए वंदनीया लक्ष्मीबाई केलकर ने महिलाओं के जिस संगठन की नींव वर्ष 1936 के विजया दशमी के दिन रखी थी आज उस संगठन 'राष्ट्र सेविका समिति' द्वारा महिलाओं के नैसर्गिक गुणों का संवर्धन और उन्हें शक्ति को अपार पुंज के रूप में स्थापित करने का पावन कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न किया जा रहा है।

वंदनीया प्रमुख संचालिका का दृढ़ विचार था कि देश के जनसंख्या का आधा हिस्सा अर्थात् महिलाएं जब तक राष्ट्र एवं समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को वहन करने के लिए सक्षम नहीं बनती तब तक यह राष्ट्र परम वैभव को प्राप्त नहीं कर सकता।

संगठन का ध्येय तेजस्वी हिंदू राष्ट्र का पुनर्निर्माण करना और उसकी पूर्ति का आधार दृढ़ धैर्य, बेजोड़ क्षमता, प्रखर व्यक्तित्व और अटूट एकता के साथ साथ मृदु ममता का आदर्श अपने अंतर्मन में संजोकर रखने वाली नारी शक्ति है।

वंदनीय लक्ष्मीबाई केलकर आद्य प्रमुख संचालिका जी का कहना था कि गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है स्त्री में मैं सप्तशक्ति के रूप में विद्यमान हूँ। यह सप्तशती है कीर्ति, श्री, वाकपटुता, स्मृति, मेधाशक्ति, धृति और क्षमा। वंदनीया मौसी जी का कहना था हम कौन होते हैं महिला को सशक्तिकरण करने वाले वह तो खुद ही शक्ति स्वरूपा है। हमें तो केवल उसकी शक्ति का जागरण करना है ताकि उसकी शक्ति, बुद्धि, क्षमता का उपयोग राष्ट्र हित में किया जा सके इसलिए राष्ट्र सेविका समिति का जन्म हुआ।

- राष्ट्रीय सेविका समिति की स्थापना 25 अक्टूबर 1936 को विजयदशमी के दिन महाराष्ट्र के वर्धा नामक स्थान में वंदनीय लक्ष्मीबाई केलकर जी के द्वारा हुई।
- समिति का मिशन / ध्येय तेजस्वी हिंदू राष्ट्र का पुनर्निर्माण करना है।
- समिति का उद्देश्य बहनों को स्वसंरक्षण क्षम बनाना, स्वशील, स्वकुल, स्वराष्ट्र, स्व संस्कृति, स्वाभिमान, स्वावलंबन, स्वदेशी इन सभी स्व की रक्षा करने की क्षमता पैदा करना।
- समिति की दृष्टि / विजन विश्वकल्याण की है। सर्वे भवंतु सुखिनः, कृण्वंतो विश्वमार्यम् की।
- आद्य प्रमुख संचालिका वंदनीया लक्ष्मीबाई केलकर उपाख्य वंदनीया मौसी जी
- द्वितीय प्रमुख संचालिका वंदनीय सरस्वती ताई आप्टे जी यानी वंदनीया ताई जी।
- समिति का तात्विक अधिष्ठान जिस पर संगठन का ढांचा खड़ा है जिस तत्व को हम मानते हैं जिसकी अनुपस्थिति में यह संगठन संगठन नहीं अपितु भीड़ बन जाती है वह है हिंदुत्व।
- हमारी जीवन पद्धति राष्ट्रीयत्व पर आधारित है जो हिंदुत्व के ही अंतर्गत आती है।
- हिंदुत्व कोई पूजा पद्धति नहीं यह एक जीवन पद्धति है जिस आधार पर हम जीवन जीते हैं। यह भारतीयों की या हिंदुओं की प्राणशक्ति है। हमारे संस्कार जीवन मूल्य हमारे जीवन जीने के तरीके हिंदुत्व पर आधारित ही हैं।
- समिति की कार्य पद्धति पारिवारिक कार्य पद्धति है जिसमें कुछ भी निर्णय लेना हो परिवार की तरह मिल बैठकर आपस में चर्चा करके जो भी आपसी बातचीत से निर्णय होता है वह

सबकी सहमति से मुखिया के द्वारा उनके मुख मंडल से सभी के बीच जाता है, निर्णय सभी का सांझा होता है जैसे परिवार में होता है।

- समिति में कहते हैं स्त्री में मुख्यत: तीन गुण होने चाहिए मातृत्व, नेतृत्व और कर्तृत्व।
- समिति के चिंतन का वैचारिक विषय है स्त्री राष्ट्र की आधार शक्ति है।
- हमारे ध्येय यानी तेजस्वी हिंदू राष्ट्र के पुनर्निर्माण की प्राप्ति का माध्यम है शाखा। शाखा यानी निश्चित स्थान पर नियमित रूप से 1 घंटे के लिए एकत्रित होना और तय कार्यक्रमों के द्वारा शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा का विकास करना। यह समन्वित विकास राष्ट्र सेवा के लिए ही है, ऐसा सहज संकल्प करने का स्थान है समिति की शाखा।
- शाखा में जिन-जिन गुणों का विकास होता है वह है शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक।
- समिति ने अपना गुरु किसी व्यक्ति विशेष को न बनाकर तत्व को माना है। वह तत्व है भगवा ध्वज। भगवा ध्वज शौर्य बलिदान त्याग वैराग्य का प्रतीक है।
- समिति के 5 उत्सव है - नव वर्ष प्रतिपदा, श्री गुरु दक्षिणा, रक्षाबंधन, विजयादशमी और मकर संक्रांति।
- समिति के तीन पुण्य स्मरण दिवस

राष्ट्र सेविका समिति का परिचय हिमाचल प्रांत में 1957 में माननीय लीला टंडन जी एवं शैलजा जी के माध्यम से हुआ। शैलजा जी ने समिति की प्रथम प्रचारिका माननीया सिंधु ताई फाटक जी के सानिध्य में समिति कार्य दिल्ली में आरंभ किया था और फिर हिमाचल में आकर समिति कार्य का शुभारंभ किया।

मूल रूप से समिति का कार्य रेखा राजे जी क्षेत्र प्रचारिका जी के माध्यम से हिमाचल में गति में आया।

जीवन बत्रा जी बिलासपुर से राष्ट्र सेविका समिति की पहली कार्यवाहिका बनी। 1993 में प्रांत प्रचारक महावीर जी के संपर्क में आई राजकुमारी सूद जी ने 15 दिन का प्रशिक्षण वर्ग पठानकोट में किया तथा 1994 से राजकुमारी जी ने कार्यवाहिका के नाते कार्य आरंभ किया।

चंडीगढ़ में 1993 में एक वर्ग लगा जिसमें सिरमौर के राजगढ़, सोलन और शिमला से कुल 21 सेविकाओं ने भागीदारी की। तत्पश्चात् हिमाचल में कार्य निरंतर बढ़ता ही गया। 2013 में कमलेश जी जो मूल रूप से करसोग से हैं उन्होंने कार्यवाहिका का दायित्व निर्वहन किया तथा पश्चात् 2016 से माननीय मुक्ता जी ने कार्यवाहिका के नाते दायित्व निर्वहन आरंभ किया।

प्रशिक्षण वर्ग 1993 चंडीगढ़ के वर्ग से प्रशिक्षित आई कुछ सेविकाओं ने हिमाचल में भी संघ बधुओं के सहयोग से वर्ग आरंभ किए।

हिमाचल का अपना पहला वर्ग 1997 में हिम रश्मि विकास नगर शिमला में हुआ फिर 1998 में हुआ। तत्पश्चात 2000 में राजकीय कन्या महाविद्यालय लक्कड़ बाजार में हुआ, उसके उपरांत निरंतर प्रतिवर्ष यह प्रशिक्षण वर्ग हिमाचल में अन्य अन्य स्थानों पर लगाये जा रहे हैं। 2011 से निरंतर समिति शिक्षा वर्ग लग

रहे हैं। हिमाचल में विशेष अनुमति से उत्तर क्षेत्र के लगने वाले प्रबोध वर्ग अर्थात द्वितीय वर्ष भी लगे हैं जो कि पांवटा साहिब, ऊना के गगरेट, शिमला और हमीरपुर में लगे।

शाखा : राष्ट्र सेविका समिति की शाखाएं प्रारंभ में मंडी कांगड़ा, बिलासुर, शिमला और राजगढ़ से बढ़ते बढ़ते आज पूरे हिमाचल में लग रही हैं। 1994-95 में केवल राजगढ़ खंड में ही 19 समिति की शाखाएं चलती थी। आज हिमाचल के 20 जिले शाखा कार्य युक्त हैं 6 जिलों में जहां पर शाखा नहीं है वहां पर मिलन कार्यक्रम चलते हैं। आज अपने प्रांत में 62 शाखाएं जिनमें ज्यादातर साप्ताहिक शाखाएं चल रही हैं। इसके अतिरिक्त पाक्षिक मिलन पांच और मासिक 29 मिलन चल रहे हैं।

सेवा कार्य :-

हिमाचल प्रांत में 16 जिला सेवा कार्य युक्त हैं जिनमें

- स्वास्थ्य की दृष्टि से दो स्थानों पर योग केंद्र चल रहे हैं।
- बहनों को स्वावलंबी बनाने हेतु स्वावलंबन केंद्र 3 जो सिलाई केंद्र हैं।
- बहनों के अध्यात्म में अधिक रुचि होने के कारण धार्मिक विभाग द्वारा चलाए जाने वाले 18 धार्मिक भजन।
- गौ सेवा 2 गौशाला में जाकर समिति की सेविकाओं द्वारा गौशाला की सफाई करना एक उपक्रम की तरह चलाया जाता है।
- पर्यावरण संरक्षण एक उपक्रम की भांति तीन स्थानों पर चल रहा है।
- बेटियों को हाइजीन के प्रति अवेयर करने के कार्यक्रम समिति की सेविकाओं द्वारा निरंतर चार स्थानों पर चलाए जा रहे हैं।
- स्रोत पठन 4 स्थान पर चल रहा है।
- तीन स्थानों पर समिति की सेविकाएं ऐसे सेवा बस्ती वाले क्षेत्र के बच्चों को निशुल्क शिक्षा प्रदान कर रही हैं।
- संस्कार केंद्र 3 चल रहे हैं।
- दो स्थानों पर हवन कार्यक्रम चल रहे हैं।
- निरंतर दो मंदिर परिसर की सफाई
- दैनिक 100 बहनों के समूह द्वारा हनुमान चालीसा पठन
- धार्मिक मासिक मिलन नौ चल रहें हैं।

मुख्य कार्यक्रम : 2005 में नागपुर में महिला सम्मेलन हुआ जिसमें बहनों की 45 की संख्या हिमाचल प्रान्त से गई और वहीं से बहनों को और ज्यादा कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। 2008 - शिमला में हिमाचल में अपना महिला सम्मेलन हुआ जिसमें उसे समय की अखिल भारतीय प्रमुख कार्यवाहिका माननीय प्रोमिल ताई जी का सानिध्य प्राप्त हुआ। इस सम्मेलन में 500 की संख्या थी। नवंबर 2014 में वंदनीया प्रमुख संचालिका जी माननीया शांता अक्का जी के सानिध्य में तीन स्थानों में सोलन शिमला एवं बिलासपुर में बड़ी महिला संगोष्ठीयां जिसमें ढाई सौ से 300 बहनों ने भाग लिया एवं देश भक्ति के विचारों से लाभान्वित हुई।

राष्ट्र सेविका समिति जन जागरण के अनेकों कार्य करती रहती है। राम मंदिर के लिए लोगों का जागरण, बांग्लादेश और पश्चिम बंगाल की समस्याओं को लेकर तथा अन्य कई सामाजिक विषयों को लेकर ज्ञापन देना राष्ट्र सेविका समिति प्रचार, धार्मिक जागरण, तरुणी विभाग के माध्यम से भी समाज को जगाने का कार्य करती रहती है।◆◆◆

भारतीय किसान संघ - हिमाचल प्रदेश

स्थापना, संघर्ष और उपलब्धियों की गौरव गाथा

श्री हरिराम - प्रांत संगठन मंत्री

भारतीय किसान संघ की स्थापना 4 मार्च 1979 को राजस्थान के कोटा में हुई।

हिमाचल प्रदेश में भारतीय किसान संघ का कार्य वर्ष 1980 में शुरू हुआ जिसमें सबसे पहले मास्टर थोना राम जी ग्राम मानपुरा तहसील नालागढ़ को हिमाचल प्रदेश के पहले प्रदेश संयोजक के नाते जिम्मेदारी सौंपी गई। वर्ष 1983 में हिमाचल प्रदेश की प्रथम संस्थापक समिति की कार्यकारिणी का गठन निम्नलिखित अनुसार से किया गया।

मार्गदर्शक: श्री रामेश्वर सिंह कटोच इंदौरा कांगड़ा
अध्यक्ष : श्री लालचंद ठाकुर घुड़दौड़ कुल्लू
उपाध्यक्ष : श्री श्रवण सिंह संडयार छत बिलासपुर
उपाध्यक्ष : श्री भूपेंद्र सिंह चौहान कसोल बिलासपुर
उपाध्यक्ष : श्री कैप्टन बलवंत सिंह सलौनी हमीरपुर
महामंत्री : श्री शिवपाल सिंह सिपहिया घनेटा कांगड़ा
कोषाध्यक्ष : श्री देवकी नंदन मंडी नगर
संगठन मंत्री : श्री योगेंद्र प्रताप सिंह गुप्त गंगा कांगड़ा
प्रचार सचिव : श्री अश्वनी गुलेरिया श्यामनगर धर्मशाला
सदस्य : श्री केदार नाथ बस्सी नगरोटा बगवां कांगड़ा
सदस्य : श्री चेतराम रौड़ा सैक्टर बिलासपुर

हिमाचल प्रदेश से प्रथम राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य रहे श्री लालचंद ठाकुर, शिवपाल सिंह सिपहिया और योगेंद्र प्रताप सिंह।

कार्य विस्तार वर्ष 1994 तक - नूरपुर, कांगड़ा, पालमपुर व कुल्लू, जिला मंडी, बिलासपुर, ऊना, हमीरपुर, सोलन, सिरमौर जिलों तक हो गया था। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक वर्ष 1992 में घुड़दौड़, ज़िला कुल्लू में सम्पन्न हुई। अखिल भारतीय प्रबंध समिति की बैठक वर्ष 2014 में डेरा बाबा रुद्रानंद, ज़िला ऊना में सम्पन्न हुई।

संगठन के कार्य एवं कार्यक्रम:

संगठनात्मक कार्य - कृषि के कार्य से जुड़े 18 वर्ष से ऊपर के सभी महिला पुरुषों को सदस्य बनाकर ग्राम समिति व विकास खंड और प्रदेश स्तर व अखिल भारतीय स्तर तक संगठन का विधिवत गठन।

- गांव भारत की धुरी है भारतीय किसान संघ ने संगठन की प्रथम व महत्वपूर्ण इकाई ग्राम समिति को माना है किसानों को उनके आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक प्रगति व जाति पाति और राजनीति का भेदभाव मिटाकर उन्हें अपने समान हितों की रक्षा के लिए संगठित करना।
- मासिक बैठकें, अभ्यास वर्ग, अधिवेशन, किसान सम्मेलन, कार्यशाला आदि के द्वारा कार्यकर्ता तैयार करना।
- कृषि तंत्र ज्ञान में नई खोजों के कारण होने वाले परिवर्तनों की, सुधारों की समय-समय पर जानकारी देकर किसानों को उन्हें स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- किसानों को कृषि क्षेत्र में आने वाली कठिनाइयों और उनकी समस्याओं पर चर्चा,संगोष्ठी आयोजित करना तथा इस सिलसिले में विविध अभ्यास गुटों का निर्माण करना, किसानों की अभ्यास यात्राएं उनके उत्पादों के प्रदर्शन आयोजित करना व आयोजनों के लिए प्रोत्साहन देना और मदद करना।
- भारतीय गौवंश की विविध प्रजातियों का रक्षण और संवर्धन करना और उसी प्रकार कृषि कार्य में सहायभूत होने वाले अन्य जीवों का भी रक्षण और संवर्धन करना।

भारतीय किसान संघ किसान से सम्बंधित चार प्रमुख उत्सव

स्थापना दिवस: 04 मार्च को प्रतिवर्ष भगवान बलराम जयंती
(किसान दिवस) भाद्रपद मास शुक्ल षष्ठी तिथि
गौमाता पूजन (गोपाष्टमी) कार्तिक मास शुक्ल अष्टमी तिथि
भारत माता पूजन 26 जनवरी प्रति वर्ष

आज तक की प्रमुख उपलब्धियां:

1. राष्ट्रीय स्तर पर कृषि ऋण दर को 7 प्रतिशत तक घटवाया।
2. किसान क्रेडिट कार्ड जारी करवाया।
3. फसल बीमा योजना शुरू करवाई। फसल बीमा योजना को सरलीकरण व ऐच्छिक करवाया अन्यथा बैंक और कंपनियां

अपने स्तर पर पैसा काट रहे थे।

4. बिरोजा और खैर की लकड़ी को प्रदेश से बाहर ले जाने पर लगे प्रतिबन्ध को हटवाना।
5. तहजमीन मालिकाना, खुदराओं दरख्तान अधिकार दिलाना।
6. दोहा और कान-कुन में विश्व व्यापार संगठन की किसान विरोधी नीतियों के विरोध में केन्द्र सरकार को भारत का पक्ष कठोरता से रखने को मजबूर करना तथा भारतीय किसान संघ को उत्पादन चालू रखने के लिए डबल्यू0 टी0 ओ0 की बैठक में भारत को सफलता दिलवाना।
7. विश्व व्यापार संगठन (W.T.O.) की आर्थिक गुलामी की नीतियों के विरुद्ध दिल्ली में विशाल प्रदर्शन किए गए, जिनसे (W.T.O.) में कृषि यह विषय आज तक शामिल नहीं हो सका जिससे किसानों को होने वाले भारी नुक्सान को बचाने में सफलता मिली।
8. विशेष आर्थिक क्षेत्र के लिए भूमि अधिग्रहण के विरोध में देशव्यापी आन्दोलन चलाया गया, फलस्वरुप सरकार को अपने कदम पीछे खींचने पर मजबूर किया।
9. प्रदेश स्तर पर ज़िला ऊना के गगरेट तथा सोलन के वाकनाघाट में सेज के लिए भूमि अधिग्रहण के विरोध में भारतीय किसान संघ (हि0प्र0) द्वारा संघर्ष किया गया, फलस्वरुप इस सेज़ को सरकार द्वारा ठन्डे बस्ते में डाल दिया गया।
10. **स्की विलेज प्रोजेक्ट :**-कुल्लू ज़िला के मनाली इलाका में विदेशी कम्पनी फोर्ड द्वारा स्की विलेज प्रोजेक्ट को बनाए जाने का विरोध भारतीय किसान संघ (हि0प्र0) द्वारा संघर्ष किया गया, फलस्वरुप यह स्की विलेज प्रोजेक्ट सिरे नहीं चढ़ सका तथा किसानों की भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया को

रोका जा सका। इससे देश के संवेदनशील क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था को भी बिगडने से रोकने में सहायता मिली।

11. अवैध खनन:- भारतीय किसान संघ के अवैध खनन के विरोध में प्रदर्शन, बैठकों आदि के परिणाम स्वरुप हिमाचल प्रदेश सरकार अवैध खनन को कानूनन रोकने के लिए सोचने पर मजबूर हुई है तथा भारतीय किसान संघ कांगड़ा ज़िला की खन्नी ग्राम समिति द्वारा वहां के अवैध खनन के विरोध में प्रदर्शन किए। मामला उच्च न्यायालय तक ले जाया गया फलस्वरुप सरकार को अवैध खनन के ऊपर पूरे प्रदेश में रोक लगानी पड़ी। वर्ष 2020 में शीतकालीन सत्र के दौरान धर्मशाला में अवैध खनन और नशा तस्करी के विरुद्ध विधान सभा का घेराव किया गया परिणाम स्वरुप मुख्यमन्त्री ने सहानुभूतिपूर्वक बात सुनी।

12. पौंग बाँध विस्थापित:-भारतीय किसान संघ ने पौंग बाँध विस्थापित के साथ हो रहे अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया, फलस्वरुप सरकार को पुनर्वास समिति का गठन करना पड़ा। विरोध के परिणाम स्वरूप हिमाचल तथा राजस्थान के भूमाफियों को जेलों की हवा खानी पड़ी। मामला उच्च न्यायालय में लम्बित है।

13. बर्ड सेंक्चूरि :-भारतीय किसान संघ ने पौंग बाँध में बनने वाली वर्ड सैन्चुरी के विरुद्ध आवाज़ उठाई, आन्दोलन, प्रदर्शन व राष्ट्रपति महोदय को ज्ञापन दिए। परिणाम स्वरूप सरकार द्वारा यह ठन्डे बस्ते में डाल दिया गया। भारतीय किसान संघ हि0 प्र0 द्वारा समय-समय पर ज़िला व प्रदेश स्तर पर प्रदर्शन करके राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार का ध्यान किसानों की विभिन्न समस्याओं की ओर आकर्षित किया गया है।

14. बेसहारा पशुओं से किसान को निजात दिलाने के लिए प्रदेश के दस जिलों में 18 गऊ अभ्यारण (सैंक्चूरि) का प्रावधान सरकार से करवाया था जिसमें से 6 जिलों में 10 गऊ अभ्यारण (सैंक्चूरि) का कार्य पूर्ण हो चुका है। शेष 4 जिलों में भूमि के चयन की प्रक्रिया का कार्य शेष है।

15. धान,गेंहू और मक्की की खरीद के लिए कागड़ा, ऊना, सोलन और सिरमौर में अनाज मंडियां खुलवायी और मंडियों का सुविधा के साथ विस्तार करवाया।

16. देसी साहिवाल, गीर गौवंश सम्बर्धन के लिए सभी पशु केन्द्रों पर वीर्य उपलब्धता सुनिश्चिता के साथ लागू करवायी गयी। मादा गाय (मादा बच्छी) पैदा करने के लिए सेक्सड सीमन (sexed siemens) कम कीमत पर उपलब्ध करवाया।

17. ज़िला ऊना, कांगड़ा और सिरमौर में किसानों द्वारा गेंहू के बीज का उत्पादन करके उस बीज को कृषि विभाग द्वारा उपयुक्त मूल्य पर किसानों से खरीद किया गया।

18. सेव के बागवानों की लम्बे समय से चली आ रही यूनिवर्सल कार्टन की मांग लागू करवायी।

19. पॉपुलर, बांस, सफेदा और जंगली तुन्नी के साथ 23 वृक्ष प्रजातियों को खेती की श्रेणी में सम्मलित करवाया।

20. जंगली जानवरों व बेसहारा पशुओं से खेती को बचने के लिए कांटेदार तार, जलीदार तार, सोलर फैंसिंग पर 80 प्रतिशत अनुदान दिलवाया।

21. हिमाचल प्रदेश में गौ आयोग का गठन करवाया।

भारतीय किसान संघ की राष्ट्रीय एवं प्रदेश स्तर पर मुख्य कार्यावली (एजेण्डा)

1. राष्ट्रीय कृषि नीति घोषित हो।
2. केन्द्रीय बज़ट का केन्द्र बिन्दु गाँव और कृषि हो।
3. धरती पुत्र किसान भूमि का स्वामी बने।
4. कृषि न्यायालय स्थापित हों।
5. दोहरी मूल्य नीति स्थापित हो।
6. कृषि में उपयोग होने वाली सभी वस्तुएं पेट्रोलियम पदार्थ तथा रासायनिक उर्वरक,दवाईयां आदि विश्व बाज़ार भाव पर उपलब्ध करवाई जाएँ।
7. कृषि उपज का मूल्य निर्धारण आधार स्वर्ण मुद्रामानक माना जाए (लाभकारी मूल्य)।
8. सभी किसानों को किसान पास-बुक, ततीमा व कानूनी वैधता सहित दी जाए।
9. नि:शुल्क जल प्रबन्ध किया जाए तथा हरेक खेत को पानी की व्यवस्था हो।
10. बिजली की समस्या का प्रभावी निदान हो पम्प तक मुफ्त बिजली की लाईन दी जाए।
11. भूमि अधिग्रहण कानून किसान हितैषी हो।
12. कृषि ऋण का ब्याज 4 प्रतिशत तक नीचे लाया जाए।
13. सिंचाई व्यवस्था हेतू एक मास्टर प्लान तैयार किया जाए।

14. किसानों की भूमि की निशानदेही राजस्व विभाग द्वारा प्रार्थना पत्र के एक माह के भीतर करवाई जाने का आदेश दिया जाए।
15. निजी भूमि में पेड़ काटने तथा बेचने की अनुमति दी जाए तथा समय का प्रतिबन्ध हटाया जाए।
16. फसल बीमा को अधिक व्यवहारिक बनाने हेतु प्रति किसान को एक ईकाई माना जाए सभी प्रकार की फसलों को बीमा योजना के अन्तर्गत लाया जाए।
17. जैविक कृषि आगामी वर्षों में वातावरण तथा भूमि को हानिकारक से मुक्ति दिलाने के लिए प्रदेश भर में जैविक कृषि को प्रोत्साहन देने के लिए व्यापक अभियान चलाया जाए।
18. समस्त कृषि उत्पादों को लाभकारी मूल्य पर खरीदने की व्यवस्था की जाए।
19. किसानों को प्रत्यक्ष अनुदान दिया जाए।
20. किसान सुरक्षा कोष स्थापित किया जाए।
21. आर्थिक नीति निर्धारण के सभी निकायों में ग्रामीण क्षेत्र (कृषि क्षेत्र) के प्रतिनिधियों को शामिल किया जाए।

प्रदेश अधिवेशन:

भारतीय किसान संघ द्वारा किसानों की समस्याओं के समुचित समाधान के लिए तथा उनकी सहायता हेतु समय-समय पर विभिन्न सेमिनार कार्यशालाएं आयोजित की जाती है जिनके माध्यम से किसानों को कृषि को बढ़ावा देने के लिए सुझाव तथा विचार विमर्श किया जाता है। यह कार्यक्रम प्रांत जिला तथा खंड एवं पंचायत स्तरों पर भी समय-समय पर आयोजित किए जाते हैं। प्रांतीय अधिवेशन स्थान ललित महाजन सरस्वती विद्या मन्दिर बाशिंग, कुल्लू में दिनांक 26-27 अक्तूबर, 2024 को संपन्न हुआ।

विशेष:

लॉकडाउन के समय सेवा कार्य

लॉकडाउन के दौरान किसानों को बीज, कीट नाशक, रासायनिक खाद व उर्वरक की दुकान खुली रखने की अनुमति माननीय मुख्यमन्त्री द्वारा 25-03-2020 को दिलवाई गई।

कांगड़ा में चाय के छोटे और माध्यम बागवानों की चायपत्ती तोड़ने की, उसके बाद प्रसंस्करण उद्योग में भेजने की अनुमति उपायुक्त कांगड़ा द्वारा 31-03-2020 को दिलवाई।

मंडी ज़िला में सब्जी मंडी और सभी वाहन बन्द थे मंडी प्रशासन से वार्तालाप करके दूर दराज क्षेत्र करसोग, गोहर अन्य मंडियों में किसानों को मटर और अन्य सब्जियों के खरीदने व बेचने की अनुमति उपायुक्त मंडी द्वारा 02-04-2020 को दिलवाई।

लाहौल के किसान सर्दियों में कुल्लु घाटी में ठण्ड से बचने के लिए आ जाते हैं और मार्च माह में खेती करने के लिए वापस जाते हैं। माननीय मुख्यमन्त्री द्वारा उनको अनुमति हेतु प्रतिलिपि भारत सरकार के कृषि मंत्रालय (नरेन्द्र सिंह तोमर) 12-04-2020 संलग्न की गई। इसके अतिरिक्त सेब की पेटी और ट्रे की जमाखोरी कुछ व्यापारियों द्वारा किसानों को दोगुने मूल्य पर उपलब्ध करवायी जाती थी और बाज़ार में नहीं मिलती थी उसका समाधान उपायुक्त शिमला द्वारा 28-04-2020 को किया गया।

कुल मास्क वितरण (11055) ग्यारह हज़ार पचपन लाभान्वित परिवार 1423 प्रशासन के लोग 244 शामिल हुए। मुख्यमंत्री राहत कोष में भारतीय किसान संघ के कार्यकर्ताओं द्वारा एक लाख तरेपन हज़ार पाँच सौ सत्तर (153570) राशि जमा की गई

भारतीय किसान संघ ज़िला कांगड़ा विकास खण्ड नगरोटा बगवां की ग्राम समिति रन्हु, नियांडा, कवाड़ीं के सदस्य भोजन के पैकेट प्रवासी मजदूरों व कवार्टाइन किए गए मजदूरों को प्रतिदिन बांटते रहे। इन ग्राम समितियों ने स्थानीय प्रशासन को 9 किवंटल चावल और 2 किवंटल आटा दिया। इसके अतिरिक्त प्रदेश में 349 अप्रवासी परिवारों को राशन वितरण, सेवा कार्य में कुल 173 कार्यकर्ता लगे रहे। छह ऑक्सीजन सिलिंडर बांटे गये। 39 परिवारों में दवाइयां बांटी गईं। 16 व्यक्तियों को पूरा राशन दिया गया। इस सेवा कार्य में 49 कार्यकर्ता सहभागी बनें। इस प्रकार भारतीय किसान संघ द्वारा हिमाचल प्रदेश के किसानों, बागवानों के कल्याण के लिए विभिन्न स्तरों पर कार्य किया जा रहा है। किसानों की समस्याओं की पहचान करके उनके समाधान के लिए विभिन्न मामले सरकार के समक्ष प्रस्तुत किए गए हैं। वर्तमान में भी भारतीय किसान संघ द्वारा किसानों का हित साधने के लिए कृषि और बागवानी के क्षेत्र में हर संभव सहायता देने का प्रयास किया जा रहा है।◆◆◆

'मैं, तू-एक रक्त' हिमगिरि कल्याण आश्रम

लच्छिया राम ठाकुर - प्रांत अध्यक्ष

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम देश के विभिन्न भागों में रहने वाले लगभग 10 करोड़ 42 लाख वनवासियों के सर्वांगीण विकास, उनकी संस्कृति व सांस्कृतिक धरोहर, परंपराओं रीति रिवाजों, हक हकूक व नैतिक जीवन मूल्यों के संरक्षण व संवर्धन पर काम कर रहा है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 के तहत देशभर में 130 से अधिक अनुसूचित जनजातियां अधिसूचित हैं। प्रारंभ में इसकी स्थापना 1952 में रमाकांत केशव देशपांडे जिन्हें बालासाहेब देशपांडे के नाम से जाना जाता है, द्वारा जयपुर में कुछ विद्यार्थियों को लेकर की गई। इसका राष्ट्रीय स्वरूप 1978 में हुआ। अखिल भारतीय बनवासी कल्याण आश्रम अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग नाम से काम कर रहा है। बनवासी कल्याण आश्रम आज लगभग सभी राज्यो में कार्यरत है। अखिल भारतीय स्तर पर लगभग 240 जन जातियों में 331 बनवासी जिलों तथा 52192 गांव में 22152 प्रकल्पों के माध्यम से वनवासी कल्याण आश्रम का संपर्क बढ़ा है और प्रकल्पों के माध्यम से कार्य चल रहा है। इसका ध्येय वाक्य है - 'नगरवासी, ग्रामवासी, वनवासी हम सभी हैं भारतवासी'। बनवासी बंधुओं के चहुंमुखी विकास के उद्देश्य से अनेकों कार्यकर्ता **'मैं तू एक रक्त'** के भाव से काम कर रहे हैं।

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम से संबद्ध हिमगिरि कल्याण आश्रम की स्थापना हिमाचल प्रदेश में 19 मई 1985 को सबसे पहले सोलन जिला के शिल्ही में हुई। हिमगिरि कल्याण आश्रम जनजाति लोगों के सर्वांगीण विकास में समर्पित एक गैर राजनैतिक और गैर सरकारी, परोपकारी, स्वैच्छिक संस्था है। हिमगिरि कल्याण आश्रम राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए प्रदेश के जनजातीय समाज में स्थानीय नेतृत्व विकसित कर संगठित करना तथा उनके परंपरागत विश्वासों व जीवन मूल्यों का संरक्षण संवर्धन करते हुए सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, आर्थिक विकास में सब प्रकार से सहयोग करना। इस हेतु हिमगिरि कल्याण आश्रम सुदूर जनजातीय गांवों में सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए तरह-तरह के कार्यक्रम चलाता रहता है। वर्तमान में हिमगिरि कल्याण आश्रम कुल 21 प्रकल्प चला रहा है। जिसमें 5 छात्रावास, 2 सिलाई सेंटर, 6 श्रद्धा जागरण केंद्र, 2 आरोग्य केंद्र तथा 6 खेलकूद केंद्र शामिल हैं।

सोलन, चंबा, शिमला और रामपुर में बालकों के लिए छात्रावास चलाए जा रहे हैं। विशेष रूप से कन्याओं के लिए किन्नौर जिला के रिकांगपिओ में एक छात्रावास चलाया जा रहा है। इन छात्रावासों में जनजातीय क्षेत्र से आए अभावग्रस्त बालक बालिकाओं को नि:शुल्क भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, चिकित्सा व दैनिक जीवनोपयोगी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं जिससे विद्यार्थी अपने पांव पर खड़े होकर समाज निर्माण और राष्ट्रीय एकता व अखंडता में सहयोगी बन सके। कल्याण आश्रम से अभी तक लगभग 428 विद्यार्थी तथा सिलाई प्रशिक्षण केंद्रों से 530 से अधिक बहनें प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकी हैं। सभी छात्रावासों में शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों के रहने, भोजन और पढ़ाई पर आने वाले समस्त व्यय की आपूर्ति समाज द्वारा दिए जाने वाले सहयोग से ही की जाती है। सहयोग में नगद राशि, खाद्य सामग्री एवं दैनिक उपयोग की वस्तुएं दान में दी जाती हैं। हिमगिरि कल्याण आश्रम पिछले 39 वर्षों से जनता के अपार सहयोग एवं स्नेह से समाज सेवा में कार्यरत है। चम्बा के छात्रावास के प्रारंभ की कहानी कुछ इस प्रकार है कि 1998 अगस्त मास में चम्बा के ऐतिहासिक मिंजर मेला के दिन चुराह तहसील के सतरून्डी में काला बन नामक स्थान पर आतंकवादियों ने एक दु:खद घटना को अंजाम दिया था। इस कुकृत्य में 35 लोगों को एक पंक्ति में खड़ा करके गोली से भून दिया गया। इस दुर्घटना में हुए अनाथ बच्चों को लेकर कियाणी नामक गांव में एक किराए के भवन में 1999 से एक छात्रावास शुरू किया गया जो आज चनेड नामक स्थान पर अपने स्वयं के भवन में चल रहा है। वर्तमान में पांच छात्रावास में से तीन छात्रावास स्वयं के निजी भवनों में चल रहे हैं तथा दो पर भूमि अधिग्रहण का कार्य प्रगति पर है। इस दैविय कार्य में समाज के विभिन्न वर्गों का स्नेह, सानिध्य व अपार सहयोग सराहनीय है, प्रशंसनीय व आदरणीय है।

भारत विकास परिषद् हिमाचल प्रदेश

सम्पर्क, सहयोग, सेवा, संस्कार और समर्पण

अशोक टंडन, मह सचिव हिमाचल प्रान्त (पूर्व)

संगठन के कार्य की शुरूआत:

हिमाचल प्रदेश में सर्वप्रथम भारत विकास परिषद् की बुनियाद 1984 में श्री बी एम लाला जी ने डाली। सोलन शाखा को 10 से 15 सदस्यों को गठित कर इस संगठन की शुरूआत की गई। उस समय अध्यक्ष के रूप में श्री बाल इंद्र तथा सचिव के रूप में डॉ. सत्यव्रत भारद्वाज को दायित्व सौंपा गया। आज लगभग इस प्रांत में 400 सदस्य हैं।

भूमिका: व्यक्ति और समाज निर्माण कार्य में भारत विकास परिषद् प्रान्त (पूर्व) आइना है।

प्रांत की शाखाएं भा.वि.प., वर्तमान में कार्य की दृष्टि से सम्पूर्ण प्रान्त (पूर्व) की 11 शाखाएं हैं, जो पूर्णतया संगठनात्मक ढांचे में रहती हैं।

प्रांत की कार्यशैली: प्रांतीय कोर कमेटी, प्रांतीय कार्यकारिणी तथा शाखा कार्यकारिणी जो वर्ष भर अपनी विभिन्न बैठकों, अधिवेशन कार्यक्रम, कार्यशालाओं तथा अभियानों आदि के माध्यम से संस्कार, सेवा, सम्पर्क एवम् महिला बाल विकास प्रकल्पों के विभिन्न कार्यक्रम संचालित करती है।

प्रमुख संस्कार के कार्यक्रम:

क) राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता: शाखा, प्रान्त, क्षेत्र एवम् राष्ट्रीय स्तर पर प्रति वर्ष हजारों विद्यार्थी सहभागी होते हैं।

ख) भारत को जानें: इस प्रतियोगिता के नाम से सम्पूर्ण प्रान्त में विभिन्न स्तरों पर हजारों विद्यार्थी भाग लेते हैं जिन के लिए हज़ारों प्रश्नों की पुस्तक हिन्दी व अंग्रेज़ी में मुद्रित की जाती है और विद्यार्थियों की तैयारी के लिए उपलब्ध कराई जाती हैं।

ग) गुरू वंदन छात्र अभिनंदन: विद्यालयों में शिक्षकों का सम्मान एवम् विद्यार्थियों के अभिनंदन हेतु यह कार्यक्रम प्रान्त तथा देश भर में आयोजित होता है, जिसके माध्यम से अपने गुरु के प्रति विद्यार्थियों में आदर, श्रद्धा एवम् संस्कार विकसित होता है।

घ) तुलसी वितरण: प्रांत की सभी शाखाएं प्रति वर्ष हज़ारों तुलसी के पौधे आम जनता में वितरित करती हैं।

प्रमुख सेवा के कार्यक्रम:

क) लैबोरेटरी का गठन: प्रान्त में शिमला, बद्दी तथा पांवटा साहिब शाखाओं में आधुनिक सुविधाओं से लैस लेबोरेटरी द्वारा आम जनता की विभिन्न बीमारियों के टैस्ट किए जाते हैं।

ख) ग़रीब जनता की सेवा: भंडारा द्वारा गरीब परिवार की सहायता, विद्यालयों में विद्यार्थियों को जूते, स्वेटर, कॉपी, किताब, पैन एवम् वर्दी नि:शुल्क आबंटित करके सहायता प्रदान की जाती है। ग़रीब पर होनहार छात्राओं को छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाती है।

ग) चिकित्सा शिविर: प्रतिवर्ष चिकित्सा शिविर द्वारा आम जनता का निशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण/औषधि वितरण, महिलाओं में खून की कमी इत्यादि की जांच की जाती है

घ) जागरूकता अभियान: महिलाओं को प्रतिवर्ष उनके हक के लिए और समस्याओं को मध्य नज़र रखते हुए उनको विशेषज्ञों द्वारा जागरूक किया जाता है। युवाओं को नशामुक्त करने के लिए सैमिनार द्वारा जागरूक किया जाता है।

ड) वृक्षारोपण कार्यक्रम: प्रतिवर्ष प्रांत की सभी शाखाएं हज़ारों वृक्षों का पौधारोपण करती हैं।

च) गांवों का गोद लेना: सोलन व परवानू शाखाओं ने एक एक गांव गोद लिया है जिसमें किसानों, महिलाओं, बच्चों के उत्थान के लिए संस्कार और सेवा के विभिन्न कार्यक्रम चलाए गए हैं।

छ) क़ुदरती आपदा में सेवा कार्य: इसके अतिरिक्त सन् 2023 में आई भीषण आपदा से पीड़ित प्रांत में हज़ारों पीड़ितों को लगभग 15 लाख रूपए का सामान वितरित किया गया।

सेवा परमो धर्मः का व्रत लेकर समाज की सेवा में रत सेवा भारती

राकेश कुमार - प्रांत संगठन मंत्री

भूमिका : सेवा भारती का कार्य 1989 में शुरू हुआ, उस समय हिमाचल की स्थिति के अनुसार हमने सर्वप्रथम कुल्लू में सेवा कार्यों का विधिवत् रजिस्टर्ड संस्था के माध्यम से संचालन शुरू किया। संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता राजकुमार जैन जी सेवा भारती के कार्य को आगे बढ़ाने लगे। इससे पूर्व सेवाकार्य संघ के सेवा विभाग के रूप में चल रहे थे। उस समय स्थिति के अनुसार सेवा कार्य संघ के कार्यकर्ता करते थे। जो भी सामने स्थिति होती थी उसको मध्य नजर रखते हुए बीच-बीच में सेवा कार्य होते थे लेकिन जिस समय धन की आवश्यकता पड़ने लगी तब सेवा भारती का गठन हुआ क्योंकि संघ कोई दान नहीं लेता तब संघ के कार्यकर्ताओं के प्रयास से सेवा के कार्य सेवा भारती के नाम से शुरू किए गए।

सबसे पहले कुल्लू में सिलाई केन्द्र का शुभारंभ किया गया जो कि आज भी चल रहा है। उस समय यह सिलाई केन्द्र केवल पांच बहनों से शुरू किया था लेकिन आज उसमें प्रति वर्ष 60 से 100 बहनें सिलाई सीखती हैं। फिर अन्य जिलों में भी लगने लगा कि हमें भी कुल्लू की तरह सेवा भारती का गठन करके काम शुरू करना चाहिए क्योंकि सामाजिक स्थिति ऐसी थी कि लोगों के पास बहुत ज्यादा सुविधा नहीं थी, धन की भी कमी रहती थी। उस निर्धनता में सेवा भारती एक दीपक के रूप में लोगों के बीच दिखने लगी जिसकी लौ मैं कुछ छूटती जिंदगियों को सहारा मिला। मंडी में भी सेवा भारती मंडी के नाम से संस्था रजिस्टर की गई इसमें मुख्यत: उस समय स्वास्थ्य की दृष्टि को मध्य नजर रखते हुए निर्णय लिया गया कि प्रतिदिन 50 रूपैया की दवाई एक रोगी को दी जाएगीऔर उसका खर्च सेवा भारती उठाएगी। कार्य सुचारू रूप से चलने लगा पहले स्वयं सेवकों ने ही सहायता के लिए हाथ आगे बढ़ाए। उस समय के वरिष्ठ कार्यकर्ता संसार चंद्र कपूर जी, जगदीश चंद्र जी, डी.एन. कपूर जी, राजकुमार गुप्ता जी, ज्योति जी, पन्नालाल जी, चमन लाल कपूर जी, सुरेन्द्र वैद्य जी व परिवार, श्री बैहल जी जैसे अनेक वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने यह कार्य सुचारू रूप से चलाया। शाखाओं के माध्यम से सेवा कार्यों में बढ़ोतरी होने लगी सभी स्वयंसेवक शाखा के बाद सेवा कार्यों को करने लगे। सेवा कार्यों से उस समय में जो छवि बनी उसके कारण आज तक यह कार्य चल रहा है और अब इसके साथ और भी कई कार्य सेवा भारती मंडी के साथ जुड़े। छात्रों को वजीफा देना, रोगियों को अन्य सहायताएं पहुंचाना, स्कूल, कॉलेज, आईटीआई के छात्रों का भी खर्च सेवा भारती मंडी उठाती है। गरीब छात्रों के लिए मंडी एक वरदान के रूप में उभरी है। इसके कारण बहुत से गरीब छात्र आज अपने पैरों पर खड़े हुए हैं। यहां तक की एक छात्र एनआईटी हमीरपुर में पढ़ना चाहता था तो उसको वहां पर पूरा खर्च सेवा भारती मंडी ने उठाया। अब वह अच्छी कंपनी में लगा है और अपने परिवार की तथा समाज की भी सेवा कर रहा है। सेवा भारती मंडी के साथ 400 से ज्यादा दानदाता भी जुड़े हुए हैं जो निरंतर सेवा कार्य में सेवा भारती मंडी का सहयोग करते रहते हैं। सेवा भारती मंडी की 50 सदस्यों की कार्यकारिणी कार्यरत है, जिसमें अधिकतर स्वयंसेवक इस समिति को चला रहे

हैं और सेवा कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। इसके पश्चात् कांगड़ा में सेवा कार्यों के लिए समिति का गठन किया गया रजिस्ट्रेशन करवाया गया। शिमला राजधानी होने के कारण वहां भी सेवा भारती शिमला के नाम से रजिस्ट्रेशन करवाया गया। अपने अधिकारियों को ध्यान आया की जगह-जगह सेवा भारती रजिस्टर करना अच्छा नहीं है क्यों ना प्रांत स्तर पर एक ही सेवा भारती हो और वह अपनी शाखाओं के माध्यम से सभी जिलों में कार्य बढ़ाए। 20 फरवरी 2001 में शिमला सेवा भारती को बढ़ाकर प्रांत की सेवा भारती बनाया गया तब से लेकर अभी तक सेवा भारती हिमाचल पूरे प्रदेश में काम कर रही है। सेवा भारती हिमाचल प्रदेश की पहली कार्यकारिणी में 13 सदस्य थे जिनमें अध्यक्ष विजय अग्रवाल जी शिमला, सचिव डॉ सुरेंद्र शर्मा, मल्लिका नड्डा जी, पुरुषोत्तम शर्मा जी, ओम प्रकाश जी, मनसाराम जी, संत राम जी, प्रदीप कुमार जी, विजय कुमार जी, रोहिताश जी, चंद्रप्रकाश जी, राजकुमार गुप्ता जी तथा युद्धवीर पठानिया जी सदस्य थे। उनके मार्गदर्शन में ही बहुत से सेवा कार्य शुरू हुए। अब प्रदेश भर में हमारे 26 जिले व विभाग हैं जो कि संघ की रचना के अनुसार ही कार्य करते हैं। 2001 में ही सेवा भारती का संविधान बना और उसके अनुसार प्रति 3 वर्ष में सेवा भारती की सभी ईकाइयों का पुनर्गठन होता है। तब से ही जिलों में मासिक बैठक व प्रांत में 3 महीने में एक बार प्रांत की बैठक रहती है। इस तरह सेवा भारती का कार्य पूरे प्रदेश भर में चलने लगा। वर्तमान में सेवा भारती के 21 सदस्य हैं जिनके मार्गदर्शन में सेवा कार्य आगे बढ़ रहे हैं। एक सिलाई केंद्र और रोगियों की सहायता से शुरू हुआ काम आज बढ़ते बढ़ते प्रदेश के सरकारी सभी जिलों में पहुंच चुका है और संघ योजना के सभी 26 जिलों में से 24 जिलों में कुछ ना कुछ काम चल रहा है।

अभी सेवा भारती के 131 कार्य चल रहे हैं जिनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और सामाजिक कार्य जुड़े हुए हैं। सेवा भारती वंचित, पीड़ित, उपेक्षित और अभावग्रस्त ऐसे चार क्षेत्रों में कार्य करती है। जब सेवा भारती का कार्य धीमी गति से चल रहा था उसको गति देने के लिए संगठन ने नई योजना बनाई और श्रीमान मनसाराम जी पहले वानप्रस्थ कार्यकर्ता सेवा भारती को मिले। उन्होंने लगातार 20 वर्षों तक सेवा भारती का कार्य आगे बढ़ाया। पहले वह प्रांत के सेवा प्रमुख रहे उसके पश्चात् उन्हें सेवा भारती के ही कार्य का दायित्व दिया गया। उनके निरंतर प्रयास से सेवा भारती आज इस स्थान पर पहुंची है। उनके अनथक प्रयास से सेवा भारती का पहला छात्रावास डगशाई में शुरू किया गया जो की किसी दूसरी संस्था के कब्जे में था तो फिर उसे उनसे खाली करवाया गया। बहुत प्रयास करने पड़े उस संस्था से लेने के लिए फिर वहां पर मनसाराम जी ने पूरे प्रदेश से बच्चे लाकर पढ़ाना शुरू किया। आठ बच्चों से छात्रावास शुरू किया गया अब वहां पर 20 बच्चे लगातार पढ़ाई करते हैं उसके पश्चात कुल्लू भुंतर में छात्रावास शुरू किया गया वहां पर 15 बच्चों का रहने का स्थान है। 2012 में मंडी में एक छात्रावास शुरू किया गया उसकी भी अपनी एक संघर्ष गाथा है। यह जगह ईसाइयों के कब्जे में थी अवैध बिल्डिंग उन्होंने बना रखी थी। संघ के कार्यकर्ता के नाम पर इसका केस शुरू किया गया, सुप्रीम कोर्ट तक केस लडने के पश्चात् बहुत प्रयत्नों से यह भवन हमें प्राप्त हुआ। अब वहां पर 20 बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं। एक छात्रावास कुल्लू घुड़दौड़ में शुरू किया गया है इन सब छात्रावासों में 300 से ज्यादा बच्चे पढक़र चले गए हैं जो की निरंतर सेवा भारती के संपर्क में है। सेवा भारती हिमाचल प्रदेश के वर्तमान कार्यकारिणी में 21 सदस्य हैं जिसमें मुख्य संरक्षक मनसाराम जी, अध्यक्ष डॉक्टर सुरेंद्र जी सचिव रणदेव जी कोषाध्यक्ष विनोद अग्रवाल जी हैं, अन्य सदस्य शशि पूनम जी जगन्नाथ कनैन जी विजय जी हमीरपुर, विजय जी बिलासपुर, विजय जी शिमला, निधि बालाजी, सुमन जी, अशोक जी, राम अयोध्या जी, मुकेश जी राजकमल जी, शैलेंद्र जी, रणेश जी, शिवम जी, अशोक जी हमीरपुर, अरविंद चौधरी जी, अमित जी हैं। पिछले 36 वर्षों से सेवा भारती के कार्य चल रहे हैं। जिला स्तर पर जितनी सेवा भारती रजिस्टर हुई थीं उनमें से केवल दो ही अलग से चल रही हैं कि सब ने सेवा भारती हिमाचल में मर्ज कर दिया था। अब सेवा भारती हिमाचल ऑनलाइन संस्था हो गई है उस समय हमने ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन की थी।

प्रत्येक जिला में 11 से 21 सदस्यों की कार्यकारिणी है।

प्रत्येक इकाई के पास अपने कार्यों को चलाने के लिए समुचित व्यवस्था है। कई बार कुछ कमी पड़ जाती है तो समाज से आग्रह करके वस्तुओं का संग्रह भी करते हैं। सेवा भारती की सारी व्यवस्था समाज से ही उपलब्ध होती है। अभी कुछ कंपनियों से संपर्क करने की कोशिश की जा रही है अगर कुछ बड़े घराने सेवा भारती हिमाचल की मदद करने के लिए आगे आते हैं तो कम समय में प्रत्येक उस परिवार तक पहुंचने की कोशिश की जाएगी जिनको हमारी आवश्यकता है। उपलब्धियों के तौर पर आज हम कह सकते हैं कि शिक्षा के माध्यम से हमने उन अति निर्धन बच्चों का जीवन स्तर ऊंचा किया है जो इसके अभाव में भटक सकते थे। सेवा भारती के कार्यों को देखते हुए समाज में भी अच्छी जागरूकता आ रही है और जब किसी को हमारे कार्यों के बारे में पता चलता है तो उनका एक ही वाक्य होता है कि आप इतना कार्य करते हैं लेकिन समाज में तो पता नहीं कि आप क्या कर रहे हैं हमें भी अभी पता चला। जो बच्चे झुगी झोपडियों में रहते हैं और उनके माता-पिता सुबह ही उनको छोडक़र काम पर चले जाते हैं तो पीछे वह बच्चे किसी को गाली देते थे किसी को पत्थर मारते थे लड़ते झगड़ते रहते थे लेकिन जैसे ही हमने सेवा भारती के माध्यम से संस्कार केंद्र शुरू किया उन बच्चों की प्रतिभा सामने आने लगी और हमने उनको अक्षर ज्ञान देकर जितनी आयु का वह बच्चा था उसी कक्षा में उसको दाखिल करवाया इस तरह हमने अभी तक लगभग 240 बच्चों को स्कूल में पढऩे के लिए भेजा। इसी तरह सेवा भारती निरंतर कार्य करती जा रही है। आपदा हो या कोई दुर्घटना सेवा भारती हिमाचल प्रदेश की कोशिश रहती है कि 24 घंटे के भीतर उस स्थान पर पहुंच जाए जहां पर आवश्यकता है। पिछले वर्ष सभी ने देखा उस भयंकर बारिश में इतने उपद्रव हुए यह लग रहा था कि बहुत बड़ी हानि होने वाली है उस समय सेवा भारती ने सामान्य से लेकर अति दुर्गम स्थानों तक भी पहुंचकर .सबको बिस्तर भोजन और बर्तन की सुविधा उपलब्ध करवाई। पिछले 1 वर्ष से सेवा भारती ने 200 परिवारों को बर्तन और बिस्तर की सुविधा उपलब्ध करवाई। जिन परिवारों के घर अग्निकांड की भेंट चढ़ गए उन परिवारों तक 24 घंटे के भीतर सेवा भारती ने राहत सामग्री पहुंचाई फिर चाहे वह रामपुर में हुई घटना हो या बंजार में या करसोग में या हमीरपुर में या कहीं भी, सेवा भारती तुरंत सामान लेकर उन घरों तक पहुंची जहां हमारी आवश्यकता थी सेवा भारती की बर्तन और बिस्तर की पूरी किट लगभग 15000 रु की रहती है जिससे पूरे परिवार को सोने के लिए बिस्तर और खाने के बर्तनों की कमी ना हो इस प्रकार सेवा भारती के कार्य निरंतर हिमाचल प्रदेश में बढ़ रहे हैं। हम सभी से आशा करते हैं की सेवा भारती से जुड़े और समाज के लिए जो सहायता कर सकते हैं वह करें। हमारे सेवा कार्यों को देखते हुए समाज में संघ के प्रति भी सम्मान का भाव बढ़ा है और संघ को अपनत्व की दृष्टि से लोग देखने लगे हैं। लोग अब संगठन के नजदीक आना चाहते हैं संघ को देखना चाहते हैं और समझना चाहते हैं इतना बड़ा कार्य उनकी आंखों के सामने हो रहा है तो लोगों के मन में भी संघ के संगठनों को जानने की इच्छा बढ़ रही है। धीरे-धीरे हिमाचल में भी परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं।◆◆◆

संस्कृत भाषा से समाज को सुसंस्कृत एवं संस्कारयुक्त करती संस्कृत भारती हिमाचल (न्यास)

ज्ञानेश्वर शर्मा - प्रांत मंत्री

किसी भी राष्ट्र की अखण्डता के लिए सांस्कृतिक भाषा एक आवश्यक वैचारिक आधार है। संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी होने के कारण सभी देशवासियों को एकत्र करने की भूमिका बहुत प्रभावी ढंग से निभा सकती है। दर्शन, साहित्य, भौतिक, रसायन, ज्योतिष्, वास्तुकला, औषधि विज्ञान, गणित, संगीत आदि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के ज्ञान-कोष की चाबी है संस्कृत। यदि इन क्षेत्रों के विशेषज्ञों को संस्कृत भाषा का ज्ञान होता है, तब वे अपने अतीत के संचित ज्ञानकोष का अध्ययन कर उसके प्रकाश में नवीनतम वैज्ञानिक आविष्कार करने में समर्थ हो सकेंगे। महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि संसार भर के वैज्ञानिकों ने मान्य किया है कि संस्कृत विश्व की सबसे पूर्ण तथा विशुद्ध भाषा है और कम्प्यूटर के लिए सर्वोत्तम है।

आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था के युग में अपने सांस्कृतिक उत्थान के सन्दर्भ में अपने अस्तित्व तथा सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा के लिए हमें संस्कृत की आवश्यकता इतनी है जितनी आज से पहले शायद कभी नहीं थी।

कठिन भाषा के रूप में दुष्प्रचारित भाषा को पुनः कैसे व्यावहारिक बनायें ?

संस्कृत-भारती का उत्तर है, संस्कृत सम्भाषण शिविर के द्वारा आप केवल 10 दिन में संस्कृत बोलना सीख सकते हैं। इस पाठ्यक्रम में पहले दिन से ही शिक्षक और शिक्षार्थी संस्कृत के अतिरिक्त अन्य किसी भाषा का प्रयोग नहीं करते। गीत, कथा, शब्द, खेल, मौखिक-अभ्यास तथा परस्पर वार्तालाप की पद्धति के माध्यम से सजीव रूप में आकर्षक तथा रूचिकर कक्षाओं का संचालन किया जाता है। संस्कृत जो कि वास्तव में सरल है ही, सबको बोलने में एकदम सहज लगती है।

श्री चमू कृष्ण शास्त्री के निर्देशन में सन् 1981 में बेंगलूरु में आरब्ध संस्कृत भारती अखिल भारतीय संघटन का सन् 1995 में देश-विदेशों में संस्कृत कार्य विस्तार के उद्देश्य से देश की राजधानी देहली में न्यास के रूप में पंजीयन एवं केन्द्रीय कार्यालय स्थापित किया गया। इसके बाद देश में कार्यविस्तार के चलते युगाब्द 5101, वर्ष 1999 में हिमाचल प्रान्त में कार्यारम्भ हुआ। आरम्भ में 02 पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं ने सम्पूर्ण प्रान्त के समाज-विद्यालय-महाविद्यालय-विविध शिक्षण संस्थान-विविध संस्था-विविध कार्य विभागों में प्रवास कर संस्कृत माध्यम से एक दूसरे का परिचय करवाते हुए कार्य का आरम्भ किया। प्रारंभ से कार्य में श्री माहेश्वर शर्मा जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। संस्कृत महाविद्यालयों तथा अन्य महाविद्यालयों के संस्कृत प्राचार्य एवं आचार्यों से सम्पर्क किया गया। प्रदेश की संगठनात्मक इकाई का चयन किया गया। प्राचार्य डॉ. हिन्द केसरी, डॉ. भक्त वत्सल, डॉ. दयानंद शर्मा, प्राचार्य डॉ. ओम सरोच जी, डॉ. वृहस्पति मिश्र, डॉ. पाण्डेय आदि वरिष्ठ आचार्यों व विद्वानों का सहयोग प्राप्त कर संस्कृत भारती ने अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार किया। संगठन मंत्री प्रचारक मा. प्रताप जी के अनथक प्रयासों से अनंतर वर्तमान में क्षेत्रीय संगठन मंत्री नरेंद्र जी की सक्रियता से प्रदेशभर में संस्कृत प्रेमी संस्कृत भारती से जुडने लगे। धीरे-धीरे इस रूप में आरब्ध कार्य में दश-दिवसीय संस्कृत सम्भाषण शिविर एवं भाषा प्रबोधन वर्गों के माध्यम से व्यापकता आयी। वर्तमान में कार्य की दृष्टि से प्रान्त में 07 विभाग, 24 जनपद एवं 133 विकास खंड हैं। 1890 संस्कृत-सम्भाषण-शिबिरों के माध्यम से। 11000 लोगों का प्रशिक्षण, 97 दस दिवसीय आवासीय भाषाबोधन वर्गों में 6124 लोगों का प्रशिक्षण, 22 शिविर चालक प्रशिक्षण वर्गों में 1427 कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण किया गया।

उपलब्धि के तौर पर उक्त प्रशिक्षण प्राप्त कार्यकर्ताओं में से 418 प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं ने सस्कृत-प्रचार-प्रसार हेतु अल्पावधि विस्तारक के रूप में एवं 63 विस्तारकों/पूर्णकालिकों ने प्रदेश में संस्कृत के विकास के लिए विशेष योगदान दिया। हिमाचल प्रान्त के साथ-साथ उत्तरक्षेत्र में संघटन कार्य के विस्तार के लिए 06 पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं ने अपने समय का योगदान दिया। वर्तमान में उत्तरक्षेत्र के हरियाणा, दिल्ली, पंजाबादि प्रान्तों में 06, मध्यभारत में 01 तथा गुर्जर प्रान्त में 01 हिमाचल के पूर्णकालिक कार्यकर्ता संस्कृत कार्य के संवर्धन में समय समर्पण कर रहे हैं।

06 प्रान्त कार्यकर्तृ सम्मेलनों का सफल आयोजन किया

गया। 900 से अधिक स्थानों पर संस्कृत वस्तु प्रदर्शिनी व संस्कृत विज्ञान प्रदर्शिनी का आयोजन किया गया। भाषा के वैज्ञानिक पाठ्यक्रम एवं विशिष्ट शैली द्वारा सहज रूप से संस्कृत-सम्भाषण सिखाने के उद्देश्य से सतत कार्यरत संस्कृतभारती हिमाचल प्रदेश ने संस्कृत के प्रति समर्पित शिक्षकों, योग्य संयोजकों, विद्वान् मार्गदर्शकों, समाज में अनेक प्रकार से सहयोगी बन्धु-बहनों के सहयोग से देशव्यापी ढांचा खड़ा करके इस कार्य को गति दी है। संस्कृत भारती विविध कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत को समाज तक ले जाती है। संस्कृत भारती संघटन संस्कृत पठन हेतु प्रोत्साहित करना, समाज के सभी वर्गों के लिए संस्कृताध्ययन हेतु अवसर प्रदान करना, संस्कृत-प्रचार की दृष्टि से वैश्विकस्तरीय संस्थाओं के साथ संयोजन करना इत्यादि गतिविधियों को प्रवर्तित करती है। संस्कृत परम्परा एवं संस्कृत में निहित ज्ञान के विषय जैसे योग, मनोविज्ञान, कला, संगीत, नृत्य, आयुर्वेदादि शास्त्रों में अनुसन्धान कार्यों का व्यवस्थापन एवं सहयोग करना। संस्कृत भाषा के पारम्परिक-शास्त्र-संरक्षकों तथा प्रचारकों के लिए सहयोग, सहकार, छात्रवृत्ति, मानदेयादि आलंबन कार्यों का व्यवस्थापन करना आदि की व्यवस्था भी संस्कृत भारती करती है। संस्कृत में निहित ज्ञान का संस्कृत विषयक समाचार के संप्रेषण, प्रचार तथा पुस्तक-पत्रिका-वार्तापत्र-पत्रिकादि संदर्भों का प्रकाशन। संस्कृत भारती संस्कृत भाषा एवं शास्त्र परम्परा के प्रचारार्थ अपेक्षित आर्थिकस्रोतों का निर्माण इत्यादि निर्धारित लक्ष्यों का संपादन करने में भी तत्पर है।

संस्कृत भारती हिमाचल प्रदेश में संघटन का कार्यस्वरूप यथा

1. **शिक्षणात्मक संस्कृत सम्भाषण शिविर,** आवासीय प्रबोधन वर्ग, प्रशिक्षण वर्ग, प्रगतप्रशिक्षण वर्ग, पत्राचार द्वारा संस्कृत, बालकेन्द्र, गीता शिक्षण केन्द्र, श्लोक पठन केन्द्र, शलाका परीक्षा, विद्यालयीय कार्य, महाविद्यालयीय कार्य, प्रान्तविद्वत्परिषद्, संस्कृत शास्त्रोत्कर्षादि।
2. **प्रचारात्मक** - वर्ष प्रतिपदा, व्यास पूर्णिमा, संस्कृत सप्ताह अथवा संस्कृत दिन, वाल्मीकि जयन्ती, गीता जयन्ती, वसन्त पंचमी, शोभा यात्रा, प्रदर्शिनी, विज्ञान प्रदर्शिनी, विविध जयन्ती, संस्कृत वार्ताहार, सम्भाषण सन्देश, संस्कृत गृह, दिनदर्शिका प्रकाशन, स्मारिका प्रकाशन, सम्मेलनादि।
3. **संगठनात्मक-संपर्क,** कोष, महाविद्यालयीय छात्रकार्य, साप्ताहिक मेलन, महिला समन्वयन, पौरोहित्यकार्य इत्यादि के रूप में है। संस्कृत भारती कार्य की उक्त गतिविधियों के प्रवर्तन हेतु अल्पावधि विस्तारक, विस्तारक, पूर्णकालिक कार्यकर्ता पूर्णरूप से अपना समय समर्पण करते हैं। प्रान्त में कार्यविस्तार के लिए हण्डेटी सुन्दरनगर, सन्दल-चक्कर शिमला, पपरोला कांगडा एवं वर्तमान में परमविला-ढैण्डा राजधानी शिमला में प्रान्तीय कार्यालय है। ◆◆◆

'स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम्, आतुरस्य विकार प्रशमनम्

आरोग्य भारती

हिमाचल प्रदेश

स्वास्थ्य जागरूकता एवं सेवा का संकल्प'

डॉ. हेमराज शर्मा

आरोग्य भारती हिमाचल प्रदेश आरोग्य भारती स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य करने वाला एक राष्ट्रीयसेवा संगठन है, जिसमें भारत में प्रचलित सभी चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सक, पैरामेडिकल कार्यकर्ता एवम् स्वास्थ्य विषय में रूचि रखने वाले सामाजिक कार्यकर्ता कार्यरत हैं। चिकित्सा का प्रयोजन है 'स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम्, आतुरस्य विकार प्रशमनम् च' अर्थात् स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना तथा रोगी को रोग मुक्त करना। अत: आरोग्य भारती स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करने दूसरे शब्दों में सामान्य व्यक्ति में स्वयं स्वस्थ रहने के लिए जागरूकता पैदा करने का काम कर रही है। इसी उद्देश्य को लेकर 2 नवम्बर 2002 धनवन्तरी त्रयोदशी के दिन केरल प्रान्त के कोच्ची में आरोग्य भारती की स्थापना की गई। वर्तमान में अपने देश के सभी राज्यों में और 90 प्रतिशत जिलों में आरोग्य भारती का काम है। राष्ट्रीय स्तर पर 24 आयामों के माध्यम से लोगों का जनजागरण किया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश में भी प्रारंभ में डॉ सुभाष राणा जी को प्रान्त संयोजक का दायित्व सौंपा गया था। 14 मई सन् 2010 में शिमला में आरोग्य भारती का एक महासम्मेलन किया गया जिसकी अध्यक्षता उत्तर क्षेत्र प्रचारक श्रीमान् रामेश्वर दास जी ने की। इस सम्मेलन में हिमाचल प्रदेश के उस समय के मुख्यमन्त्री श्रीमान् प्रेम कुमार धूमल मुख्यातिथि रहे। हिमाचल, पंजाब तथा उत्तराखंड के उस समय के स्वास्थ्य मंत्री इस सम्मेलन में वशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। यह सम्मेलन आरोग्य भारती के आयाम 'भारतीय स्वास्थ्य चिन्तन' के तत्वाधान में संपन्न हुआ। उसी दिन हिमाचल प्रदेश में आरोग्य भारती की प्रान्त टोली का गठन हुआ जिसमें डॉ राकेश पंडित जी प्रान्त संयोजक, डॉ कमलेश पांडे जी प्रान्त अध्यक्ष, डॉ हेमराज शर्मा प्रान्त महासचिव तथा डॉ केशव वर्मा, डॉ बलदेव बग्गा, डॉ पवन गुप्ता, एवम् डॉ. बृजमोहन जी को प्रान्त टोली सदस्य नियुक्त किया गया। इस प्रकार सन् 2010 से ही हिमाचल प्रान्त में आरोग्य भारती का कार्य विधिवत् रूप से प्रारम्भ हुआ। हिमाचल प्रदेश में संगठन की दृष्टि से विभाग और 26 जिले हैं। वर्तमान में 20 जिलों में समितियां, 4 जिलों में टोलियाँ तथा 2 जिलों में संयोजक हैं। 25 प्रान्त पदाधिकारी एवम् प्रान्त कार्यकारिणी सदस्य हैं। प्रतिवर्ष अक्टूबर मास में राष्ट्रीय प्रतिनिधि मण्डल की एक बैठक होती है जिसमें में हिमाचल प्रान्त से 20 -25 सदस्य सहभागी रहते हैं। प्रतिवर्ष एक क्षेत्र बैठक होती है इसमें भी हिमाचल की सक्रिय भागीदारी रहती है। इसी प्रकार प्रतिवर्ष एक प्रान्त कार्यशाला होती है उसमें प्रयास रहता है कि सभी जिलों का प्रतिनिधित्व रहे। वर्ष में 2-3 प्रान्त बैठकें होती हैं। तीन वर्ष के पश्चात् प्रान्त कार्यकारिणी का पुनर्गठन होता है। राष्ट्रीय चिन्तन बैठक में प्रान्त टोली भाग लेती है।

आरोग्य भारती के 24 निम्नलिखित आयाम हैं

योजनात्मक:

1 आरोग्य मित्र प्रशिक्षण 2 विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम 3 महिला कार्य 4 स्वस्थ ग्राम योजना 5 चिकित्सा विद्यार्थी कार्य 6 प्रकाशन।

प्रशिक्षणात्मक:

1 स्वस्थ जीवन शैली 2 योग एवम् सूर्य नमस्कार 3 वनौषधि प्रचार प्रसार 4 प्रथमोपचार 5 घरेलु उपचार 6 मधुमेह योग प्रबंधन

जागरण:

1. पर्यावरण 2. सुपोषण 3. व्यसन मुक्ति 4. अनीमिया 5. थायराइड 6.थैलीसीमिया

समसामयिक :

1. भारतीय स्वास्थ्य चिन्तन 2.स्वास्थ्य परीक्षण 3.चिकित्सक सम्मेलन 4.परम्परागत वैध सम्मेलन

अनिवार्य कार्यक्रम:

1. धन्वन्तरी जयन्ती 2. अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस। उपरोक्त 24 आयामों में से अधिकांश आयामों पर हिमाचल प्रदेश में कार्य चल रहा है। ◆◆◆

हिमाचल स्वदेशी जागरण मंच

दिल से देशी, इच्छा से स्वदेशी, प्रकृति का न हो शोषण

गौतम राम - प्रान्त संयोजक

श्रद्धेय राष्ट्रऋषि दत्तोपंत ठेंगड़ी जी ने पूंजीवादी आक्रमण को परास्त करने के लिए एक अलग मंच की आवश्यकता महसूस होने पर सब प्रकार के चिंतन करने, संघ अधिकारियों से परामर्श करने के पश्चात् 22 नवम्बर 1991 को उन्होंने इसको वास्तविक स्वरूप दिया। हिमाचल प्रांत में भी स्वदेशी जागरण मंच का गठन श्री प्रेम जी ने वर्ष 1992 में किया। शुरुआत में इसे एक आंदोलन के रूप में विकसित किया गया। उस समय सारे देश में गैट (जनरल एग्रीमेंट ऑन ट्रेड एंड टैरिफ) वार्ताओं का दौर था। जिसका मूल विचार था कि अमेरिका व यूरोप तथा मल्टीनेशनल कंपनियों को दुनिया के सभी देश अपने यहां प्रवेश दें, अपने यहां के आयात शुल्क कम करें, बैरियर कम करें, इसके लिए वे विकास के नारे दे रहे थे। बदले में विश्व बैंक व आईएमएफ के लोन का लालच दे रहे थे। ठेंगड़ी जी ने कहा है कि स्वदेशी जागरण मंच पूंजीवाद से लडने़ के लिए एक हथियार के नाते विकसित किया गया एक ऐसा मंच है, जिस पर समविचारी व्यक्तियों के समूह आकर खड़े हो सकते हैं। यह संगठन रचना नहीं, बल्कि आंदोलन रचना है। हम सब एक हैं, लडने़ के तरीके अलग-अलग हैं। हालांकि उनमें एक शिथिल समन्वय बना रहेगा और मंच का कार्य आगे बढ़ता रहेगा। श्री देशबंधु जी को हिमाचल प्रान्त का प्रथम संयोजक बनाया गया।

- 1994 में डंकल प्रस्ताव का विरोध सारे देश भर में होने लगा। हिमाचल प्रांत में भी गांव-गांव में इसका विरोध स्वदेशी जागरण मंच के कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया। केंद्र सरकार ने 1995 में डब्ल्यूटीओ के विरोध में, और फिर 1996 में एनरॉन कंपनी के विरोध में जन आन्दोलन किया।
- 1997-98 में कुल्लू जिला के मनाली में स्की विलेज के विरोध में स्वदेशी जागरण मंच ने स्थानीय गांव के लोगों के साथ मिलकर विरोध किया और बाद में सरकार ने इस स्की विलेज बनाने के प्रस्ताव को वापस लिया।

इसी तरह विभिन्न प्रकार आंदोलन हुए जिसमें मुख्यत: - चाइनीज वस्तुओं का बहिष्कार, स्वदेशी वस्तुओं का अधिक से अधिक प्रयोग करने के बारे में 2013 में पूरे देश के साथ अपने प्रदेश में यह आन्दोलन चला । जोकि काफी सफल भी हुआ। जिससे लोगों में अपने देश में निर्मित वस्तुओं को खरीदने में रूचि प्रदर्शित की। जैसे स्वदेशी का नारा है 'दिल से देशी, इच्छा से स्वदेशी, मज़बूरी में विदेशी, लेकिन इस मजबूरी को धीरे धीरे कम करना।

स्वदेशी एक समग्र विचार

स्वर्गीय दत्तोपंत ठेंगड़ी जी की बार-बार कहा करते थे कि स्वदेशी केवल वस्तुओं की खरीद फरोख्त अथवा आर्थिक विषयों तक सीमित नहीं है। बल्कि यह एक समग्र विचार है, एक संपूर्ण जीवन शैली है। हजारों वर्षों से जिस विचार के इर्द- गिर्द संपूर्ण जीवन की रचना हमारे यहां हुई, उसे हम स्वदेशी विचार यानी समग्र विचार या आज की भाषा में विकास का भारतीय मॉडल भी कह सकते हैं। स्वदेशी की अवधारणा में भारतीय सभ्यता, संस्कृति, शिक्षा पद्धति अपने गौरवशाली अतीत का मन हमारा परिवार व पर्यावरण की सुरक्षा आदि विषय शामिल रहते हैं । इस समग्र विचार को एक दर्शन का रूप देते हुए वर्षों पूर्व पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने इसे 'एकात्म मानव दर्शन' कहा था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने यह भी कहा था कि भारतीय अर्थव्यवस्था को अगर ठीक करने के उपाय दो शब्दों में बताने हो तो वे है: **स्वदेशी व विकेंद्रीकरण।**

इस स्वदेशी विषय का ही प्रमुख भाग है पर्यावरण। आज विश्व पर्यावरण विनाश के कारण त्रस्त है। यह कोरोना की बीमारी भी उसी के कारण अनेक दुष्परिणामों में से एक है। दुनिया में शायद कोरोना से ज्यादा मौतें पर्यावरण विनाश के दुष्प्रभावों के कारण होती है स्वदेशी का विचार है: प्रकृति का दोहन करो, शोषण नहीं। पश्चिमी विचार शोषण पर आधारित है, स्वदेशी विचार यानी

भारतीय विचार दोहन पर आधारित है।

- चीन का जो अभियान स्वदेशी जागरण मंच ने लिया उसमें देखा गया कि जन जागरण के कारण केंद्र सरकार ने भी अपनी योजनाओं में कई बदलाव किए।
- वर्ष 2017-18 में रोजगार व स्वदेशी पथ को लेकर अपने प्रांत में भी एक अभियान चलाया गया। वर्ष 2020-21 में कोरोना काल के दौरान स्वदेशी स्वावलंबन की ओर हिमाचल ने यह अभियान शुरू किया जिसमें कई लोग बड़े - बड़े शहरों में कार्य कर रहे थे, उस दौरान वे अपने गांव की ओर वापिस आए। स्वावलंबन के विषय को लेकर ऑनलाइन के माध्यम से इस अभियान को चलाया गया। संपूर्ण विश्व एवं भारत आज कठिनाई के दौर से गुजर रहा है आज आवश्यकता है कठिनाई को अवसर में बदलने की।
- 26 अप्रैल 2020 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन जी भागवत ने इसका संकेत किया तथा प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भारत में ही बना खरीदें का मंत्र दिया। स्वदेशी का यह मॉडल स्थानीय आवश्यकताओं,स्थानीय साधनों तथा स्थानीय विचारों पर बल देता है। यह विकेंद्रित अर्थव्यवस्था का विचार देता है। यह समग्र विचार एवं संपूर्ण जीवन शैली है। प्रकृति का दोहन करो, शोषण नहीं। स्वदेशी का यह विचार बचत संस्कृति व भारतीय परिवार व्यवस्था को सुदृढ़ करने का भी है।
- वर्ष 2022-23 में 'स्वावलंबन की ओर बढ़ता भारत' को लेकर प्रदेश भर में अभियान चलाया गया। इस अभियान के कई कारगर परिणाम भी सामने आए। बहुत सारे स्टार्टअप पंजीकृत भी हुए।

हिमाचल को यदि पूर्ण रोजगारयुक्त बनाना है तो उसे चतुष्पंक्ति मार्ग को अपनाना चाहिए। 1.विकेंद्रीकरण 2.स्वदेशी 3. उद्यमिता 4. सहकारिता। सहकारिता आधारित उद्योग यदि देश भर में चलते हैं तो वह देश में सामाजिक समरसता बनाए रखने के लिए भी अत्यंत उपयोगी होंगे। स्वदेशी स्वीकार चाइनीज बहिष्कार के राष्ट्रीय स्वदेशी सुरक्षा अभियान की भावना को जन-जन तक पहुंचाना होगा।

सितंबर 2022 में देश भर में उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन किए गए, इसी कड़ी में हिमाचल प्रांत के अंदर भी यह सम्मेलन किए गए जिसमें अपने प्रांत के 39 उद्यमियों को भी सम्मानित किया गया तथा इन कार्यक्रमों के द्वारा लगभग पांच हजार युवाओं को उद्यमिता में प्रोत्साहित, किया गया।

- 2024. में अपने प्रान्त में स्वावलंबी भारत अभियान चला है। इस अभियान के अंतर्गत 10 जिलों में 54 कार्यक्रम हुए जिसमें 64 उद्यमियों को सम्मानित किया गया। इन सम्मान समारोहों से लगभग विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विभिन्न शिक्षण संस्थानों के लगभग नौ हजार युवाओं को जैविक उद्यमिता की ओर प्रोत्साहित किया गया।

जैविक या भारतीय उद्यमिता: यह जैविक या भारतीय उद्यमिता क्या है? यह कैसे प्रचलित एंटरप्रेन्योरशिप से अलग है तो इसका उत्तर भारतीय मूल चिंतन में है। यह अंदर से बाहर (इनसाइड आउट) की प्रक्रिया (थ्योरी) है जहां पश्चिमी एंटरप्रेन्योरशिप उन्हें बाहर से सहयोग करके उनके अंदर उद्यमिता डालने का प्रयास करती है, वहीं भारतीय चिंतन में, उद्यमिता अंदर से बाहर की यात्रा है। प्रत्येक युवा के अंदर छिपी हुई उद्यमिता की भावना को बाहर लाने की प्रक्रिया क्या हो? यदि हमारे युवाओं को उद्यमिता और स्टार्टअप पर लाना है तो हर एक के अंदर सोई उद्यमिता को प्रेरित कर उसे जगाना होगा। यह इनसाइड आउट के आधार पर अंदर की उद्यमिता को बाहर लाने की प्रक्रिया हमें विकसित करनी होगी और इसी पर आधारित कार्य करने होंगे। हिमाचल प्रांत के अंदर भी बेरोजगारी की बहुत बड़ी समस्या है। क्योंकि युवाओं की अधिक संख्या होने के कारण सभी को सरकारी नौकरियां नहीं दी जा सकती हैं। क्योंकि हिमाचल प्रदेश भारतवर्ष में सबसे अधिक 17 प्रतिशत के लगभग नौकरियां सरकारी क्षेत्र में देता है फिर भी युवाओं के लिए यह काफी नहीं हैं। इसलिए युवाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए स्वरोजगार अपनाने के लिए प्रेरित करना होगा। इस अभियान से अपने प्रान्त के सभी विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, विद्यालयों, सभी शिक्षण संस्थानों में यह अभियान पिछले कुछ वर्षों से चलाया जा रहा है। केवल आर्थिक रूप से समृद्ध समाज को विकसित समाज नहीं कहा जा सकता उसके जीवन मूल्य होने चाहिएं और विश्व को हम क्या दे सकते हैं, इस भूमिका में भी आना

होगा। उच्च जीवन शैली, संयुक्त समृद्ध परिवार तथा स्वच्छ पर्यावरण और हमारा वैश्विक दृष्टिकोण, **'वसुधैव कुटुंबकम्'** का है जो संपूर्ण विश्व को ही एक परिवार मानता है।

स्वदेशी व्यवहार में, स्वदेशी केवल वस्तुओं के स्थानीय कंपनियों से खरीदने तक ही सीमित नहीं है। यह व्यवहार की बात भी है। देशभक्ति की साकार अभिव्यक्ति है स्वदेशी। आप हस्ताक्षर अपनी भाषा में करते हो या जन्मदिन भारतीय पद्धति से मनाते हो, यह स्वदेशी भाव है। आपके घर में अच्छे चित्र, परिवार में अतिथि सम्मान, बड़ों के साथ बैठना, उनका आदर, सेवा यह सब स्वदेशी व्यवहार का हिस्सा है। आप उच्च गुणवत्ता वाला जीवन जीना चाहते हैं, तो इन छोटी-छोटी किंतु महत्वपूर्ण चीजों का ही महत्व है। गुणवत्तापूर्ण जीवन जीने में स्वदेशी जीवन शैली, स्वदेशी सोच अत्यंत महत्वपूर्ण है।

दत्तोपंत ठेंगड़ी उवाच: स्वदेशी चिंतक इस विचार को मानने के लिए तैयार नहीं है कि पश्चिमी मॉडल सार्वभौम है और दुनिया भर के लोगों को उसकी नकल करनी चाहिए। हालांकि हम सांस्कृतिक आदान-प्रदान को स्वीकारते हैं। आधुनिक बनने का मतलब पश्चिमीकरण नहीं है आधुनिकीकरण के क्रम में राष्ट्रीय संस्कृति की भावना का आधार होना चाहिए। पश्चिम के हित में विभिन्न संस्कृतियों और राष्ट्रीय पहचानों को गड्ड-मड्ड कर देने की कोशिशों का हम विरोध करते हैं।◆◆◆

योग भारती हिमाचल

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः
योगः कर्मसु कौशलम्

योग साधना की यात्रा

मीनाक्षी सूद - अध्यक्ष

योग, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा एवं पारम्परिक भारतीय चिकित्सा पद्धतियों का प्रसार करते हुए आत्म निर्भर भारत की परिकल्पना को साकार रूप देने के उद्देश्य से योग भारती हिमाचल की स्थापना अक्टूबर 2019 को अध्यक्ष योग भारती मा. श्रीनिवासमूर्ति जी के निर्देशन में विजयदशमी के अवसर पर गण की सेर सोलन में हुई। समाज को सुव्यवस्थित योगाभ्यास का प्रशिक्षण देने वाले सभी संगठन जैसे पतंजलि योगपीठ, आर्ट आफ लिविंग, विवेकानंद केन्द्र आदि के साथ तालमेल रखते हुए योग प्रशिक्षण वर्ग एवं योग थैरेपी का प्रशिक्षण प्रदान करना और अन्य वैकल्पिक भारतीय चिकित्सा पद्धतियां जैसे: एक्यूप्रेशर, न्यूरोथैरेपी, फिजियोथेरेपी, मुद्रा ज्ञान व स्वर विज्ञान आदि का प्रशिक्षण प्रदान करना प्रमुख कार्य है। संगठन का मुख्य उद्देश्य प्रान्त के हर जिला और तहसील से लेकर पंचायत स्तर एवं ग्राम केन्द्रों तक योग शिक्षक तैयार करना है।

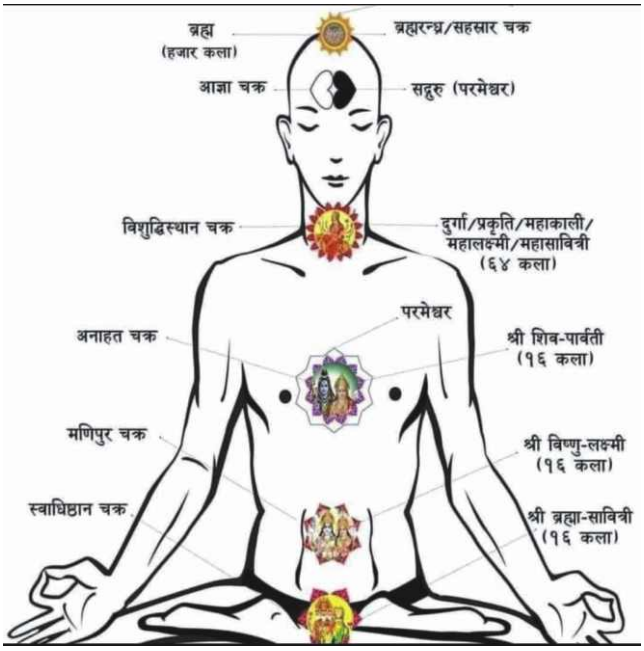

योग भारती हिमाचल प्रान्त के 26 संगठनात्मक जिलों में जिला समितियों का गठन किया गया है और सभी जिलों में जिला इकाईयों के संयोजक नियुक्त किये जा चुके हैं मार्च 2025 तक 500 इकाईयां बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके अतिरिक्त योग भारती हरियाणा, योग भारती पंजाब, योग भारती दिल्ली, योग भारती जम्मू का भी स्वतन्त्र राज्य इकाई का गठन किया गया है। योग भारती हिमाचल के साथ भारत के 14 राज्यों सहित 4 देशों से योग में रूचि रखने वाले लगभग 800 कार्यकर्ता सक्रिय रूप से योग को घर घर तक पहुंचाने के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं। कुटुम्ब ऐप पर देशभर के 27 राज्यों से 4000 से अधिक लोग नियमित रूप से जुडक़र योग का लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

योग भारती हिमाचल का माधव सृष्टि परिसर, अश्विनी खड, गण की सेर, सोलन, हिमाचल में विशाल योगाश्रम का निर्माण कार्य प्रगति पर है। जहां एक साथ 60 लोगों के ठहरने, खाने-पीने, योगाभ्यास करने और प्राकृतिक चिकित्सा प्रदान करने का उचित प्रबंध है। इस परिसर में जून 2020 से लेकर प्रत्येक महीने 7 दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है जिसमें योग के मूलभूत सिद्धांत, योगदर्शन, आसन, प्राणायाम, षट्कर्म, पंचकर्म, मानव शरीर रचना, मुद्रा विज्ञान, सूक्ष्म व्यायाम, सूर्य नमस्कार, पारम्परिक दण्ड बैठक, पंचकोष, सप्तधातु, एक्यूप्रेशर, न्यूरोथैरेपी, ऋतुचर्या, दिनचर्या, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, पंचगव्य आदि का परीक्षण प्रदान

करके घर का वैद्य बनने और अपने स्वास्थ्य की रक्षा करते हुए बिना औषधि के अपने परिवार को दवा मुक्त, रोग मुक्त जीवन जीने की शिक्षा योग, आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सकों द्वारा दी जाती है। अभी तक 14 राज्यों से 250 लोग प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने स्थानों पर योग की कक्षायें चला रहे हैं।

योग भारती हिमाचल के विभिन्न आयाम :

योग भारती हिमाचल के सोलन केन्द्र के अलावा ज्वालाजी, कांगड़ा और बद्दी में किशोर योग एकेडमी के दो प्रशिक्षण केन्द्र संचालित किए जा रहे हैं जहां नियमित तौर पर सुबह और शाम योग की कक्षायें संचालित की जाती हैं।

कोरोना काल के दौरान 2020-2021 में दो वर्षों तक लगातार प्रत्येक रविवार सुबह 6 बजे से 7:30 बजे तक घर बैठे योग का अभ्यास देश भर के अलग-अलग योगाचार्यों द्वारा ऑनलाईन माध्यम से करवाया गया जिसमें हजारों लोग योग सीखकर सुखी जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

गर्भ संस्कार, प्राथमिक उपचार, आरोग्य मित्र प्रशिक्षण, विद्यालय स्वास्थ्य प्रबोधन, वनऔषधि पौधारोपण, जड़ी बूटी द्वारा घरेलू उपचार, अपना ग्राम स्वस्थ ग्राम, मधुमेह मुक्त भारत अभियान, महिला सशक्तिकरण, युवाओं व युवतियों में योग के प्रति रुचि पैदा करना, नित्य प्रति योगाभ्यास से सामाजिक बुराईयों का अंत करना आदि अनेक गतिविध्यिां अलग अलग इकाईयों के माध्यम से समय-समय पर चलाई जा रही हैं।

योग भारती हिमाचल का केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला और नौणी विश्वविद्यालय सोलन के साथ आवासीय योग प्रशिक्षण एवं शोध कार्य के लिए समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित है। जिसके तहत योग के छात्रों को योग का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया जाएगा। योग भारती हिमाचल सभी सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर सक्रियता के साथ अपने सभी कार्यक्रम साझा करती है जिसमें फेसबुक पेज पर 800 से अधिक योग इत्यादि के विभिन्न वीडियो शामिल हैं। सभी सोशल मीडिया अकाउंट निम्नलिखित हैं –

सम्प्रति योग भारती हिमाचल की प्रान्त टोली के साथ आप भी जुड़कर मानव सेवा के साथ-साथ राष्ट्र सेवा में अपना अहम योगदान स्थानीय स्तर पर योग केन्द्र खोल कर दे सकते हैं।

प्रान्त टोली सम्पर्क सहित
संस्थापक योग भारती हि.प्र.
श्रीश्रीनिवासमूर्ति जी, सम्पर्क 7019858641,
अध्यक्ष मीनाक्षी सूद-7018463886,
सचिव श्री रजत डोगरा-70186-39369,
प्रांत संगठन मंत्री डॉ. किशोर ठाकुर - 70180-06275

facebook : yogbhartihimachal, srinivasyogseva
youtube : yogbhartihimachal, srinivasyogbharti
web : www.yogbharti.org
e-mail : yogbhartihimachal@gmail.com

◆◆◆

सहकारिता से सशक्तिकरण की ओर

हिमाचल में सहकार भारती की स्वर्णिम यात्रा

संजय वर्मा - प्रान्त महामंत्री, सहकार भारती

सहकार भारती अखिल भारतीय स्तर पर सहकारिता के क्षेत्र में कार्य करने वाला सबसे बड़ा संगठन है। सहकार भारती का गठन 11 जनवरी 1979 को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक माननीय श्री लक्ष्मण राव ईनामदार जी के प्रयासों से हुआ था। तब से लेकर संगठन सहकारिता के क्षेत्र में अनवरत कार्य कर रहा है। सहकार भारती की मान्यता है कि भारत एक प्राचीन राष्ट्र है तथा सहकारिता राष्ट्र के आर्थिक कल्याण का सर्वोत्तम मार्ग है। सहकार भारती सहकारिता में दलीय राजनीति के विरुद्ध है तथा अनुशासन से कार्य करने की पक्षधर है। यह संगठन सहकारिता की शुद्धि वृद्धि और समृद्धि के लिए कार्य करता है। भारत का कोई भी नागरिक ओर सहकारी संस्था इसकी सदस्यता ले सकते हैं। सहकारिता का ध्येय वाक्य है 'बिना संस्कार नहीं सहकार, बिना सहकार नहीं उद्धार' इसी ध्येय वाक्य के अनुरूप सहकारिता में संस्कारित कार्यकर्त्ता निर्माण करना व उनको सहकारिता के कार्य में लगा कर समाज ओर राष्ट्र के आर्थिक कल्याण को सुनिश्चित करके भारत को विश्वगुरु बनाने के लक्ष्य में सहभागी बनना सहकार भारती का लक्ष्य हैं। सहकार भारती पहले से ही अस्तित्व में रही संस्थाओं से सम्पर्क, नई आदर्श सहकारी संस्थाओं का निर्माण करना, सहकारिता का प्रचार प्रसार करना, सहकारी संस्थाओं को प्रशिक्षण व मार्गदर्शन देना, सहकारिता संबंधी साहित्य, पत्रिका इत्यादि प्रकाशित करना तथा सहकारी संस्थाओं से सम्पर्क, सहयोग बढ़ा कर उनको संगठित करने का कार्य करती है।

वर्तमान में सहकार भारती का कार्य 29 राज्यों के 650 से अधिक जिला केन्द्रों में है। हिमाचल प्रदेश में सहकार भारती का कार्य विधिवत रूप से तत्कालिक राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रीमान सूर्यकांत केलकर जी के प्रवास के दौरान 23 अक्टूबर 2005 को बिलासपुर नगर में संपन्न बैठक से आरंभ हुआ था, जिसमें प्रान्त की कार्यकारिणी का गठन किया गया था। इसके गठन के दो वर्षों के भीतर ही बारह प्रशासनिक जिलों में से आठ जिलों में कार्यकारिणियों का गठन कर दिया गया था। अब तक प्रदेश में सहकार भारती के चार प्रान्त अधिवेशन हो चुके हैं। प्रथम प्रान्त अधिवेशन 19-20 अगस्त 2007 को बिलासपुर नगर में, द्वितीय प्रान्त अधिवेशन 14-15 नवम्बर 2014 को कोटला कलां, जिला ऊना में, तृतीय प्रान्त अधिवेशन 8-9 सितंबर 2018 को पालमपुर, जिला कांगड़ा में तथा चौथा प्रान्त अधिवेशन 16-17 अप्रैल को घुमारवीं, जिला बिलासपुर में आए है। संगठन द्वारा समय-समय पर कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण हेतु अभ्यास वर्ग तथा आम समाज में सहकारिता पर कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। सहकार भारती द्वारा प्रदेश में राष्ट्रीय संगठन समिति की बैठक जून 2011 तथा राष्ट्रीय चिन्तन बैठक जून 2023 में आयोजित की गई है, जिनमें सम्पूर्ण देश से संगठन के पदाधिकारी सहकारिता पर चिन्तन करके महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं। कार्यकर्ताओं द्वारा राष्ट्रीय स्तर के सभी अधिवेशनों व अन्य सार्वजनिक कार्यक्रमों में अच्छी संख्या में भाग लिया जाता है।

वर्तमान में सहकार भारती द्वारा प्रत्येक जिले में सहकारी संस्थाओं से सम्पर्क करके उन्हें अपने साथ जोड़ा गया है तथा विभिन्न जिलों में बड़ी सहकारी सभाओं का गठन किया गया है, जो कि समाज में सामाजिक समरसता, आर्थिक सशक्तिकरण और स्वरोजगार के अवसर उत्पन्न करने की दिशा में कार्य कर रही है।

वर्तमान में सहकार भारती, हिमाचल प्रदेश के सत्रह संगठनात्मक जिले हैं तथा सभी जिले कार्ययुक्त हैं। सहकार भारती प्रत्येक वर्ष 11 जनवरी को सभी जिलों में अपना स्थापना दिवस आयोजित करती है। सहकार भारती 14 से 21 नवम्बर के मध्य विभिन्न स्थानों पर सहकारी सप्ताह भी मनाती है। सहकार भारती की प्रदेश, जिला और तहसील कार्यकारिणियों की नियमित बैठकें होती हैं तथा सहकारी क्षेत्र के विषयों पर विस्तृत चर्चा होती है। सहकार भारती अपने कार्यकर्ताओं को विभिन्न प्राथमिक, माध्यमिक तथा अपेक्स सहकारी सभाओं और सहकारी बैंकों के

चुनाव लड़ने के लिए भी प्रेरित करती है तथा संगठन को इस दिशा में अनेकों बार सफलता भी प्राप्त हुई है। संगठन के विभिन्न दायित्व युक्त कार्यकर्ता सम्पूर्ण प्रदेश में प्रवास करते हैं। हिमाचल प्रदेश को कार्य की दृष्टि से चार विभागों में विभक्त किया गया है। वर्तमान में संगठन के बैंकिंग, दुग्ध, साख (क्रेडिट), पैक्स, महिला, मत्स्य, विपणन, महिला सहकारिता, उपभोक्ता और हाउसिंग इत्यादि प्रकोष्ठ प्रदेश में कार्यरत हैं।

सहकार भारती समय समय पर सहकारिता से सम्बन्धित कानूनों/नियमों में सुधार के विषय में प्रयास करती रहती है। हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश में हिमाचल प्रदेश सहकारी सभाएं अधिनियम/नियमों में संशोधन करके 97वे संविधान संशोधन को लागू कर दिया है। इस संशोधन के बाद प्रदेश में लोगों को सहकारी सभाओं के गठन को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता मिली है और ऑडिट सम्बन्धी कईं सुधार हुए हैं। हाल ही में वर्ष 2024 में भी सरकार ने सहकारी शिक्षा कोष जो कि सहकारी सभा के लाभ का 3 प्रतिशत होता है में से 2 प्रतिशत सहकारी सभाओं के प्रशिक्षण हेतु सहकारी सभाओं को स्वयं खर्च करने का अधिकार दिया है, जबकि पहले सहकारी सभा को ऐसा अधिकार नहीं था। इसके अतिरिक्त सहकारी सभाओं को अपने स्तर पर विभाग की मंजूरी के बिना रुपए 15000/- तक का कर्मचारी के पास स्वयं रखने का अधिकार भी दिया गया है। सहकार भारती इन सुधारों का समर्थन करती है। सरकार द्वारा किए गए यह सुधार सहकारी आंदोलन को सुदृढ़ करने में मील का पत्थर सिद्ध हो रहे हैं।

सहकार भारती द्वारा बड़े प्रमाण में स्वयं सहायता समूहों को संगठन के साथ जोड़ने का कार्य भी सफलतापूर्ण ढंग से किया जा रहा है। कुल्लू, शिमला, नूरपुर और लाहुल व स्पीति इत्यादि जिलों से सहकार भारती द्वारा स्वयं सहायता समूहों के स्टॉल दिसम्बर 2024 में आयोजित सहकार भारती के राष्ट्रीय अधिवेशन अमृतसर में लगवाए गए थे। सहकार भारती ने प्रदेश में स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षण देने का कार्य भी करती है। संगठन आगामी समय में प्रदेश में अभ्यास वर्ग तथा समाज में सहकारिता की वृद्धि हेतु कई कार्यक्रम करेगी। कार्यकर्ताओं के परिश्रम से सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय के निमित कार्य करते हुए सहकार भारती प्रदेश में सहकारिता के क्षेत्र में कार्य करने वाले जन संगठन के रूप में विकसित हो रही है।◆◆◆

पंच परिवर्तन

हितेंद्र शर्मा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा प्रतिवर्ष गहन चिंतन की परंपरा में कुछ बिंदुओं को आगामी कार्य योजना के लिए चयनित किया जाता है इस वर्ष पांच परिवर्तन के अंतर्गत स्व का बोध, पर्यावरण, कुटुंब प्रबोधन और नागरिक कर्तव्य।

भारत अपनी सनातन संस्कृति, सभ्यता, और परंपराओं के कारण अनादिकाल से विश्व का मार्गदर्शन करता आया है। आज, जब देश 21वीं शताब्दी में एक नई ऊंचाई की ओर अग्रसर है, समाज में अनुशासन, देशभक्ति और समरसता की पुनर्स्थापना एक प्रमुख आवश्यकता बन गई है। इस दिशा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने पिछले 99 वर्षों में नि:स्वार्थ सेवा और समर्पण से राष्ट्र निर्माण में अतुलनीय एवं अविस्मरणीय योगदान दिया है। समाज में अनुशासन और सकारात्मक परिवर्तन लाने के उद्देश्य से संघ ने 'पंच परिवर्तन' का आह्वान किया है, जो न केवल विकसित भारत की नींव रखने में सहायता करेगा, बल्कि समाज को एक नई दिशा देगा। इस पंच परिवर्तन में पाँच आयाम शामिल हैं-स्व का बोध, नागरिक कर्तव्य, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता और कुटुंब प्रबोधन। संघ के विभिन्न संघ परिवार द्वारा इन विषयों पर व्यापक चिंतन मनन करते हुए स्वयंसेवकों के माध्यम से इन विफयो से संबंधित जानकारी को जन-जन तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया जा रहा है।

स्व का बोध :

'स्व का बोध' का तात्पर्य अपने मूल, अपने देश और अपनी संस्कृति को पहचानना। स्व की प्राप्ति के लिए ही भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का संघर्ष किया गया था। स्व संस्कृति, स्व भाषा, अपनी जमीन, अपना आसमान और सामाजिक सौहार्द अपना देश तथा देश के प्रति कर्तव्य और अधिकार के निर्वहन के प्रति सच्ची निष्ठा जताना ये सब स्व के भाव को मजबूत करने वाले ऐसे तत्व थे जिनसे प्रेरित होकर राष्ट्र प्रेमियों ने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। राष्ट्र के निर्माण एवं विकास में स्वदेशी उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा देना और आत्मनिर्भरता की भावना को सशक्त करना प्रमुख रहा है। भारत अपनी ज्ञान परंपरा की विरासत के प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध हो रहा है। क्योंकि भारतीय सांस्कृतिक चिंतन में विश्व के कल्याण की चिंता की गई है। जब प्रत्येक नागरिक स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करेगा, तो देश की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। अपने देश के लोगों को रोजगार मिलेगा और देश का पैसा भी देश की प्रगति में काम आएगा। मितव्ययता का भाव और देश में ही रोजगार के अवसर बढ़ाने का संकल्प देश को आत्मनिर्भर बनाएगा। 'स्व' केवल व्यक्ति का नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की चेतना का भी आधार है। यह आत्म-संयम, त्याग और समरसता पर केंद्रित है। 'स्व' का चिंतन हमें हमारे स्वधर्म और कर्तव्यों का बोध कराता है। राष्ट्र निर्माण में 'स्व' का भाव अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वतंत्रता के आंदोलन में स्वधर्म, स्वराज और स्वदेशी ने आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त किया।

नागरिक कर्त्तव्य :

नागरिक प्रत्येक देश की इकाई है। भारतीय लोकतंत्र के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को मतदान करने और सरकार चुनने का अधिकार है। अपने विचारों को प्रकट करने के लिए बोलने की आजादी तथा अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना, उसका अधिकार है तो उसके साथ-साथ संवैधानिक प्रावधानों के अंतर्गत नागरिकों के कुछ कर्तव्य भी हैं जिनका निर्वाह करते हुए उसे अपने राष्ट्र के विकास में योगदान प्रदान करना होता है। नागरिक कर्तव्यों के प्रति सजगता देश को उन्नति की ओर ले जाती है। भारतीय संविधान में मूल अधिकारों के साथ-साथ मूल कर्तव्यों का भी उल्लेख है। कानून का पालन, सार्वजनिक संपत्ति का सम्मान एवं संरक्षण और सामाजिक सद्भावना को बनाए रखना हर नागरिक की जिम्मेदारी है। एक अनुशासित और जागरूक समाज ही एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। विशेषकर युवाओं को नशाखोरी, दहेज प्रथा और मृत्यु भोज जैसी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध सक्रिय भूमिका निभानी होगी।

पर्यावरण संरक्षण :

अगर प्रत्येक व्यक्ति अपनी दिनचर्या पर ध्यान केंद्रित करते हुए चिंतन करे कि प्रात: काल उठने से लेकर रात को सोने तक वह जिन वस्तुओं का भोग करता है, खाने पीने, पहनने ओढ़ने या किसी भी अन्य प्रकार से, वे सभी वस्तुएं प्रकृति के द्वारा उपलब्ध करवाई गई होती हैं। जल और वायु के बिना कभी जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। वास्तव में मनुष्य जितनी गंदगी फैलाता है, उतनी स्वच्छता नहीं रखता। इसलिए सुंदर प्रकृति को विकृत करने में मनुष्य का सबसे अधिक योगदान भी रहता है। सामान्य रूप से पशु पक्षी भी अपने रहने के स्थान को स्वच्छ एवं संतुलित बनाए रखने का प्रयास करते हैं परंतु मनुष्य प्रकृति को बनाए रखने के लिए स्वयं अपना कर्तव्य न निभाते

हुआ औरों से अपेक्षा रखता है, जबकि उसे इसी वायुमंडल में सांस लेकर जीना है, इसी वातावरण में पैदा होने वाले अन्न औषधियों, वनस्पतियों का भोग करते हुए स्वस्थ रहना है तो इन सब को पर्यावरण की दृष्टि से संतुलित बनाए रखना भी मनुष्य का प्रमुख कर्तव्य होना चाहिए। उद्योग धंधों, सौविध्य प्रदान करने वाले आधुनिक उपकरणों, पेट्रोल-डीजल से चलने वाले वाहनों से खाद एवं कीटनाशकों में प्रयुक्त रसायनों से और युद्ध में हथियारों के दुरुपयोग से पर्यावरण का संतुलन बिगड़ता जा रहा है पृथ्वी और अंतरिक्ष पर बुरा प्रभाव पढ़ने लगा है जिससे प्रकृति में तेजी से विकार पैदा होने लगा है और मौसम भी रंग बदलने लगा है। कहीं अधिक बारिश, सर्दी कहीं अधिक गर्मी और कहीं बाढ़ का प्रकोप, ये प्रकृति के असंतुलन के ही दुष्परिणाम हैं जो मनुष्य जीवन के साथ-साथ सभी पशु पक्षियों एवं अन्य प्राणियों के लिए खतरा बनता जा रहा है। भारतीय सनातन संस्कृति में पृथ्वी की रक्षा के लिए वृक्ष और जल का महत्व अनादिकाल से ही रहा है। यह संस्कृति प्रकृति के महत्व को स्वीकारते हुए प्रत्येक जनमानस से इसके संरक्षण की अपेक्षा करती है। आज पर्यावरण की रक्षा एक वैश्विक चुनौती है। विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट 2023 के अनुसार भारत में वायु प्रदूषण की स्थिति चिंताजनक है। लगभग 136 मिलियन भारतीय (भारतीय जनसंख्या का 96 प्रतिशत) विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अनुशंसित स्तर 5 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर से सात गुना अधिक पीएम 2.5 सांद्रता का सामना करते हैं। 66 प्रतिशत से अधिक भारतीय शहरों में वार्षिक औसत 35 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर से अधिक दर्ज किया गया है। भारत सहित दुनिया भर में नदियों का प्रदूषण स्तर प्रमुख चिंता का विषय है। पंच परिवर्तन का यह आयाम जल संरक्षण, प्लास्टिक के उपयोग को समाप्त करने और हरियाली को बढ़ावा देने पर जोर देता है। पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने और उसकी रक्षा के लिए अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठन तत्परता से कार्य कर रहे हैं, फिर भी पर्यावरणीय मुद्दों के समाधान में अपेक्षित सफलता नहीं मिल रही है।

सामाजिक समरसता :

प्रसिद्ध कहावत है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है उसे जीवन यापन के लिए परिवार एवं समाज में रहना होता है। मनुष्य समाज में रहकर ही सुख शांति और आनंद का अनुभव करता है। इसलिए भारतीय ज्ञान परंपरा एवं संस्कृति में परिवार एवं समाज को प्राथमिकता प्रदान की गई है। स्वस्थ परिवार से ही स्वस्थ राष्ट्र एवं विश्व की कामना की जा सकती है। सामाजिक समरसता के अंतर्गत समाज में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, सहिष्णुता, सहयोग, बंधुत्व और समानता को बढ़ावा देना। भारत में प्राचीन काल से ही यज्ञ, अनुष्ठान, पर्व जैसे सामाजिक पहलू समरसता स्थापित करते रहे हैं। वेद, पुराण और उपनिषद जैसे धार्मिक ग्रंथ सद्भावना और प्रेम का संदेश देते हैं। आज जाति और धर्म के भेदभाव को मिटाकर समाज में समानता और भाईचारे का भाव स्थापित करना समय की मांग है। पंच परिवर्तन के अंतर्गत समाज के विभिन्न वर्गों के साथ मिल-जुलकर त्योहार मनाने, भोजन करने, मंदिर, पानी और श्मशान में भेदभाव समाप्त करने जैसे प्रयास सामाजिक समरसता को सशक्त बनाएंगे, जिससे समाज में भावनात्मक सहयोग और समानता का वातावरण तैयार होगा।

कुटुम्ब प्रबोधन :

वसुधा एव कुटुंबकम्। अर्थात सारा विश्व ही अपना परिवार है यही भावना भारतीय संस्कृति का प्राण है। माता-पिता, दादा दादी, नाना नानी सहित दो चार पीढ़ियों का एकजुट होकर एक ही परिवार में रहना भारत की परंपरा रही है। भारत में प्राचीन काल से ही संयुक्त परिवार प्रथा प्रचलन में रही है, जो लोगों में भावनात्मक सहयोग, चरित्र निर्माण एवं भावी पीढ़ी के समुचित विकास में सहायक रही है। परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है और इसके मजबूत होने से ही समाज मजबूत बनता है। बढ़ते एकल परिवारों के चलन को रोकने और परिवारों में संवाद, संस्कार, और संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए 'कुटुम्ब प्रबोधन' आवश्यक है। परिवारों में सप्ताह में एक बार पूजा, महापुरुषों के विचारों पर चर्चा, और बच्चों को संस्कार देने की पहल भारतीय संस्कृति को संरक्षित रखने में मदद करेगी।

पंच परिवर्तन केवल विचार और चर्चा का विषय नहीं है; इसे आचरण में उतारने की आवश्यकता है। प्रत्येक नागरिक को छोटे-छोटे प्रयासों से इसकी शुरुआत करनी होगी। यह परिवर्तन व्यक्तिगत स्तर से शुरू होकर सामूहिक स्तर तक पहुंच सकता है। पंच परिवर्तन केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक आंदोलन है, जो समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करेगा। यह भारत को आर्थिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक रूप से सशक्त बनाएगा। जब समाज में समरसता, पर्यावरण संरक्षण, नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूकता, स्वदेशी अपनाने की आदत, और परिवारों में संस्कार उत्पन्न होंगे, तब भारत एक सशक्त और संतुलित राष्ट्र के रूप में उभरेगा। राष्ट्रांग होने के नाते प्रत्येक जनमानस को अपने-अपने स्तर पर इस दिशा में यथा संभव प्रयास करने होंगे फलस्वरूप भारत विकसित राष्ट्र बनकर विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठित होगा।◆◆◆

Dr. Hem Raj Sharma

ANO- Rectal Surgeon (Kshar Sutra)

(Piles, Fistula, Fissure, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)

Chikitsak Guru RAV
National Academy of Ayrveda New Dehli under Ministry of Ayush,Govt of India
Formerly Incharge Medical Officer DAH Una,
Govt of Himachal Pradesh

Director
JAGAT HOSPITAL & KSHAR SUTER CENTER
Near Govt College Una HP

Mob.: 94184-88660, 88940-68358, 94593-88323
Email: drhemrajsharma55@gmail.com

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

राष्ट्र प्रथम सदैव

व्यक्ति निर्माण व सामाजिक एकता

आरएसएस जातिगत भेदभाव को समाप्त कर राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देता है। संघ के अनुशासन और संगठनात्मक संरचना से समाज में **समरसता** आती है।

विभाजन के दौरान लाखों हिंदुओं की रक्षा

1947 के विभाजन के समय आरएसएस के स्वयंसेवकों ने लाखों हिंदुओं को बचाया और राहत शिविर चलाए।

युवाओं, महिलाओं, किसानों व श्रमिकों का सशक्तिकरण

संघ नेतृत्व क्षमता विकसित करता है और किसानों, श्रमिकों, महिलाओं व युवाओं को आत्मनिर्भर बनने में सहायता करता है।

युद्ध और आपदा में त्वरित सहयोग

1948, 1962, 1965 और 1971 के युद्धों में आरएसएस ने मदद की। प्राकृतिक आपदाओं में भी संघ राहत कार्य में मदद करता है।

राष्ट्रीय एकीकरण

संघ ने जम्मू-कश्मीर, दादरा नगर हवेली, गोवा और हैदराबाद के भारत में विलय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत की अखंडता

बनाए रखने में संघ ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा

आपातकाल (1975-77) के दौरान संघ ने लोकतंत्र को बचाने में अहम भूमिका निभाई। स्वयंसेवक कानून का पालन करने वाले नागरिक हैं जो भलीभांति समझते हैं कि राष्ट्र प्रेम केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि दैनिक आचरण में परिलक्षित होना चाहिए

उपनिवेशवाद से प्रभावित मानसिकता से मुक्ति और सांस्कृतिक संरक्षण

संघ भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, भाषाई विविधता, परंपराओं और मूल्यों को संरक्षित कर राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ावा देता है। सैकड़ों वर्षों से उपनिवेशवाद से प्रभावित भारतीय मानसिकता को मुक्त करने और उसे अपने मूल स्वरूप का बोध करवाने के लिए संगठन अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

कार्यालय
मातृवन्दना (मासिक)
डा. हेडगेवार भवन, द्वितीय तल नाभा,
शिमला-171004, हिमाचल प्रदेश
दूरभाष : 0177-2836990,
मोबाइल : 7650000990

सेवा में

_____

_____

_____

मातृवन्दना प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेस - 9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित।

follow us on : YouTube